

॥ निर्मलांजलि ॥

विषयसूची

Pranams and Prayer to Shri. Mataji 9	श्री माताजी निर्मलादेवी के १०८ नाम ३२
Shri Mataji's promise & declaration .. 10	श्री आदिगुरु दत्तात्रेय के १०८ नाम ३४
प्रातः स्मरामि निर्मलां ११	श्री विष्णु के १०८ नाम ३५
Shri Mataji's Sayings on Puja 12	श्री कृष्ण के १०८ नाम ३६
चक्र शुद्धिकरण के लिए श्री माताजी से प्रार्थना १३	श्री शिव के १०८ नाम ३७
नित्यानन्दकरी निर्मलेश्वरी १५	श्री राम के १०८ नाम ३९
निर्विघ्नमस्तु १५	अष्टलक्ष्मी स्तोत्रम् ४०
	श्री शिव पञ्चाक्षरी स्तोत्रम् ४१
	श्री देवी स्तोत्रम् ४२
	श्री गणेशस्तुति ४३
	(हेमजा सुतम् भजे गणेश मीश नन्दनम्)
	(ॐकार प्रधान रूप गणेशाचे)
श्री गणेश अथर्वशीर्ष १६	श्री विष्णु स्तुति ४४
श्रीसूक्तम् १९	श्री शिव स्तुति ४४
सुखकर्ता दुःखहर्ता २१	श्री कृष्ण स्तुति ४५
सबको दुआ देना माँ २१	श्री राम स्तुति ४६
सौन्दर्य लहरी २२	श्री हनुमान स्तुति ४६
श्री विष्णु मंत्र २३	श्री देवी स्तुति ४७
श्री गुरु मंत्र २३	श्री गुरु स्तुति ४७
श्री गायत्री मंत्र २३	श्री गणेश पञ्चरत्नम् ४८
प्रार्थनायें २४	श्री हनुमान चालीसा ४९
तंत्रोक्त देवीसूक्तम् २५	विवाह उत्सवों के लिए भगवत् स्तुति ५०
Lord's Prayer 26	आत्माष्टकम् ५१
श्री महालक्ष्मी अष्टकम् २७	अर्गला स्तोत्रं ५२
श्री ज्ञानेश्वरकृत पसायदान २८	गजाननं भूतगणादि सेवितम् ५२
श्री लक्ष्मी के १०८ नाम २९	
श्री गणेश के १०८ नाम ३०	
श्री महाकाली के १०८ नाम ३१	

स्तुति और आरती

A

ऐ गिरी नंदिनी	५३
अँकार स्वरूपा	५४
अन्यथा शरणं	५५
ओ लाल मेरी	५५
आवाज उठाएंगे	५६
अबीर गुलाल	५६
आई सिंह पे सवार	५७
आँखें बंद करुं या खोलूँ	५७
अपने हृदय के	५८
आम्ही बी घडलो	५८
अपने तो तीनों जहाँ	५९
अपने दिल में	५९
आम्ही मातार्जींच्या चरणासी आलो	६०
आई आज दिवाली	६१
अर्पित करें	६२
ॐ गं गणपतये नमो नमः	६२
आया हूँ दरबार तुम्हारे	६३
अर्पण ये तन मन	६३
ॐ जय जगदीश हरे	६४
आयो जी आयो	६५
अंधकार से निकल	६५
आदिगुरु दत्तात्रेय धर्मधारा सत्वाय	६६
आ जा निर्मला माँ तेरा रस्ता में तक रहा	६६
एक गणपति एक ईसा	६७
अल्लाह तेरो नाम	६७

B

भर दे प्रेम भक्ति अन्तर में	६८
भवानी दयानी	६८
भय काय तथा	६९
बैठे हरी राधा	६९
ब्रह्म शोधिले ब्रह्मांड मिळाले	७०
भर दे	७१
ब्रज से आई	७१
बोलो आदिशक्ति	७२
बढ़ते हैं जब जब पाप धरती पर	७३
बघा आई आल्या	७४

C

चित्त सदा रहे माँ चरणन में	७५
----------------------------------	----

D

दुर्गाति हारिणी दुर्गा अम्बे	७६
दरबार हजारों देखे हैं	७६
दर पे तेरे जो भी आया	७७
डम-डम-डम डमरु बजायें	७७
दुर्गा आदिशक्ति	७८
ज्ञान दे, ज्ञान दे	७९
दुनिया के हर नजारे में	७९

G

गजानना श्री गणराया	८०
गाइए गणपति जगवंदन	८०
गणपति आयो रे	८०
गणनायका शुभ दायका	८१
गुरु तोच म्हणवील खरा माझा	८१
गुरु एक जगी त्राता	८२
गुरु माऊली	८२
गुरु वंदना	८३
गुरु शरण	८३
गूजे सदा जयकार श्री माँजी के भवन में	८४
घणे घणे जंगलौं	८४
गणपति घर आए सहजीपति	८५

H

हासत आली निर्मला आई	८६
हे प्रेम मूर्त जगी आले	८६
हे निर्मला माँ	८७
हे आदिमा, हे अंतिमा	८७
हे आदिशक्ति माँ	८८
हमको मन की शक्ति देना	८८
हम बच्चे भोले भाले	८९
हो रही जय जयकार	८९
हे मंगल ईशा	९०

हे माँ आदि कुण्डलिनी	९०
हे जीवन तव चरणी माते अर्पियले	९१
हरपल विचारों मे	९१
Hark ! The Herald Angles Sing	191
हमको तो निर्मला मैया	१९२

J

जय गणराया	९२
जय जय जननी	९२
जय श्री माताजी	९३
जगी तारक जन्मा आला	९३
जय गणपति वन्दन गणनायक	९४
जय गणेश गणनाथ	९४
जय गणेश जी की माँ अम्बे	९५
जय शिव शंकर	९५
जन्मदिन आयो	९६
जय गणेश, जय गणेश	९६
जय जगदीश्वरी माता सरस्वती	९७
जोगवा	९७
जागो सवेरा	९८
जब से पकड़े चरण	९९
जय जय भवानी	१००
जय जय माता निर्मला देवी	१००
जय अंबे कुण्डलिनी माँ	१०१
जय जय जग जननी देवी	१०१
जय हे जय हे जय हे देवी	१०२

जो नर दुःख में	१०२
जागो कुण्डलिनी माँ	१०३
जग-मग-जग-मग चमके दरबार मैया का .	१०३
जागो हे जगदम्बे	१०४
जय जय जय श्री निर्मला माँ	१०४
जिसमें सूरत श्री माँ की	१०५
जब रात ढले सुबह के लिए	१०६
जय भगवति देवी नमो: वरदे	१०६
जै भोला भण्डारी शिवहर	१०७

K

केशवा माधवा	१०८
कृष्ण गोविंद	१०८
किया जब, माँ निर्मला दर्शन तेरा	१०९
कर कृपा श्री आदिशक्ति ने	१०९
कैसी ये फुहार चली	११०
करले माँ का ध्यान	१११
कहते हैं सब ज्ञानी माता	१११
काली दह पै खेलन आयो री -	११२
क्यों जाएँ कहाँ	११२
कुदरतो जहान माता तेरा ही है साया	११३
खुद की खुदी को खोकर (गजल)	११४
Krishna Radha Krishna	115

L

लवकर येई श्री गणराया	११६
लहरला सहजाचा पताका लहरला	११६
लालां तो वी लाल माँ	११७

M

माँ तेरी जय हो (श्री माताजी द्वारा रचित)	११८
मावेन नयनी आनन्द	११८
माहुर गडावरी	११९
महाराष्ट्र देशा	११९
मातेचे गोंधळी	१२०
महामाया महाकाली	१२०
माऊलीने ठोठाविले दार	१२१
Mataji, Mataji	121
मेरी माँ पूनम का चांद	१२२
माँ हम पे कृपा करना	१२२
माँ निर्मल प्यार का सागर है	१२३
मन लागो मेरो यार	१२३
माँ दर्श दिखा देना	१२४
माँ निर्मला	१२४
मधुर सहज वीणा	१२५
मातार्जीच्या सुता	१२५
माँ तेरी निर्मल प्रेम को	१२६
माता की ममता को दिल से ना भुला देना	१२६
माता मेरी पत रखियो सदा श्री माताजी	१२७
मरणच मेले	१२७

मन कुन तो मेला	१२८
माँ दर तेरे आया हूँ.....	१२८
माँ के दर पर आये हैं	१२९
माताजी सबसे महान	१२९
मैं बार बार माता	१३०
मैया आदि मिलादे परम प्यारा	१३०
माता पहाड़ा वाली	१३१
मैया थारो चंदा जैसो रूप सलोनो	१३३
N	
नमोस्तुते	१३२
नमामि श्री गणराज दयाल	१३२
नमो नमो मारिया	१३३
निर्मल ज्योति	१३३
निर्मल तेरे चरणों में.....	१३४
निर्मला किती वर्णावी	१३४
निर्मल नाम अति न्यारा है	१३५
निर्मल चादर ओढ़ के	१३५
निर्गुणाचे भेटी	१३६
ना तो छलके न घटे	१३६
नेत्र खोल	१३७
निर्गुण निर्मल	१३७
निर्भय निर्गुण	१३८
निर्मल माँ जगदंबे माँ	१३८
निर्मला श्री धरा कंस चाणूरमर्दना	१३९
नानक मोहम्मद	१३९
नमन करें बारम्बार	१४०
Nirmala Ma	141

O

Om Bhur Bhuvah	142
Our Hearts Are Growing	143

P

पोवाडा	१४४
पवन झकोरा लाया रे	१४५
प्रेम मुदित मन से कहो	१४५
पिंजड़ेवाली मुनिया	१४६
प्यार भरे ये दो निर्मल नैनाँ	१४८
पायो जी मैंने सहज में	१४८
प्यासा पपीहा	१४९

R

रचिल्या ऋषी मुनीनी	१५०
रे सहजी झूम-झूम के	१५०
रब्बानी बन	१५१
रंग दे चुनरिया रंग दे	१५२
राह में बिछी हैं पलकें आओ	१५२
Rise and Shine	153

S

स्वागत आगत् स्वागतम्	१५४
सात जन्म जो पुण्य किये हैं	१५४
सहजयोगिनी सहजदायिनी	१५५
शंकर सुत गणेश	१५५
शंभो शंकरा	१५६
शुभ मंगलमय दिवस है आया	१५६
शंकर भोले भाले	१५७

श्री माँ के उजालों	१५८
श्री माँ ने बुलाया हैं	१५८
श्री जगदम्बे आई	१५९
श्री माताजी के चरणों में मन रख दो	१६०
सारे जग में तेरी धूम	१६१
सहजयोग अति पावन हैं	१६२
सतगुरु पाये मोरे सारे दुःख बिसरे	१६२
सजदे करने झुके	१६३
सहज बिना कोई न उतरा पार	१६५
सहज की राह	१६६
सत् गुरु हो महाराज	१६६
श्री रामचंद्र कृपालु	१६७
Silent Night	167
सहज की धाराओं का	१६८
सत्य साधकों की	१६९
सात चक्रों के रथ पे सवार	१७०
Salutations to the Queen of Sahasrara .	171
Sitting in the Heart	171
शुभ मंगलमय पावन	१७२
सारे जगत को	१७३
सर्व मंगल मांगल्ये	१७४

T

तुझे निर्मला नाम	१७५
तुझे रूप पाहुनिया	१७५
तेरे ही गुण गाते हैं	१७६
तू ही जगत पिता	१७७

तेरे चरणकमल में	१७८
तेरे दर को छोड़ माँ निर्मल जाऊँ कहाँ	१७९
तेरे चरणा दे हेठ	१८०
तेरो नाम साचा नाम	१८०
तेरी जयजयकार हो	१८१

U

उघड सहस्रार माते	१८२
उठा उठा हो सकळीक	१८३

V

विनती सुनिए	१८३
विश्व वन्दिता	१८४
वन्दे मातरम्	१८५
वंदन करुया माताजीला	१८५
वन्दना करें वन्दना	१८६
विध्न हरण गजवदन	१८६
वर दे माँ वर दे	१८७

W

Wheels of Fire	१८७
----------------------	-----

Y

योग दायिनी माँ तुमको प्रणाम	१८९
या मोहम्मद जीसस क्राइस्ट	१८९
You are My Mother	190

Pranams and Prayer to Shri Mataji

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः

I offer my pranams again and again to that Devi who is residing in all beings as the universal Mother.

असतो मा सत्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय

O Devi Lead me from Untruth to Truth, from Darkness to Light and from Death to Immortality.

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-निर्मलाम्

I offer my pranams to the ever blissful Nirmala Devi through whose Grace, even the dumb can speak and the lame can cross the mountains.

माता मे निर्मलादेवी पिता देवो महेश्वरः
बान्धवा निर्मलाभक्ताः स्वदेशो भुवनत्रयम्

My mother is Mataji Shri Nirmala Devi;
My father is the supreme Lord Himself
My relations are all the true devotees of
Mataji Shri Nirmala Devi and
my country is all the three worlds.

Shri Mataji's promise and declaration

But today is the day I declare that I am the one who has to save the humanity.

I declare I am the one who is Adi Shakti, who is the Mother of all the mothers; who is the primordial Mother; the Shakti; the purest desire of God; who has incarnated on this earth to give its meaning to itself; to this creation; to human beings; and I am sure that through my love and patience and through my powers, I am going to achieve it.

I was the one who was born again and again: but now I have come in my complete form and with complete powers. I have come on this earth, not only for salvation of human beings, not only for their emancipation, but for granting them the Kingdom of Heaven; the joy; the bliss that your Father wants to bestow upon you.

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्

Those devotees of Mine who worship me with no other thought and ever united with me, I look after not only their Moksha, but their worldly well being as well.

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः

Leaving aside all worldly dharmas, surrender to me and I will liberate thee from all sins, Grieve not.

प्रातः स्मरामि निर्मलां

प्रातः स्मरामि निर्मलावदनारविन्दं
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम् ।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्वलफालदेशम् ॥१॥

प्रातर्भजामि निर्मला भुजकल्पवल्लीं
रत्नाङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्यां
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥२॥

प्रातर्नमामि निर्मलाचरणारविन्दं
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्
पद्मासनादि-सुरनायक-पूजनीयम्
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनं लाञ्छनाढ्यम् ॥३॥

प्रातः स्तुवे परशिवां निर्मलां भवानीं
त्रैय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थिति-हेतु-भूतां
विश्वेश्वरीं निगमवाङ्मनसातिदूराम् ॥४॥

प्रातर्वदामि निर्मले तव पुण्य नाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्री शांभवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥५॥

Shri Mataji's Sayings On Puja

A Puja or a prayer grows from your heart. Mantras are the words of your Kundalini. But if Puja is not performed from the heart or if Kundalini is not associated with recitation of Mantras then that Puja becomes a ritual. **Best is worshipping in the heart.** You should say the Mantras in Puja but with great faith (Shraddha). You should perform the puja when Shraddha goes deep so that heart itself gets all Puja performed. At that time waves of bliss start following because it is the Spirit that is saying.

On Meditation

To develop, one must meditate. Important thing is to meditate everyday; everyday; everyday.

You may not eat your food one day: you may not sleep one day: you may not go to your office one day: you may not do anything that you are doing everyday. **But you must meditate everyday.** That's an important point.

Meditation is the State to be always in the company of the every loving Bhagavati.

On Love

Try to love each other-in Dedications; because you are all my children, created out of my love. In the womb of my love you all have resided. From my heart I've given you these blessings, A 'deep' love should exist.

You must have a heart as your Mother has; pulsating with Love, with Compassion, with Joy, with Happiness, with Giving.

All that is sustaining, all that is nurturing, all that is ennobling comes from this sense of love.

Those who love others are those who really love Me.

चक्र शुद्धीकरण के लिए श्रीमाताजी से प्रार्थना

मध्यभाग

१. मूलाधार चक्र : श्री माताजी कृपा करके मुझे पावन (अबोध) बना दीजिए।
२. स्वाधिष्ठान चक्र : श्री माताजी कृपया मुझे शुद्ध विद्या तथा क्रियात्मक शक्ति प्रदान कीजिए।
३. नाभि चक्र : श्री माताजी कृपया मुझे सन्तोष, उदारता प्रदान कीजिए।
३. भव सागर : श्री माताजी कृपा करके मुझे स्वयं का गुरु बना दीजिए।
४. हृदय चक्र : श्री माताजी कृपा करके मेरे हृदय को प्रेम से परिपूर्ण करके मुझे निर्भय बना दीजिए।
५. विशुद्धि चक्र : श्री माताजी कृपया मुझे निर्लिप्त साक्षी बना दीजिए। श्री माताजी कृपया मुझे विराट का अंग प्रत्यंग बना दीजिए।
५. हंसा चक्र : श्री माताजी कृपया मुझे विवेक प्रदान कीजिए ताकि मैं स्वयं को सुधार सकूँ।
६. आज्ञा चक्र. : श्री माताजी कृपया मुझे क्षमाशील, त्यागवान बना दीजिए।
७. सहस्रार चक्र : श्री माताजी कृपा करके मुझे आत्मसाक्षात्कार प्रदान कीजिए। मेरे सहस्रार में विद्यमान रहिए। मेरे आत्मसाक्षात्कार को दृढ़ कीजिए। मुझे सहजयोगी बनाने के लिए कृपया अपने प्रति मेरा समर्पण तथा कृतज्ञता स्वीकार कीजिए।

बायाँ भाग

१. मूलाधार चक्र : श्री माताजी आपकी कृपा से मैं शिशु सम अबोध हूँ।
२. स्वाधिष्ठान चक्र : श्री माताजी आपकी कृपा से मैं शुद्ध विद्या हूँ।
३. नाभि चक्र : श्री माताजी आपकी कृपा से मैं सन्तुष्ट हूँ। श्री माताजी आपकी कृपा से मैं शान्त हूँ। श्री माताजी मैं आपकी कृपा से उदार व्यक्ति हूँ।
३. (अ)भवसागर: श्री माताजी आपकी कृपा से क्योंकि मैं शुद्ध विद्या हूँ अतः मैं स्वयं का गुरु हूँ।
४. हृदयचक्र : श्री माताजी आपकी कृपा से मैं आत्मा हूँ। कृपा करके

आत्मा के विरोध में कोई अपराध यदि मुझसे हुआ हो तो उसे क्षमा करें । श्री माताजी आपकी कृपा से मैं माँ के प्रेम का यन्त्र हूँ ।

५. विशुद्धि चक्र : श्री माताजी आपकी कृपा से मैं आत्मा हूँ और निर्दोष हूँ । आत्मा किस प्रकार दोषी हो सकती है?
६. आज्ञा चक्र : श्री माताजी कृपा करके मेरे अपराधों को क्षमा करें ।
७. दायँ सहस्रार : श्री माताजी आपकी कृपा से मैं सभी चुनौतियों में सुरक्षित (बायाँ भाग) हूँ और अपना उत्थान पाने तक सभी चुनौतियों पर मैं विजय प्राप्त करूँगा ।
८. संपूर्ण बायाँ : श्री माताजी मैं भाग्यशाली हूँ कि आपकी बाजू कृपादृष्टि मुझ पर है ।

दायाँ भाग

१. मूलाधार चक्र : श्री माताजी निश्चय ही आप राक्षस हन्त्री है ।
२. स्वाधिष्ठान चक्र : श्री माताजी मैं कुछ नहीं करता । निश्चय ही आप कर्ता है और आप ही भोक्ता हैं ।
३. नाभि चक्र : श्री माताजी निश्चय ही आप मेरे अन्तः स्थित महान सम्मान है । श्री माताजी निःसन्देह आप ही मेरी आर्थिक, पारिवारिक समस्याओं का समाधान करती हैं और मेरे कुशल - क्षेम का ध्यान रखती है ।
- ३.(अ)भवसागर : श्री माताजी निःसन्देह आपही मेरे गुरु/स्वामी हैं ।
४. हृदय चक्र : श्री माताजी मेरे अन्दर जो जिम्मेदारी भाव है वो आप ही हैं । निश्चित रूप से आप ही सदाचार की सीमाएं हैं तथा प्रेममय पिता की कृपा भी आप ही हैं ।
५. विशुद्धि चक्र : श्री माताजी मेरी वाणी तथा कर्मों का माधुर्य निश्चित रूप से आप ही हैं ।
६. आज्ञा चक्र : श्री माताजी मैंने सबको क्षमा किया। अपनी गलतियों के लिए स्वयं को भी क्षमा किया । कृपा करके मुझे अपनी कृपा दृष्टि में बनाए रखिए ।
७. बायाँ सहस्रार : श्री माताजी निश्चय ही मेरे उत्थान मार्ग की सभी चुनौतियों (दायाँ भाग) पर विजय आप ही हैं ।
८. दायँ सहस्रार : श्री माताजी निश्चय ही आप ही आदि शक्ति (Holy Spirit) हैं ।

नित्यानन्दकरी निर्मलेश्वरी

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलाघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता निर्मलेश्वरी ।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी
सर्वैश्वर्यकरी तपःफलकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता निर्मलेश्वरी ।

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकार बीजाक्षरी
मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता निर्मलेश्वरी ।

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपांकुरी
श्री विश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता निर्मलेश्वरी ।

उर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी
वेणीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता निर्मलेश्वरी ।

निर्विघ्नमस्तु

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ॥१॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजाननः
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥२॥

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥३॥

श्री गणेश अथर्वशीर्ष

ॐ नमस्ते गणपतये, त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि, त्वमेव केवलं कर्ताऽसि त्वमेव केवलं धर्ताऽसि, त्वमेव केवलं हर्ताऽसि, त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि, त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् ॥१॥ ऋतं वच्मि, सत्यं वच्मि ॥२॥ अव त्वं माम्, अव वक्तारम्, अव श्रोतारम्, अव दातारम्, अव धातारम्, अवानूचानमव शिष्यं, अव पश्चात्तात्, अव पुरस्तात्, अवोत्तरात्तात्, अव दक्षिणात्तात्, अव चोर्ध्वात्तात्, अवाधरात्तात्, सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ॥३॥ त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः, त्वं आनन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः, त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि, त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥४॥ सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते, सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति, सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति, सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति, त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलोभः, त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥५॥ त्वं गुणत्रयातीतः, त्वं देहत्रयातीतः, त्वं कालत्रयातीतः, त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्, त्वं शक्तित्रयात्मकः, त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्, त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं इंद्रस्त्वं अग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥६॥ गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनंतरं, अनुस्वारः परतरः, अर्धेन्दुलसितं, तारेण ऋद्धं, एतत्त्व मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम्, अकारो मध्यमरूपम्, अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्, बिन्दुरुत्तररूपम्, नादः संधानं, संहिता संधिः, सैषा गणेशविद्या, गणकऋषिः, निचृद् गायत्रीच्छंदः, गणपतिर्देवता, ॐ गँ गणपतये नमः ॥७॥ एकदंताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दंती प्रचोदयात् ॥८॥ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशं अंकुशधारिणम्, रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् । रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्, रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् । भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्, आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् । एवं ध्यायति यो नित्यं, स योगी योगिनां वरः ॥९॥ नमो व्रातपतये, नमो गणपतये, नमः प्रमथपतये, नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय, विघ्ननाशिने, शिवसुताय, श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ॥१०॥

श्री गणेश अथर्वशीर्ष का हिन्दी अनुवाद

ॐ गणपति तुम्हें नमस्कार (ॐ-अकार, ओंकार, महेश अर्थात् आस्था का प्रतीक है) तुम ही प्रत्यक्ष तत्त्व हो। इस दृष्टिगत संसार में मूल तत्त्व जो दृष्टिगत होता है स्वयं तुम ही हो अर्थात् इस विश्व की प्रत्येक वह वस्तु जो दृश्यमान है, तुम ही हो। यदि इस संसार को किसी ने बनाया है तो वे कर्ता स्वयं तुम हो और इस प्रत्यक्ष संसार को केवल तुम्ही कर्तव्य रूपी आचरण से धारण कर रहे हो अर्थात् इसका पालन पोषण कर रहे हो। संसार में अपशिष्ट (बेकार) हो जाने वाले पदार्थों के आहरणकर्ता भी स्वयं तुम हो। अतः तुम स्वयं इस ब्रह्माण्ड में संपूर्ण रूप में व्याप्त हो, यह तथ्य निश्चित है। तुम्हारे अतिरिक्त कुछ भी सत्य नहीं है, आप से भिन्न सत्य की प्रतिष्ठा नहीं (खल्विदं, इदं, खलु अर्थात् इसके अतिरिक्त और कुछ सत्य नहीं)। तुम ही साक्षात् नित्य (सत्य) आत्मा हो (नित्य ही सत्य है, सत्य ही नित्य है मगर इसमें भी भेद है। नित्य स्वयं सिद्ध है और सत्य को हम सिद्ध कर सकते हैं।)

यह मेरी वाणी अर्थात् जो वचन ऊपर कहे हैं, नित्य हैं और सत्य हैं ये संसार नित्य भी है। (अर्थात् स्वयंसिद्ध है) और सत्य भी है अर्थात् इसे सिद्ध भी कर सकते हैं।

तुम मेरी रक्षा करो, मेरी वाक्शक्ति की रक्षा करो, मेरी श्रवण (सुनने) की शक्ति की रक्षा करो, मेरी दात्री (देने की) शक्ति की रक्षा करो, मेरी कर्तव्य (रचना करने की) शक्ति की रक्षा करो, मुझे जो गुरु से प्राप्त है उसकी रक्षा करो, मेरे गुरु भाव की भी रक्षा करो, शिष्य भाव की भी रक्षा करो (अर्थात् मेरे ज्ञान की भी रक्षा करो।) पश्चिम, पूर्व, उत्तर व दक्षिण से मेरी रक्षा करो। ऊपर से, नीचे से, सब तरफ से, भली प्रकार से मेरी रक्षा करो।

तुम स्वयं वाणी हो, तुम स्वयं चित्त हो, तुम्ही आनंद स्वरूप हो और तुम ही ब्रह्माण्ड रूप हो (ब्रह्म हो) और तुम्ही सच्चिदानंद स्वरूप हो। तुम ही ज्ञान स्वरूप हो, विज्ञान स्वरूप हो।

ये सारा दृश्यमान और गतिशील संसार तुम्ही से उत्पन्न होता है, तुम ही में स्थित है और तुम्ही में लय हो जाता है और प्रलय के बाद सृष्टि के अंत में तुमको ही प्राप्त करता है अर्थात् प्रलय के बाद सब तुम में विलीन हो जाएगा। तुम ही पंचभूत (भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश) हो, चारों वेद स्वरूप तुम हो।

तुम तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे हो अर्थात् उनसे ऊपर हो। तुम तीन प्रकार के शरीर या देह से परे हो, और तुम तीनों कालों (भूत, भविष्य, वर्तमान) से परे हो अर्थात् ऊपर हो। मूलाधार में तुम नित्य रूप से स्थित हो, तुम

ही तीनों शक्ति (सत्य, चित्त व आनंद) स्वरूप हो, योगीजन नित्य तुम्हारा ही ध्यान करते हैं। विश्व के लिए तुम्हीं ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र हो अर्थात् इस विश्व की रचना, अस्तित्व (पालनपोषण) और इसके विनाशकर्ता तुम्हीं हो। लोकहितार्थ अर्थात् लोगों के हित व लाभ के लिए तुम्हीं इंद्र, अग्नि, वायु, सूर्य और चंद्रमा के रूप में स्थित हो जिनमें मेघ रूप में, ज्वाला रूप में, प्राण, अपान, समान रूप में (वायु के तीन रूप) प्रकाश और ऊष्णता रूप में ठंडक और रस रूप में स्थित हो। तुम ही पृथ्वी, अंतरिक्ष और स्वर्ग के ब्रह्माण्ड स्वरूप में (ब्रह्म के तीन रूप भूः भवः स्वः) स्थित हो।

प्रारंभ में (ग) गकार का उच्चारण करके, उसके बाद अनुस्वार अकार का उच्चारण करें और अर्धचन्द्र बिंदु समेत उसका ध्यान करें। जब ये स्वर के साथ झंकृत हों तब यह तुम्हारे स्वरूप के अनुरूप होगा। (गकार + अकार + अनुस्वार + अर्धचन्द्रकार) (गं = ग + अ + . +) ये पूर्व लिखित मंत्र व अर्थ के अनुसार ही द्वितीय मंत्र दिया गया है और इसे गणेश विद्या कहा है। उनके स्मरण करने की विधि है जिससे गणेश विद्या का आरंभ हुआ है। गणेश विद्या में गणक ऋषि है, निचूद गायत्री छंद है, गणपति देवता हैं और ॐ गं गणपतये नमः मंत्र है।

यह गं से अभिप्राय बीज से है अर्थात् जिसका हम विस्तार नहीं कर सकते। अगर अकेले गं का भी उच्चारण करोगे तो सम्पूर्ण तंत्र से गणपति की स्तुति का आनन्द प्राप्त होगा।

एकदंत अर्थात् गणेश को हम (विद्महे) जानते हैं। वक्रतुंड (सूंडवाले) गणेश को हम समझते हैं। एक दंतवाले गणेश हम सबको प्रेरणा देते हैं। वह हमारे प्रेरक हैं। श्री गणेशजी के एक दांत हैं, चार हाथ हैं, जिनमें वे पाश और अंकुश को धारण किये हैं। (पाश-बाँधनेवाली रस्सी)

एकदंत गणेश, वर देनेवाले गणेश, हाथ में मूषक अंकित ध्वज धारण किए हुए हैं, ध्वज का रंग लाल है। गणेश लंबोदर (बड़े पेटवाले) और सूय के समान कान वाले हैं और लाल वस्त्र धारण किए हैं। सुगंधित सिंदूर से जिनका शरीर या अंग - अंग सुशोभित है, वे लाल पुष्पों की माला पहने हैं। भक्तों पर कृपा करने वाले हैं। संसार के कारण हैं व त्रुटिहीन देवता हैं जो सृष्टि के आदि में प्रकृति और पुरुष से भी परम या उत्तम रूप में प्रकट हुए हैं।

इस तरह से जो भी व्यक्ति नित्य प्रति, गणपति का ध्यान करता है वह योगी पुरुषों में श्रेष्ठ हैं। हे व्रात (समूह) के स्वामी, आपको नमस्कार हैं। हे गणों के स्वामी आपको नमस्कार हैं। शक्तिशालियों में प्रथम शक्ति के स्वामी आपको नमस्कार हैं। हे लंबोदर व एकदंत आपको नमस्कार हैं। हे शिव के पुत्र, विघ्नों के विनाशक, वरदान देनेवाले गणेश, आपको नमस्कार है।

श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम् ।

पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु माया अन्तरा याश्चबाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।

अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।

पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिकलीत वस मे गृहे ।

नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।

चन्द्रां हिरण्ययीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥

आर्द्रा यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।

सूर्यां हिरण्ययीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
 यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५ ॥
 यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
 सूक्तं पञ्चदशर्चच श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६ ॥
 पद्माने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
 तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१७ ॥
 अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
 धनं मे जुषतां देविसर्वकामांश्च देहि मे ॥१८ ॥
 पद्माने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
 विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥१९ ॥
 पुत्रपौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वादिगावे रथम् ।
 प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥२० ॥
 धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
 धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमस्तु ते ॥२१ ॥
 वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
 सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२ ॥
 न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभा नाशुभा मतिः ।
 भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् जपेत् ॥२३ ॥
 सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
 भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२४ ॥
 विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
 लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२५ ॥
 महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
 तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२६ ॥
 आनन्दः कर्दमः श्रीदशिकलीत इति विश्रुताः ॥
 ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीदेवीर्देवता मताः ॥२७ ॥
 ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
 भयशोकमनस्तापा नशन्तु मम सर्वदा ॥२८ ॥
 श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
 धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२९ ॥

सुखकर्ता दुःखहर्ता

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची । नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची ।
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची । कण्ठी झळके माळ मुक्ताफळांची ॥१॥

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती,
दर्शनमात्रे मन कामना पूरती ॥

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा । चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा ।

हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा । रूणझुणती नूपरे चरणी घागरिया ॥२॥

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती,
दर्शनमात्रे मन कामना पूरती ॥

लंबोदर पीतांबर फणिवर बंधना । सरळ सोंड वक्रतुण्ड त्रिनयना ।

दास रामाचा वाट पाहे सदना । संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे

सुरवर वंदना ॥३॥

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती,
दर्शनमात्रे मन कामना पूरती ॥

सबको दुआ देना माँ

सबको दुआ देना, माँ सबको दुआ देना ।

जय निर्मल माताजी, दिल में सदा रहना ।

माँ सबको दुआ देना ॥धृ॥

जग में संकट कारण, कितने लिये अवतार ।

विश्व में तेरी महिमा, तू गंगा यमुना ॥१॥ माँ सबको....

जो भी शरण में आया, सुख ही मिला उसको

बैठ के दिल में ओ माँ, लौट के ना जाना ॥२॥ माँ सबको....

मानव में अवतर के, कर दिया उजियाला ।

कलियुग में माया हैं, फिर भी पहचाना ॥३॥ माँ सबको....

सन्तजनों की धरती, हैं भारत माता ।

इस धरती पर आकर, दुःख से दूर करना ॥४॥ माँ सबको....

जब दिल में आये, तब मधुर संगीत सुन लो ।

होय सके जो सेवा, हमसे करा लेना ॥५॥ माँ सबको...

सौन्दर्यलहरी

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलुः कुशलः स्पन्दितुमपि ।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्चादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ॥१॥

Shiva is able to create only when He is united with Shakti. Otherwise, Mahadeva cannot even move about! Therefore, is it possible for those who have not done good Karma to either worship or praise You, who is worshipped every by Hari, Hara, Brahma and others?

अविद्यानामन्तस्तिमिर-मिहिर-द्वीप-नगरी
जडानां चैतन्य स्तबक मकरन्दसृतिझरीः
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिकाजन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवति ॥३॥

To the ignorant, this dust (of your feet) is the city of the rising sun to dispel the darkness of their mind, to the knowing, it is the flower of Consciousness (Chaitanya) overflowing with honey; to the needy, it is the Chintamani (the gem that yields all that is desired); and to those who are drowned in the ocean of births, it is the tusk of Varaha!

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते ।
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे ।
शिवाकारे मञ्जे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ॥८॥

Fortunate are they: the few that worship You as a Being who by nature is Consciousness (Chit) and Bliss (Ananda), seated on the cushion of Paramasiva spread on His cot in the house made of Chintamani, situated in the garden of 'neepa' plants on the island of gems, surrounded by 'kalpaka trees in the ocean of nectar.

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि ।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे ॥९॥

In the thousand - petalled lotus, Sahasrara, You sport with your Lord in secret, having traversed the entire path of Kundalini, Viz., the

element of earth in Mooladhara, water in Manipura, fire in Swadhisthana, air in Anahata, Ether above it in Vishuddhi and the Mind in Ajna between the eye-brows.

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
 गतिः प्रादक्षिण्यं क्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
 प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणं दृशा
 सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥२७॥

Let all my prattle become recitation of Your name; let the movement of my limbs be gestures of worship of Thee, let my walk be perambulation around Thee, my food sacrificial offering to Thee, my lying down prostration to Thee and let all my sense enjoyments be worship of Thee and Thee alone.

श्री विष्णुमंत्र

ॐ श्री केशवाय नमः । ॐ श्री नारायणाय नमः । ॐ श्री माधवाय नमः ।
 ॐ श्री गोविंदाय नमः । ॐ श्री विष्णवे नमः । ॐ श्री मधुसूदनाय नमः ।
 ॐ श्री त्रिविक्रमाय नमः । ॐ श्री वामनाय नमः । ॐ श्री श्रीधराय नमः ।
 ॐ श्री हृषीकेशाय नमः । ॐ श्री पद्मनाभाय नमः । ॐ श्री दामोदराय नमः ।
 ॐ श्री संकर्षणाय नमः । ॐ श्री वासुदेवाय नमः । ॐ श्री प्रद्युम्नाय नमः ।
 ॐ श्री अनिरुद्धाय नमः । ॐ श्री पुरुषोत्तमाय नमः । ॐ श्री अधोक्षजाय नमः ।
 ॐ श्री नरसिंहाय नमः । ॐ श्री अच्युताय नमः । ॐ श्री जनार्दनाय नमः ।
 ॐ श्री उपेंद्राय नमः । ॐ श्री हरये नमः । ॐ श्री कृष्णाय नमः ।

श्री गुरुमंत्र

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
 गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

श्री गायत्रीमन्त्र

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ मनः ॐ जनः
 ॐ तपः ॐ सत्यम् । ॐ भूर्भुवः स्वः
 ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ॥
 ॐ आपो ज्योतिः रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

प्रार्थना

घालीन लोटांगण वन्दीन चरण । डोळ्यांनी पाहीन रूप तुझे ।
प्रेमे आलिंगीन आनन्दे पूजिन । भावे ओवाळीन म्हणेन नामा ॥१॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥२॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ॥
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥३॥
अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ॥
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रम् भजे ॥४॥

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥१॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥२॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।
आगतं परमचैतन्यम् पुण्योऽहं तव दर्शनात् ॥३॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष परमेश्वरि ॥४॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥५॥

शिवप्रार्थना

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व ।
जयजय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥१॥
जय जगदंब... जगदंब....जगदंब... जगदंब... (१२)
अल्लाऽऽहो अकबर, अल्लाऽऽहो अकबर...(१६)

अथ तंत्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
 नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥
 रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
 ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥
 कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
 नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥
 दुगायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
 ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥
 अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
 नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥

या देवी	सर्वभूतेषु	विष्णुमायेति	शब्दिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥६॥
या देवी	सर्वभूतेषु	चेतनेत्यभिधीयते	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥७॥
या देवी	सर्वभूतेषु	बुद्धिरूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥८॥
या देवी	सर्वभूतेषु	निद्रारूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥९॥
या देवी	सर्वभूतेषु	क्षुधारूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥१०॥
या देवी	सर्वभूतेषु	छायारूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥११॥
या देवी	सर्वभूतेषु	शक्तिरूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥१२॥
या देवी	सर्वभूतेषु	तृष्णारूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥१३॥
या देवी	सर्वभूतेषु	क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥१४॥
या देवी	सर्वभूतेषु	जातिरूपेण संस्थिता ।	
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमो नमः ॥१५॥

या देवी	सर्वभूतेषु	लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी	सर्वभूतेषु	शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥
या देवी	सर्वभूतेषु	श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥
या देवी	सर्वभूतेषु	कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
या देवी	सर्वभूतेषु	लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥
या देवी	सर्वभूतेषु	वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥
या देवी	सर्वभूतेषु	स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥
या देवी	सर्वभूतेषु	दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥
या देवी	सर्वभूतेषु	तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥
या देवी	सर्वभूतेषु	मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥
या देवी	सर्वभूतेषु	भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै	नमस्तस्यै	नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।

भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥२७॥

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥

Lord's Prayer

Our Father who art in heaven	trespass against us
Hallowed be Thy name	Lead us not into temptation
Thy kingdom come	But deliver us from evil
Thy will be done	For Thine is the kingdom
On earth, as it is in Heaven	And the power
Give us this day our daily bread	And the glory
And forgive us our trespasses	Forever and forever
As we forgive those who	Amen !

श्रीमहालक्ष्मीअष्टकम्

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते
शंखचक्रगदाहस्ते, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥१॥

नमस्ते गरूडारूढे, कोल्हासुरभयंकरी
सर्वपाप हरे देवि, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे, सर्वदुष्टभयंकरी ।
सर्व दुःख हरे देवि, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥३॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि, भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मंत्रमूर्ते सदा देवि, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि, आद्यशक्तिमहेश्वरि ।
योगजे योगसंभूते, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥५॥

स्थूलसूक्ष्मे महारौद्रे, महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि, परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातः, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥७॥

श्वेतांबरधरे देवि, नानालंकार भूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातः, महालक्ष्मि (श्री निर्मलादेवी) नमोऽस्तुते ॥८॥

महालक्ष्म्याष्टकं स्तोत्रं, यः पठेद्भक्तिमात्ररः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥

एककालं पठेन्नित्यं, महापापविनाशनम्
द्विकालं यः पठेन्नित्यं, धनधान्यसमान्वितः ॥१०॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं, महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मिर्भवेत् तस्य प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

श्री ज्ञानेश्वरकृत पसायदान

आता विश्वात्मके देवे । येणे वाग्यज्ञे तोषावे ।
तोषोनि मज द्यावें । पसायदान हें ॥

जे खळांची व्यंकटी सांडो । तयां सत्कर्मी रती वाढो ।
भूतां परस्परें पडो । मैत्र जीवाचें ॥

दुरितांचे तिमिर जावो । विश्व स्वधर्म सूर्ये पाहो ।
जो जे वांछील तो ते लाहो । प्राणिजात ॥

वर्षत सकळमंगळी । ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी ।
अनवरत भूमंडळी । भेटतु भूतां ॥

चलां कल्पतरूंचे आरव । चेतनाचिंतामणींचे गाव ।
बोलते जे अर्णव । पीयूषाचे ॥

चन्द्रमे जे अलांछन । मार्तंड जे तापहीन ।
ते सर्वाही सदा सज्जन । सोयरे होतु ॥

किंबहुना सर्वसुखी । पूर्ण होऊनि तिन्ही लोकी ।
भजिजो आदिपुरुखी । अखंडित ॥

आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषी लोकीं इये ।
दृष्टादृष्टविजये । होआवे जी ॥

येथ म्हणे श्री विश्वेश्वरावो । हा होईल दानपसावो ।
येणे वरे ज्ञानदेवो । सुखिया झाला ॥

॥ श्री लक्ष्मी के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

श्री आद्यलक्ष्मी	श्री वैष्णवी	श्री अनंतसंभवा
श्री विद्यालक्ष्मी	श्री सनातनी	श्री अनंतस्था
श्री योगलक्ष्मी	श्री निरामया	श्री महाशक्ति
श्री गृहलक्ष्मी	श्री विश्वानंदा	श्री प्राणशक्ति
श्री राजलक्ष्मी	श्री ज्ञानज्ञेया	श्री प्राणदात्री
श्री अमृतलक्ष्मी	श्री ज्ञानगम्या	श्री महासमूहा
श्री सत्यलक्ष्मी	श्री ज्ञानज्ञेयविकासिनी	श्री सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा
श्री विजयलक्ष्मी	श्री निर्मला	श्री शब्दपूर्वा
श्री गजलक्ष्मी	श्री स्वरूपा	श्री व्यक्ताव्यक्ता
श्री धनलक्ष्मी	श्री अकलंका	श्री संकल्पसिद्धा
श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी	श्री निराधारा	श्री तत्त्वगर्भा
श्री संतानलक्ष्मी	श्री निराश्रया	श्री चित्स्वरूपा
श्री भाग्यलक्ष्मी	श्री निर्विकल्पा	श्री महामाया
श्री धान्यलक्ष्मी	श्री पावनीकरा	श्री योगमाया
श्री वीरलक्ष्मी	श्री अपरिमिता	श्री महायोगीश्वरी
श्री मोक्षलक्ष्मी	श्री भवभ्रांति विनाशिनी	श्री योगसिद्धिदायिनी
श्री महालक्ष्मी	श्री महाधामी	श्री महायोगेश्वरवृत्ता
श्री सत्त्वा	श्री स्थितिवृद्धिर्घवा गति	श्री योगेश्वरप्रिया
श्री शांता	श्री ईश्वरी	श्री ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता
श्री व्यापिनी	श्री अक्षया	श्री गौरी
श्री व्योमनिलया	श्री अप्रमेया	श्री विश्वरूपा
श्री परमानंदरूपिणी	श्री सूक्ष्मापरा	श्री विश्वमाता
श्री नित्यशुद्धा	श्री निर्वाणदायिनी	श्री श्रीविद्या
श्री नित्यतृप्ता	श्री शुद्धविद्या	श्री महानारायणी
श्री निर्विकारा	श्री तुष्टी	श्री पिंगला
श्री ज्ञानशक्ति	श्री महाधीरा	श्री विष्णुवल्लभा
श्री कर्तृशक्ति	श्री अनुग्रहशक्तिराधा	श्री योगरता
श्री निरानंदा	श्री जगज्येष्ठा	श्री भक्तानां परिरक्षिणी
श्री विमला	श्री ब्रह्माण्डवासिनी	श्री पूर्णचंद्राभा

श्री अनंता	श्री अनंतरूपा	श्री भयनाशिनी
श्री दैत्यदानवमर्दिनी	श्री अनाहता	श्री सर्वस्वरूपिणी
श्री ईडा	श्री सुषुम्ना	श्री व्योमलक्ष्मी
श्री कुण्डलिनी	श्री मणिपुरचक्रनिवासिनी	श्री तेजोलक्ष्मी
श्री सर्वमंगलमांगल्या	श्री रसलक्ष्मी	श्री सौम्यरूपा
श्री शिवा	श्री जगद्योनि	श्री महादीप्ता
श्री योगमाता	श्री गंधलक्ष्मी	श्री मूलप्रकृति

॥ श्री गणेश के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

विनायकाय	शान्ताय	वरदाय
विघ्नराजाय	ब्रह्मचारिणे	शाश्वताय
गौरीपुत्राय	गजाननाय	दूर्वाबिल्व-प्रियाय
गणनायकाय	मुनिस्तुताय	वीतभयाय
गणेश्वराय	एकदन्ताय	कृतिने
स्कन्दाग्रजाय	चतुर्बाहवे	गदिने
अव्ययाय	चतुराय	चक्रिणे
सर्वसिद्धिप्रदाय	शक्तिसंयुक्ताय	श्रीदाय
पूताय	लम्बोदराय	अजाय
दक्षाय	हरये	श्रीपतये
अध्यक्षाय	ब्रह्मविदुत्तमाय	स्तुतिहर्षिताय
हेरंबाय	महाकालाय	जटिलाय
इन्द्रश्रीप्रदाय	ग्रहपतये	सनातनाय
वाणीप्रदाय	कामिने	वेदवेद्याय
शर्वतनयाय	पाशाङ्कुशधराय	विद्यानिधये
देवाय	प्रथमपूजिताय	जगन्मनसे
विघ्नविनाशाय	छन्दसे	एकदन्ताय
ज्ञानरूपाय	गुणातीताय	ज्योतिस्वरूपाय
अनेकार्चिताय	निरंजनाय	परमपवित्राय
शुद्धाय	अकल्मषाय	चन्द्रचूडामणये
वक्रतुण्डाय	स्वयंसिद्धाय	भीमोदराय

पापहारिणे	सिद्धार्चितपदाम्बुजाय	तुष्टाय
सम-हिताय	श्रीकंठाय	शर्मदाय
सौम्याय	सिंदूरवरदाय	मोहवर्जिताय
इक्षुचापधृताय	आश्रिताय	शरण्याय
कुमारगुरवे	रामार्चिताय	कल्याण गुरवे
कैवल्यसुखदाय	स्थूलकण्ठाय	चित्तेश्वराय
सच्चिदानन्दविग्रहाय	अग्रण्ये	अमितविक्रमाय
शूर्पकर्णाय	श्रीधीराय	गुणपूर्णाय
पूर्णाय	योगीशाय	अबोधिताप्रदायकाय
नागयज्ञोपवीतिने	कमलाक्षाय	मोक्षप्रदायकाय
भालचन्द्राय	योगधाम्ने	पृथ्वीतत्त्वस्वामिने
सत्त्वाधराय	अव्यक्तमूर्तये	समस्तसाक्षिणे
शिवपुत्राय	विश्वधात्रे	सर्वात्मकाय
नित्याय	समस्तजगद्धराय	अनन्ताय
श्रीमुखाय	मूषकवाहनाय	कान्तिदाय
मूलाधारचक्रस्थिताय	निर्मलाय	

॥ श्री महाकाली के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

महाकाली	परमानन्दरूपा	महिषासुरघातिनी
कामधेनु	स्तुत्या	रक्तबीजविनाशिनी
कामस्वरूपा	पद्मालया	नरकान्तका
वरदा	सदापूज्या	उग्रचण्डेश्वरी
जगदानन्दकारिणी	सर्वप्रियंकरी	क्रोधिनी
जगत्जीवमयी	सर्वमंगला	उग्रप्रभा
वज्रकंकाली	पूर्णा	चामुण्डा
शान्ता	विलासिनी	खड्गपालिनी
सुधासिन्धुनिवासिनी	अमोघा	भास्वरासुरी
निद्रा	भोगवती	शत्रुमर्दिनी
तमसी	सुखदा	रणपण्डिता
नन्दिनी	निष्कामा	रक्तदन्तिका
सर्वानन्दस्वरूपिणी	मधुकैटभहन्त्री	रक्तप्रिया

कपालिनी	महतकुचा	घोररूपा
कुरुकुलविरोधिनी	प्रियभाषिणी	घोरदंष्ट्रा
कृष्णदेहा	सुभाषिणी	चण्डी
नरमुण्डली	मुक्तकेशी	सुमति
गलद्गुरुधिरभूषणा	चन्द्रकोटिसमप्रभा	पुण्यदा
प्रेतनृत्यपरायणा	अगाधरूपिणी	तपस्विनी
लोलजिह्वा	मनोहरा	क्षमा
कुण्डलिनी	मनोरमा	तरंगिणी
नागकन्या	वश्या	शुद्धा
पतिव्रता	सर्वसौन्दर्यनिलया	सर्वेश्वरी
शिवसंगिनी	रक्ता	गरिष्ठा
विसंगी	स्वयम्भुकुसुमप्राणा	जयशालिनी
भूतपतिप्रिया	स्वयम्भुकुसुमोन्मदा	चिन्तामणि
प्रेतभूमिकृतालया	शुक्रपूज्या	अद्वैतभोगिनी
दैत्येन्द्रमथिनी	शुक्रस्था	योगेश्वरी
चन्द्रस्वरूपिणी	शुक्रात्मिका	भोगधारिणी
प्रसन्नपद्मवदना	शुक्रनिन्दकनाशिनी	भक्तभाविता
स्मेरवक्त्रा	निशुम्भशुम्भ संहन्त्री	साधकानन्दसन्तोषा
सुलोचना	वन्हिमण्डलमध्यस्था	भक्तवत्सला
सुदन्ती	वीरजननी	भक्तानन्दमयी
सिन्दूरारुणमस्तका	त्रिपुरमालिनी	भक्तशंकरी
सुकेशी	कराली	भक्तिसंयुक्ता
स्मितहास्य	पाशिनी	निष्कलंका

॥ श्री माताजी निर्मला देवी के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

श्री माताजी	भवानी	निरंजना
श्री महाराज्ञी	भक्तिप्रिया	निल्लेपा
देवकार्यसमुद्यता	भक्तिगम्या	निर्मला
अकुला	शर्मदायिनी	निष्कलंका
विष्णु-ग्रन्थि-विभेदिनी	निराधारा	नित्या
निराकारा	सान्द्रकरुणा	पाशहन्त्री

निराकुला
निर्गुणा
निष्कला
निष्कामा
निरुपप्लवा
नित्यमुक्ता
निर्विकारा
निराश्रया
निरन्तरा
निष्कारणा
निरुपाधिः
निरीश्वरा
नीरागा
निर्मदा
निश्चिन्ता
निरहंकारा
निर्मोहा
निर्ममा
निष्पापा
निःसंशया
निर्भवा
निर्विकल्पा
निराबाधा
निर्नाशा
निष्क्रिया
निष्परिग्रहा
निस्तुला
नीलचिकुरा
निरपाया
निरत्यया
सुखप्रदा

महादेवी
महापूज्या
महापातकनाशिनी
महाशक्तिः
महामाया
महारतिः
विश्वरूपा
पद्मासना
भगवती
रक्षाकरी
राक्षसघ्नी
परमेश्वरी
नित्ययौवना
पुण्यलभ्या
अचिंत्य रूपा
पराशक्तिः
गुरुमूर्तिः
आदिशक्तिः
योगदा
एकाकिनी
सुखाराध्या
शोभना सुलभागतिः
सच्चिदानन्दरूपिणी
लज्जा
शुभकरी
चण्डिका
त्रिगुणात्मिका
महती
प्राणरूपिणी
परमाणुः

वीरमाता
गम्भीरा
गर्विता
क्षिप्रप्रसादिनी
सुधास्रुतिः
धर्माधारा
विश्वग्रासा
स्वस्था
स्वभावमधुरा
धीरसमर्चिता
परमोदारा
शाश्वती
लोकातीता
क्षमात्मिका
लीलाविनोदिनी
श्रीसदाशिव
पुष्टिः
चन्द्रनिभा
रविप्रख्या
पावनाकृतिः
विश्वगर्भा
चित्शक्तिः
विश्वसाक्षिणी
विमला
विलासिनी
वरदा
विजया
वन्दारु-जन-वत्सला
सहजयोगदायिनी
विश्व-निर्मला-धर्मदायिनी

॥ श्री आदिगुरु दत्तात्रेय के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

सत्त्वाय	ज्वरनाशनाय	प्रत्याहारनयोजकाय
सत्त्वभृतांगतये	भेदवैतंडखंडनाय	प्रत्यक्षवर्तिने
कमलालयाय	निर्वासनाय	देवानां परमागतये
हिरण्यगर्भाय	निरीहाय	महादेवाय
बोधसमाश्रयाय	निरहंकाराय	भुवनान्तकाय
नाभाविने	शोक-दुःख-हराय	पापनाशनाय
देहशून्याय	निराशीर्निरुपाधिकाय	अवधूताय
परमार्थदृशे	अनंत-विक्रमाय	मदापहाय
यंत्रविदे	भेदांतकाय	मायामुक्ताय
धराधराय	मुनये	चिदुत्तमाय
सनातनाय	महायोगिने	क्षेत्रज्ञाय
चित्कीर्तिभूषणाय	योगाभ्यासप्रकाशनाय	क्षेत्रगाय
चंद्रसूर्याग्निलोचनाय	योगारेदर्पनाशनाय	क्षेत्राय
अन्तःपूर्णाय	नित्यमुक्ताय	संसार-तमोनाशनाय
बहिःपूर्णाय	योगाय	शंकामुक्तसमाधिस्थाय
पूर्णात्मने	स्थानदाय	पात्रे
खगर्भाय	महानुभवभाविताय	नित्यशुद्धाय
अमरार्चिताय	कामजिते	बालाय
गम्भीराय	शुचिर्भूताय	ब्रह्मचारिणे
दयावते	त्यागकारणत्यागात्मने	हृदयस्थाय
सत्य-विज्ञान-भास्कराय	मनोबुद्धिविहीनात्मने	प्रवर्तनाय
मानात्मने	संकल्पदुःखदलनाय	सदाशिवाय
चेतना-विगतायने	जीवसंजीवनाय	श्रेयस्काय
अक्षरमुक्ताय	लयातीताय	अज्ञानखंडनाय
पराक्रमिणे	लयस्यान्ताय	धृतये
त्यागार्थसंपन्नाय	प्रमुखाय	दंभ-दर्प-मदापहाय
त्यागविग्रहाय	नन्दिने	गुणांतकाय
त्यागकारणाय	हंससाक्षिणे	निराभासाय
निरंजनाय		भोगज्ञानप्रकाशनाय

श्रद्धार्थिने
 गोसाक्षिणे
 विशुद्धोत्तमगौरवाय
 निराहारिणे
 नित्यबोधाय
 प्रभवे
 सत्त्वभृते
 भूतशंकराय

सत्त्वविदे
 विद्यावते
 आत्मानुभवसंपन्नाय
 विशालाक्षाय
 धर्मवर्धनाय
 भोक्त्रे
 भोग्याय
 भोगार्थसंपन्नाय

सहजाय
 दीप्ताय
 निर्वाणाय
 तत्त्वात्मज्ञानसागराय
 परमानंद सागराय पुराण
 साक्षात् श्रीआदिगुरु
 दत्तात्रेय....

॥ श्रीविष्णु के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

श्रीकेशवाय
 नारायणाय
 माधवाय
 गोविन्दाय
 विष्णवे
 मधुसूदनाय
 त्रिविक्रमाय
 वामनाय
 श्रीधराय
 हृषीकेशाय
 पद्मनाभाय
 दामोदराय
 संकर्षणाय
 वासुदेवाय
 प्रद्युम्नाय
 अनिरुद्धाय
 पुरुषोत्तमाय
 अधोक्षजाय
 नरसिंहाय
 रक्षणे
 अमितविक्रमाय

उपेन्द्राय
 अच्युताय
 जनार्दनाय
 हराय
 कृष्णाय
 विष्णवे
 पेशलाय
 पुष्कराक्षाय
 हरये
 चक्रिणे
 नन्दकिने
 शार्ङ्धराय
 शंखभृते
 वनमाली
 गदाधराय
 कुवलेशाय
 गरुडध्वजाय
 लक्ष्मीवते
 भगवते
 धनेश्वराय
 वसवे

वैकुण्ठपतये
 धर्मगुणे
 धर्माध्यक्षाय
 नियन्त्रे
 नैकजाय
 स्वस्तिते
 साक्षिणे
 सत्याय
 धरणीधराय
 व्यवस्थानाय
 सर्वदर्शिने
 सर्वज्ञाय
 घनाय
 नहुषाय
 महामायाय
 अधोक्षजाय
 यज्ञपतये
 वेगवते
 सहिष्णवे
 हिरण्यनाभाय
 शरीरभृते

शत्रुघ्नाय
 भीमाय
 सुजनेश्वराय
 सम्प्रमर्दनाय
 भावनाय
 क्षेत्रज्ञाय
 सर्वयोगविनिःसृ
 योगेश्वराय
 चलाय
 वायुवाहनाय
 जीवनाय
 सम्भवाय
 संवत्सराय
 वर्धनाय
 समितिजयाय

ईशानाय
 लोकाध्यक्षाय
 त्रिलोकेशाय
 जगत्-स्वामिने
 युगावर्ताय
 विस्ताराय
 अनन्तरूपाय
 अविशिष्टाय
 महर्द्धये
 पर्यवस्थिताय
 स्थविष्ठाय
 महाविष्णवे
 विश्वरूपाय
 कल्किने
 एकस्मै

अन्नाय
 मुकुन्दाय
 अग्रण्ये
 अमोघाय
 वरदाय
 शुभेक्षणाय
 सतामृतये
 सुखदाय
 वत्सलाय
 विरहाय
 प्रभवे
 अमरप्रभवे
 सुरेशाय
 पुरन्दराय
 नैकस्मै

॥ श्रीकृष्ण के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

श्रीधराय
 माधवाय
 अच्युताय
 केशवाय
 मधुसूदनाय
 त्रिविक्रमाय
 भक्तोद्धारणाय
 श्रीगोपालाय
 वेदवेदान्तपारगाय
 सनातनाय
 आदिकर्त्रे
 महाकर्त्रे
 पद्मनाभाय
 पूर्णाय

महाकालाय
 जगद्धात्रे
 नारायणाय
 हृषीकेशाय
 गोविन्दाय
 वासुदेवाय
 गोवर्धनधराय
 सर्वमंगलदात्रे
 सर्वकामप्रदायकाय
 वरेण्याय
 कालियर्मदनाय
 ब्रह्मसनातनाय
 जीवनान्तकाय
 सुधासिन्धुमध्याय

शुभदायकाय
 राधामोहनाय
 आत्मारामाय
 करूणानिधये
 वासुदेवात्मजाय
 नीलाम्बरधराय
 प्रभवे
 भगवते
 कंसचारणूरमर्दनाय
 अणोरणीयसे
 महतोमहीयसे
 महामायाय
 योगक्षेमदायकाय
 सर्वसौभाग्यसम्पन्नाय

कल्पवृक्षाय
 महाफलाय
 हरिनारायणाय
 गोपतये
 विश्वपूजिताय
 सुधामयाय
 अनन्तरूपाय
 मोहनाशनाय
 सदायोगिने
 जगत्पतये
 सर्वपापघ्नाय
 पितामहाय
 कृपाकारिणे
 राधारमणसुन्दराय
 सर्वधर्मज्ञाय
 सर्वज्ञाय
 देवकीनन्दनाय
 शान्ताय
 समस्तप्रियकारकाय
 सत्याय
 जनार्दनाय
 गीतादायकाय
 दुष्टशत्रुविनाशनाय

विठ्ठल-रूक्मीणीभ्याम्
 निरानंदाय
 देवदेवाय
 दयानिधये
 अनन्ताय
 निर्गुणाय
 नित्याय
 निर्विकल्पाय
 पुरुषोत्तमाय
 पार्थसारथये
 हिरण्यगर्भाय
 मुकुन्दाय
 परमेश्वराय
 भक्तवत्सलाय
 विष्णवे
 श्रीनिवासाय
 महायोगेश्वराय
 जगद्गुरवे
 समस्तजगदानन्दाय
 गोपीरञ्जनादैवज्ञाय
 महायोगिने

ब्रह्माण्डनायकाय
 विष्णुमायाय
 सर्वभूतात्मने
 सर्वशास्त्रविशारदाय
 महानुभावाय
 शरणागतवत्सलाय
 सच्चिदानन्ददायकाय
 सत्यधर्मपरायणाय
 विराटांगना विराटाय
 गजेन्द्रमोक्षकायाय
 क्षेत्रज्ञाय
 ज्ञानदायकाय
 नादबिन्दुकलातीताय
 संसारतारकाय
 आदिदेवाय
 महादेवाय
 शुभात्मकाय
 विश्वमूर्तये
 महाप्रभवे
 समस्तभुवनाधाराय
 भक्तिपरायणाय
 मुरलीमनोहराय
 साक्षात् श्री....

॥ श्रीशिव के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

शिव
 शंकर
 स्वयम्भु
 पशुपति
 शम्भु

क्षमाक्षेम
 प्रियभक्त
 कामदेव
 साधुसाध्य
 परमेश्वर

हृत्पुण्डरीकासीन
 जगद्हितैषी
 व्याघ्रकोमल
 वत्सल
 अतीन्द्रिय

लोकोत्तर सुखालय	वीरेश्वर	नक्षत्रमालीन
सर्वसह	सर्वेश्वर	अनाद्यन्त
स्वधृत	कामेश्वर	आत्मयोनि
एकनायक	विश्वसाक्षिणे	नभयोनि
श्री वत्सल	नित्यनृत्याय	करुणा सागर
शुभदा	सर्ववास	शूलीन
सर्वसत्त्वावलम्बन	महायोगी	महेष्वासः
शर्वरीपति	सद्योगी	निष्कलंक
वरद	सदाशिव	नित्यसुन्दर
वायुवाहन	आत्मा	अर्धनारीश्वर
कमण्डलुधर	आनन्द	उमापति
नंदीश्वर	चन्द्रमौलि	रसदा
प्रसदस्व	महेश्वर	उग्र
सुखानिल	सुधापति	महाकाल
नागभूषण	अमृतपा	कालकाल
कैलाश-शिखर-वासीन्	अमृतमय	वैयाघ्रधुर्य
त्रिलोचन	प्रणतात्मक	शत्रुप्रमथिन्
पिनाकपाणि	पुरुष	सर्वाचार्य
श्रमण	प्रच्छन्न	सम
अचलेश्वर	सूक्ष्म	आत्मप्रसन्ना
व्याघ्रचर्माम्बर	कर्णिकाप्रिय	नरनारायणप्रिय
उन्मत्तवेष	कवि	रसज्ञ
प्रेतचारिरी	अमोघदण्ड	भक्तिकाय
हर	नीलकण्ठ	लोकवीराग्रणी
रुद्र	जटिन्	चिरन्तन
भीमपराक्रम	पुष्पलोचन	विश्वम्भरेश्वर
नटेश्वर	ध्यानाधर	नवात्मा
नटराज	ब्रह्माण्डहत	नवयेरूसलमेश्वर
ईश्वर	कामशासन	आदिनिर्मलात्मा
परमशिव	जितकाम	सहजयोगीप्रिय
देवासुर-गुरु	परमात्मा	जितेन्द्रिय

॥ श्रीराम के १०८ नाम ॥

(ओम त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः)

श्रीरामाय	भवरोगस्य हरणाय	महापुरुषाय
रामभद्राय	दूषण-त्रिशिरो-हन्त्रे	पुण्योददयाय
रामचन्द्राय	त्रिगुणात्मिकाय	पूर्णपुरुषोत्तमाय
शाश्वताय	त्रिविक्रमाय	मितभाषिणे
राजीवलोचनाय	त्रिलोकात्मने	पूर्वभाषिणे
श्रीमते	पुण्य-चरित्र-कीर्तनाय	राघवाय
राजेन्द्राय	त्रैलोक्य रक्षकाय	आनन्दगुणगम्भीराय
रघुपुंगवाय	दंडकारण्य कर्ताय	धीरोदात्तगुणोत्तमाय
जानकीवल्लभाय	अहल्याशापविमोचनाय	महादेवादिपूजिताय
जैत्राय	पितृभक्ताय	सेतुकृताय
जितमित्राय	वरप्रदाय	सर्वतीर्थमयाय
जनार्दनाय	जितेन्द्रियाय	हराय
विश्वामित्रप्रियाय	जित क्रोधाय	श्यामगाय
दानध्याय	जगद्गुरवे	सुन्दराय
शरणागतनाथाय	चित्रकूट-समाश्रयाय	सूर्याय
सीतारामाय	सुमित्रापुत्रसेविताय	पीठवासवे
सत्यवाचे	सर्वदेवादिदेवाय	धनुर्धराय
सत्यत्रिक्रमाय	मृतवानरजीवनाय	यजमान
सत्यार्थाय	मायामारीचहन्त्रे	जरामरण-वर्जिताय
व्रतधराय	महादेवाय	बिभीषण प्रतिष्ठदात्रे
सदाहनुमदाश्रिताय	महाभुजाय	परमात्मने
सर्वदेवस्तुताय	परब्रह्मणे	कौशल्याय
सौम्याय	सच्चिदानन्दविग्रहाय	खड्गवासिने
ब्रह्ममन्ये	परस्मै	विभीषणापरित्रात्रे
मुनिसंस्तुतायः	परमधाम्ने	हरिकोदण्डखंडनाय
महायोगिने	परात्पराय	दशग्रीव शिरोहराय
महोदराय	परेशाय	ताटकान्ताय
सर्वपुण्याधिकफलाय	परागयाय	वेदान्तसाराय
आदिपुरुषाय	सर्वदेवासकाय	वेदान्तमने

परमपुरुषाय	मुनिसेवित	भवभञ्जन
सर्वपराक्रम	हिरण्यगर्भ	शक्तिमान्
कृपाकर	तारकब्रह्म	महाविष्णु
शान्तिभद्र	नित्य तृप्त	श्रीनिवास
स्वभावभद्र	पूर्णमूर्ति	निर्विकल्प
मध्यस्थ	मोक्षद	नारायण
संसारभयनाशन	सर्वलोकेश्वर	अच्युत

अष्टलक्ष्मी स्तोत्रम्

- १) सुमनसवंदित सुन्दरि माधवि, चन्द्र सहोदरि हेममये
मुनिगण-मण्डित-मोक्षप्रदायिनि, मंजुल-भाषिणि वेदनुते
पंकजवासिनि देवसुपूजित-सद्गुण-वर्षिणि शान्तियुते
जय जय हे मधुसूदन-कामिनि, आदिलक्ष्मी सदा पालय माम्
- २) अयि कलि-कल्मषनाशिनि कामिनि, वैदिक-रूपिणि वेदमये
क्षीरसमुद्भवमंगलरूपिणि मंत्र-निवासिनि मंत्रनुते
मंगलदायिनि अम्बुजवासिनि, देवगणाश्रित-पादयुते
जय जय हे मधुसूदन-कामिनि, धान्यलक्ष्मी सदा पालय माम्
- ३) जय वरवर्णिनि वैष्णवि भार्गवि, मन्त्रस्वरूपिणि मन्त्रमये
सुरगण-पूजित-शीघ्र-फल-प्रद-ज्ञान-विकासिनि शास्त्रनुते
भवभय हारिणि पापविमोचनि, साधुजनाश्रितपादयुते
जय जय हे मधुसूदन-कामिनि, धैर्यलक्ष्मी सदा पालय माम्
- ४) जय जय दुर्गतिनाशिनि कामिनि, सर्व-फल-प्रद शास्त्रमये
रथगजतुरग-पदाति-समावृत-परिजन-मण्डित-लोकनुते
हरिहर-ब्रह्म-सुपूजित-सेवित-ताप-निवारिणि पादयुते
जय जय हे मधुसूदन-कामिनि, गजलक्ष्मी सदा पालय माम्
- ५) अयि खगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि, राम-विवर्धिनि ज्ञानमये
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणि स्वरसप्त-भूषित-गाननुते
सकलसुरासुर-देव मुनीश्वर-मानव-वन्दित-पादयुते
जय जय हे मधुसूदन कामिनि, सन्तानलक्ष्मी सदा पालय माम्

- ६) जय कमलासनी-सद्गतिदायिनि ज्ञान-विकासिनि गानमये
 अनुदिनमर्चित-कुंकुम-चंदन-भूषित-वासित-वाद्यनुते
 कनक-धरा-स्तुति-वैभव-वन्दित-शंकर देशिक-मान्यपदे
 जय जय हे मधुसूदन-कामिनि, विजयलक्ष्मी सदा पालय माम्
- ७) प्रणत-सुरेश्वरि भारति भार्गवि, शोक विनाशिनि रत्नमये
 मणिमय-भूषित-कर्ण-विभूषण-शान्ति-समावृत-हास्यमुखे
 नवनिधि-दायिनि कलिमल हारिणि, कामित-फल-प्रद-हस्तयुते
 जय जय हे मधुसूदन-कामिनि, विद्यालक्ष्मी सदा पालय माम्
- ८) धिमि धिमि धिन्धिम धिन्धिम धिन्धिम दुन्दुभिनादसुपूर्णमये
 धुम धुम धुंधुम धुंधुम धुंधुम शंखनिनादसुवाद्यनुते
 वेद-पुराणेतिहास-सुपूजित-वैदिक-मार्ग प्रदर्शयुते
 जय जय हे मधुसूदन-कामिनि, धनलक्ष्मी सदा पालय माम्

श्रीशिव-पञ्चाक्षर-स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय महेश्वराय ।

नित्याय शुद्धाय दिगंबराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥१॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥४॥

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय ।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

श्री देवीस्तोत्रम्

अम्बा शाम्भवि चन्द्रमौलिखला अपर्णा उमा पार्वती
काली हेमवती शिवा त्रिनयना कात्यायनी भैरवी
सावित्री नवयौवना शुभकरी साम्राज्य-लक्ष्मी-प्रदा
चिद्रूपा परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ।

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्र-मन्त्रम्
न जानामि पूजां न च न्यास-योगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ।

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ।

श्री गणेश स्तुति

हेमजा-सुतम् भजे गणेश-मीश नंदनम् । एकदंत वक्रतुंड नाग-यज्ञ-सूत्रकम् ।	
रक्त-गात्र धूम्र नेत्र शुभ्र-वस्त्र-मंडितम् ।	(२)
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोऽस्तुते गजाननम्	(४)
आऽ आऽ आऽ	
पाशपाणि, चक्रपाणि मूषकाधिरोहिणम् । अग्निकोटी सूर्यज्योति वज्रकोटी निर्मलम् । चित्रमाळ भक्तिजाल भालचंद्र शोभितम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोऽस्तुते गजाननम्	
आऽ आऽ आऽ ...	(४)
भूत भाव्य हव्य काव्य भृगुभाग वर्जितम् । दिव्यवाहिनी काल जाल लोकपाल वंदितम् । पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषम् पुरातनम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोऽस्तुते गजाननम्	
आऽ आऽ आऽ ...	(४)
विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्	(२)
चतुर्मुखम् चतुर्भुजम् सेवितुम् चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोऽस्तुते गजाननम्	
आऽ आऽ आऽ ...	(४)

ॐकार प्रधान रूप गणेशाचे

ॐकार प्रधान, रूप गणेशाचे । जे तिन्ही देवांचे, जन्मस्थान	॥१॥
अकार तो ब्रह्मा, उकार तो विष्णु । मकार महेश, जाणियेला	॥१॥
ऐसे तिन्ही देव जेथोनी उत्पन्न । तो हा गजानन मायबाप	॥२॥
तुका म्हणे, ऐसी आहे वेदवाणी । पहावी पुराणी व्यासांचीया	॥३॥
अच्युता, अनंता, श्रीधरा, माधवा, देवा आदिदेवा पांडुरंगा	॥४॥
कृष्णा, विष्णु, हरी गोविंदा, वामना । तुम्ही नारायणा नामधारी	॥५॥
मुकुंदा, मुरारी , प्रद्युम्ना, केशवा । नाम सदाशिवा शांत रूपा	॥६॥
रूपातीत हरी दाखवी सगुण । निरंतर ध्यान करी नाम	॥७॥

श्री विष्णु स्तुति

- १) शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्
२) यं ब्रह्मावरूणेंद्ररुद्रमरुतः स्तुवन्ति दिव्यै स्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायति यं सामगाः ।
- ३) ध्यानवस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुराः सुरगणा देवाय तस्मै नमः ।

श्री शिव स्तुति

- १) प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशम्
गंगाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्
खट्वाङ्ग-शूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्
२) आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्
३) कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारम् भुजगेन्द्र हारं
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि
४) नमामि शंकर भजामि शंकर उमामहेश्वर नमो नमो
उमा महेश्वर गौरीमनोहर नमामि शंकर नमो नमो
गौरी मनोहर गंगा जटाधर भजामि शंकर नमो नमो
त्वमेव साक्षात् शंकर पार्वति निर्मल माता तव शरणम्
गंगा जटाधर अर्धनारीश्वर नमामि शंकर नमो नमो
त्वमेव साक्षात्.....
अर्धनारीश्वर नीलकण्ठेश्वर भजामि शंकर नमो नमो
त्वमेव साक्षात्.....
नीलकण्ठेश्वर ओंकारेश्वर नमामि शंकर नमो नमो
त्वमेव साक्षात्.....

श्री कृष्ण स्तुति

- १) कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे नवमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ॥
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावली ।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥
- २) हरे मुरारे मधुकैटभारे, गोपाल गोविन्द मुकुन्द शौरै ॥
अनंता श्रीधरा गोविंदा केशवा, मुकुंदा माधवा नारायणा ॥
देवकीतनया गोपिकारमणा, भक्त- उद्धारणा त्रिविक्रमा ॥
- ३) वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्,
देवकी-परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्
- ४) राधा कृष्ण गोविन्द मुरारे, मुरलीधर गोवर्धनधारे ।
श्रीधर शुभकर शान्त मुरारे, करूणासागर कुंज बिहारे ।
- ५) कृष्णं वन्दे नन्दकुमारं, राधावल्लभनवनीतचोरं
मुरली-मनोहर-मोहनरूपं, गोपीजनप्रियनन्दकिशोरम् ॥
- ६) हरि बोल, हरि बोल, हरि हरि बोल (२)
मुकुंद माधव, गोविंद बोल (२)
केशव माधव, गोविंद बोल (२)
मुकुंद माधव, गोविंद बोल (२)

गोविंद जय जय गोपाल जय जय, राधा रमण हरि गोविंद जय जय
राधा की जय जय मोहन की जय, जय
जयमुरली मनोहर शाम की जय जय गोविंद जय जय

श्याम की जय जय मुरारी की जय जय,
बन्सीधर गिरधारी की जय जय, गोविंद जय जय....
यमुना तट पर बन्सी बजाये,
गोपियों संग रास रचाये गोविंद जय जय

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे,
हे नाथ नारायण वासुदेवा ।

श्री राम स्तुति

- १) नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं, सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारूचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।
नमामि रामं रघुवंशनाथं, नमामि रामं श्रुतिगीतनाथम्
ब्रह्मस्वरूपं खलु रामचन्द्रम्, नमामि नौमि प्रभुरामचन्द्रम्
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथं
कारुण्यरूपं करुणाकरं, तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये
- २) रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः
श्रीराम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने
- ३) रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहम् ।
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥
- ४) रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम
ईश्वर अह्ला तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान्
- ५) जय रघुनन्दन असुरनिकन्दन, जय सियाराम, जय सियाराम
घट घटवासी अचल अविनाशी, सीता पति सुखधाम
जय सियाराम जय सियाराम

श्री हनुमान स्तुति

वन्दे संतं श्रीहनुमंतं, रामदासममलं बलवंतं	वन्दे.....
रामकथामृतमधूनि पिबन्तं परमप्रेमभरेण नटंतं	वन्दे.....
प्रेमरूढगल - मश्रुवहन्तं पुलकांकितवपुषा विलसंतं	वन्दे.....
सर्व राममयं पश्यन्तं, राम राम इति सदा जपंतं	वन्दे.....
सद्भक्तिपथं समुपदिशंतं विठ्ठलपंथं प्रति सुखयंतं ।	

श्री देवी स्तुति

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वंदिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥
लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वंतरिश्चंद्रमा ।
गावः कामदुधा सुरेश्वरंगजो रंभादिदेवांगना ॥
अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोऽमृतं चांबुधेः ।
रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्यात् सदा मंगलम् ॥
गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा ।
कावेरी शरयू महेंद्रतनया चर्मण्वती वेदिका ॥
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता या गण्डकी ।
पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥

गुरु स्तुति

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं ।
द्वन्दातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीःसाक्षिभूतं ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरुं तं नमामि ॥
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम् ।
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
ध्यानमूलं गुरुमूर्तिः पूजामूलं गुरुः पदम् ।
मंत्रमूलं गुरु वाक्यं मोक्षमूलं गुरुः कृपा ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

श्रीगणेशपञ्चरत्नम्

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं,
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं,
नताशुभानाशकं नमामि तं विनायकम् ॥१॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं,
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं,
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥२॥

समस्तलोकशंकरं निरस्तदैत्यकुञ्जरं,
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं,
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥३॥

अकिंचनार्तिमार्जनं चिरंतनोक्तिभाजनं,
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणं ।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनंजयादिभूषणं,
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् ॥४॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम्,
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां,
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि संततम् ॥५॥

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं,
प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ॥
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां,
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात् ॥६॥

श्री हनुमान चालिसा

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जय कपीश तिहूँलोक उजागर ।
रामदूत अतुलित बलधामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ।
महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ।
कंचन बरण विराज सुबेशा । कानन कुण्डल कुंचित केशा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । कांधे मूंज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केशरी नन्दन । तेज प्रताप महा जग - वंदन ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबै को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया । रामलखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्मरूपधरि सियहिं दिखावा । विकट रूपधरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे ॥
लाय संजीवन लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहिसम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं । अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा । नारद शारद सहित अहीशा ॥
यम कुबेर दिक्पाल जहांते । कवि केविद कहि सकैं कहांते ॥
तुम उपकार सुग्रीवही कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना । लंकेश्वर भय सब जग जाना ॥
युग सहस्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत् के जेते सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुवारे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिन पैसारे ॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारौ आपै । तीनों लोक हांकते कापै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवैं । महावीर जब नाम सुनावैं ।
नाशै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
संकट से हनुमान छुड़ावे । मन क्रम बचन ध्यान जो लावैं ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ।
चारहुँ ओर प्रताप तुम्हारा । है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥

साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥
 अष्टसिद्धि नव निधि के दाता । अस वर दीन जानकी माता ॥
 राम रसायन तुम्हारे पासा । सदा रहौ रघुपति के दासा ॥
 तुम्हरे भजन राम को भावै । जन्म जन्म के दुःख बिसरावै ॥
 अन्त काल रघुपति पुर जाई । जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
 और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
 संकट हटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बल बीरा ॥
 जै जै जै हनुमान गोसांई । कृपा करहु गुरुदेव की नांई ॥
 यह शत बार पाठ कर जोई । छूटहिं बन्दि महासुख होई ॥
 जो यह पढ़ै हनुमान चालिसा । होय सिद्धी साखी गौरीसा ॥
 तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महं डेरा ॥
 दोहा - पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
 रामलखन सीता सहित, हृदय बसहु सुरभूप ॥

विवाह उत्सवों के लिए भगवत् स्तुति

स्वस्ति श्रीगणनायको, गजमुखो मोरेश्वरः सिद्धिदः ।
 बल्लाळस्तुं विनायकं मढे चिंतामणिस्थेश्वरे ॥
 लेण्याद्रौ गिरिजात्मकः सुवरदो विघ्नेश्वरश्चोझरे ।
 ग्रामे रांजणसंस्थितो गणपतिः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥१॥
 कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम् ।
 नासाग्रे नवमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।
 सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावली ।
 गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते कुर्यात् सदा मंगलम् ॥२॥
 रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
 रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ॥
 रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहम् ।
 रामे चित्तलयः सदा भवतु मे कुर्यात् सदा मंगलम् ॥३॥
 यं ब्रह्मावरूणेंद्रमरूतः स्तुवन्ति दिव्यै स्तवैः ।
 वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ॥
 ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्चन्ति योगिनो ।
 यस्यान्तं न विदुः सुराः सुरगणा कुर्यात् सदा मंगलम् ॥४॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
 या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ॥
 या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वंदिता ।
 सा मां पातु सरस्वती भगवती कुर्यात् सदा मंगलम् ॥५॥
 लक्ष्मी कौस्तुभपारिजातसुरा धन्वंतरिश्चंद्रमा
 गावः कामदुघा सुरेश्वरगजो रंभादिदेवांगनाः ॥
 अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोऽमृतं चांबुधेः ।
 रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्यात् सदा मंगलम् ॥६॥
 गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा ।
 कावेरी शरयू महेद्रतनया चर्मण्वती वेदिका ॥
 क्षिप्रा वेत्रवती महेंसुरनदी खयाता ज्या गण्डकी ।
 पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥७॥
 शुभलग्न सावधान ।

आत्माष्टकम्

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं
 न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
 न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायुः
 चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥१॥
 न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायुः
 न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोशः ।
 न वाक् पाणिपादं न चोपस्थपायू
 चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥२॥
 न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
 मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।
 न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
 चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥३॥
 न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
 न मन्त्रौ न तीर्थं न वेदा य यज्ञाः ।
 अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
 चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥४॥

न मे मृत्युशङ्का न मे जातिभेदः
 पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।
 न बन्धुर्न मित्रं गुरुनैव शिष्यः
 चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥५॥
 अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
 विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
 सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः
 चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥६॥

अर्गला स्तोत्रं

ॐ नमश्चण्डिकायै ॐ नमश्चण्डिकायै
 जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी
 दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते
 जय त्वं देवि चामुंडे, जय भूतार्तिहारिणि
 जय सर्वगते देवि, कालरात्रि नमोऽस्तुते
 महिषासुरनिर्णाशि, भक्तानां सुखदे नमः
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि
 रक्तबीजवधे देवि, चंडमुंडविनाशिनि, रूपं देहि....
 निर्मला माँ हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि, रूपं देहि....
 देहि सौभाग्यमारोग्यं, देहि देवि परं सुखम् रूपं देहि....
 विधेहि देवि कल्याणं, विधेहि विपुलां श्रियम् रूपं देहि....
 अचिन्त्यरूपचरिते, सर्व शत्रुविनाशिनि, रूपं देहि....
 विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु, रूपं देहि....

गजाननं भूतगणादि सेवितम्

गजाननं भूतगणादिसेवितं, कपित्थजंबूफलसारभक्षिणं
 उमासुतं शोकविनाशकारणं, नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ।
 एकदन्तं महाकायं लंबोदरं गजाननं
 विघ्ननाशकं वरदं हेरम्बं प्रणमाम्यहं
 वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ
 निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा
 एकदन्तं महाकायम् लम्बोदरं गजाननम्
 विघ्ननाशकम् वरदम् देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहं ।

अयि गिरिनंदिनि

अयि गिरिनंदिनि नंदित-मेदिनि, विश्व-विनोदिनि नंदनुते
गिरिवर-विंध्य-शिरोधि-निवासिनि विष्णु-विलासिनि विष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकंठ-कुटुंबिनि भूरी-कुटुंबिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१॥ (३)

सुरवर-वर्षिणि दुर्धरधर्शिणि दुर्मुख-मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवन-पोषिणि शंकरतोषिणि किल्मिष-मोषिणि घोषरते ।
दनुज-निरोषिणि क्षिति-सुत-रोषिणि दुर्मुद-शोषिणि सिंधुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२॥ (३)

अयि शत-खंड-विखंडित-रुंड-वितुंडित-शुंड-गजाधिपते
रिपु-गज-गंड-विदारण-चंड-पराक्रम-शौंड-मृगाधिपते ।
निज-भुजदंड-निपातित-चंड-विभातित-मुंड-भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥३॥ (३)

धनुरनुसंग-रण-क्षण-संग-परिस्फुरदंग-नटत्कटके
कनक-पिषंग-पुषत्क-निषंग-रसद्-भट-शृंगहतावटुके ।
कृत-चतुरंगबल-क्षितिरंग-घटद्-बहुरंग-रटद् बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥४॥ (३)

जय-जय-जप्य-जय जय-शब्द-पर-स्तुति-तत्पर-विश्वनुते
झन-झन-झिंझित-झिंकृत-नूपुर-सिंजित-मोहित-भूतपते ।
नटित-नटार्थ-नटी-नट-नायक-नाटित-नाट्य-सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥५॥ (३)

अयि सुमनस्-सुमनस्-सुमनस्-सुमनस्-सुमनोहर-कांन्तियुते
श्रित्-रजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्र-वृते ।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥६॥ (३)

सहित-महार्णव-मल्ल-मतल्लिक-मल्लित-सल्लिक-मल्लरते
विरचित-वल्लिक-पल्लिक-मल्लिक-भिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते।
सितकृत-फुल्ल-समुल्लसितारूण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यक्पर्दिनि शैलसुते ॥७॥ (३)

कमल-दलामल-कोमल-कांति-कला-कलिकामल-भाललते
सकल-विलास-कला-निलय-क्रम-केलि-चलत्-कलहंस कुले ।
अलि-कुल-संकुल-कुवलय-मंडल-मौलि-मिलद्-बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यक्पर्दिनि शैलसुते ॥८॥ (३)

ॐकारस्वरूपा

ॐकार स्वरूपा..... ३

तुज नमो.... ३

ॐकार स्वरूपा सदगुरू समर्था, २

अनाथांच्या नाथा तुज नमो...३

नमो मायबापा, गुरु कृपाघना

तोडिया बन्धना माया मोहा

मोहजाल माझे, कोण निरशील

तुजवीण दयाळा, सदगुरुराया

तुज नमो....३ ॐकार स्वरूपा..... ॥१॥

सदगुरुराया माझा, आनन्द सागर

त्रैलोक्या आधार, गुरुराव ३

गुरुराव स्वामी, असे स्वयं-प्रकाश.... आ आ आ २

ज्यापुढे उदास, चन्द्र रवी ३

रवी, शशी, अग्नी, नेणति ज्या रूपा

स्वप्रकाशरूपा, नेणे वेद ३

तुज नमो....५

॥२॥

एका जनार्दनी, गुरु परब्रह्म

तयाचे पै नाम, सदा मुखी

तुज नमो ५ ॐ कार स्वरूपा

अन्यथा शरणं

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम
हृदयं समर्पयामि, प्राणं समर्पयामि
तव पादपद्मे मातः सर्वम् समर्पयामि

त्वमेव साक्षात् हरि प्रिया, त्वमेव मावागेश्वरी
महादुर्गा महाकाली महामाया महेश्वरी
भाग्यं समर्पयामि, कर्म समर्पयामि, तव.....

स्वयं साध्यं स्वयं सिद्धि, स्वयं सिद्धा स्वयं प्रभा
सुगुण रत्ना सुकृत कृता, सुमती गंगासमोज्वला
मानं समर्पयामि, गानं समर्पयामि, तव.....

अनिर्वचनीय आनंदी, सुखकरणी दुःख हारिणी
योग संस्थापनार्थाय, अविरल विश्व विहारिणी
संघं समर्पयामि पुण्यं समर्पयामि, तव.....

तिमिरावृता दिशा हीना, आत्मस्य पापनाशिनी
बहुजनहिताय वाणी तव, शाश्वत-सत्य-प्रकाशिनी
आद्यं समर्पयामि, अन्तं समर्पयामि, तव.....

ओ लाल मेरी

ओ लाल मेरी पत रखियो बला झूले लालण
सिंदडी दा, सेवर दा, सखी शाबाज कलंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दम दम दे अंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दा पहला नंबर

चार चराग तेरे बरण हमेशा (२)

पंजवां मैं बारण आई, बला झूले लालण (२)

हिन्द सिंध पीरा तेरी, नौबत बाजे (२)

नाल बजे घड़ीयाल, बला झूले लालण

हर दम पीरा तेरी, खैर होवे (२)

नाम अली बेड़ा पार लगा झूले लालण

आवाज उठायेंगे

आवाज उठायेंगे, हम साज बजायेंगे (२)

हे माता महान् अपनी

यह गीत सुनायेंगे, ल ल ला, ल ल ला,

चैतन्य बहे जहाँ तक माँ,

हैं रूप तुम्हारा ही (२)

हैं निराकार फिर भी,

हैं स्वरूप तुम्हारा ही (२)

ये शक्ति रूप तुम्हारा,

हम सबको दिखायेंगे

हे माता महान् अपनी....., ल ल ला, ल ल ला...

अनमोल खजाना बन गया

दिल तेरी मोहब्बत से (२)

परिवर्तित हर्षित बन गया

यह तेरी उल्फत से (२)

प्रतिभा की तेरी बातें,

हम सबको सुनायेंगे

हे माता महान् अपनी.....ल ल ला, ल ल ला...

अबीर गुलाल

अबीर गुलाल उधळीत रंग (३)

नाथा घरी नाचे माझा, सखा पांडुरंग ॥

उंबरठ्याशी कैसे शिवू, आम्ही जातिहीन, रूप तुझे कैसे पाहू,

दास आम्ही दीन..... (२)

वाळवंटी गावू आम्ही, वाळवंटी नाचू ... (२)

चन्द्रभागेच्या पाण्यानं, अंग अंग न्हाऊ.... (२)

निर्मलाचे / विठ्ठलाचे नाम घेऊ, होवूनी निःसंग ॥ नाथा घरी नाचे..

आषाढी कार्तिकी, भक्तजन येती..... (२)

पंढरीच्या वाळवंटी, संत गोळा होती.... (२)

चोखा म्हणे नाम घेता, भक्त होती दंग । नाथा घरी नाचे...

आई सिंह पे सवार

आई सिंह पे सवार, मैया ओढ़े चुनरी (कोरस)

ओढ़े चुनरी ओ मैया ओढ़े चुनरी

आई सिंह से सवार, मैया ओढ़े चुनरी

आदि शक्ति हे मात भवानी, जय दुर्गे महाकाली

बड़े बड़े राक्षस संहारे, रणचण्डी मतवाली

करती भक्तों का उध्दार, मैया ओढ़े चुनरी

महिषासुर सा महाबलि देवों को खूब सताया

छीन लिया इन्द्रासन और देवों को मार भगाया

करी देवों ने पुकार, मैया रक्षा तू करी....

दुर्गा का अवतार लिया, झट महिषासुर संहारी

दूर किया देवों का संकट लीला तेरी न्यारी

किया देवों का उद्धार, मैया रक्षा तू करी...

निर्मल माता मात भवानी, आदिशक्ति श्री कुण्डलिनी

जग अंधियारा मिटाने वाली, मन में ज्योति जगाने वाली

तेरे द्वार पे आया मैया दर्शन पाने को....मैया पार तू करी

आँखें बंद करूँ या खोलूँ

आँखे बंद करूँ या खोलूँ, श्री माँ दर्शन दे देना

मैं तो हूँ माँ बालक तेरा, तू मेरी माता है

तेरे हाथ में सारी दुनिया, मेरे हाथ में क्या है

तुझको देखूँ जिसमें ऐसा, दर्पण दे देना,

आँखे बंद.....

मेरे अन्दर माँ की लहरें, रिश्ता है सदियों का

जैसे इक नाता होता है, सागर से नदियों का

करूँ साधना तेरी केवल, साधन दे देना

आँखे बंद.....

मेरी माँग बड़ी साधारण, मन में आती रहियो

हर एक सांस के पीछे, अपनी झलक दिखाती रहियो

नाम तेरा ले आखिर तक, वो धड़कन दे देना

आँखे बंद.....

अपने हृदय के

- अपने हृदय के सारे द्वार खोल,
प्रेमदायिनी माँ की हो कृपा अनमोल
अपने हृदय के सारे द्वार खोल (कोरस)
प्रेमदायिनी माँ की हो कृपा अनमोल (३)
निर्मल माँ को जिसने जाना,
उसका ही हित होने वाला (३)
जीवन में अमृत रस घोल,
प्रेम दायिनी माँ की हो कृपा अनमोल
जाग बाँवरे खुद को जान (२)
अपनी ही शक्ति पहचान
जागृत करके वो पथ खोल,
निरानंद निरानंद झरे अनमोल (२)
सोई आत्मा में स्वानंद जागा
ब्रह्मानंद का राग समाया (२)
लीलानंद में जीवन तोल
निरानंद निरानंद झरे अनमोल (२)

आम्ही बी घडलो

- आम्ही - बी घडलो, तुम्ही - बी घडाना (४ कोरस)
मातार्जींच्या संगे, मुले - बी घडली (२)
मुले बी घडली, चैतन्यात न्हाली (२)
सहजयोगासंगे, बाधा - बी घडली (२)
बाधा बी घडली, प्रकाशमय झाली (२)
सहजयोगा संगे, राग - बी घडला (२)
राग बी घडला अनुराग झाला (२)
मातार्जींच्या संगे, मी ही बी घडलो (२)
मीही बी घडलो, महायोगी झालो (२)
मातार्जींच्यासंगे, धर्म बी घडला (२)
धर्म बी घडला, विश्वधर्म झाला (२)
मातार्जींच्या संगे, जन बी घडले (२)
जन बी घडले, निर्मलची झाले (२)

अपने तो तीनों जहाँ

अपने तो तीनों जहाँ, आपके चरणों में माँ
अपने तो सारे खुदा, आप ही बस आप माँ
हे परमेश्वरी योगेश्वरी, ब्रह्म स्वरूपा निर्मल माँ
योगक्षेम और मोक्ष, सभी कुछ आदि की महामाया..

हे महेश्वरी सुरेश्वरी, ओंकार स्वरूपणी निर्मल माँ
निरानन्द की निर्मल चदरी, आपने पहनायी माँ....
हे महामाया भगवती, विराट स्वरूपणी निर्मल माँ
तेरी ही महाशक्ति से, पल्लवित सारा जहाँ...

हे परमशिवे महाकल्याणी, वैकुण्ठवासिनी निर्मल माँ
आप ही के चरणोंसे, बहती चैतन्य की अमृत गंगा...
हे सर्वेश्वरी कल्केश्वरी, आदिशक्ति निर्मल माँ
आप ही निर्णय करेंगी, हे अनन्ता निर्मल माँ.....

अपने दिल में

अपने दिल में सहज को बसाया करो (कोरस)
रचयिता की तुम रचना रचाया करो
अपने दिल में सहज को बसाया करो
पहले ध्यान धरो, चित्त काबू करो
कुण्डलिनी तुम अपनी जगाया करो
ठंड चैतन्य स्वयम् तुम बहाया करो
अपने दिल में सहज को बसाया करो
मूलाधार से खिली सहस्रार पे खुली
निर्मलता से सुषुम्ना में बहती चली
आदिशक्ति को ऐसे उभारा करो
अपने दिल में सहज को बसाया करो
शुद्ध इच्छा करो, साक्षी रूप धरो
भवसागर मोह का ऐसे पार करो
निरानंद का क्षितिज तुम पाया करो
अपने दिल में सहज को बसाया करो
आए सन्त कई उलझन बढ़ती गई
समझ पाये कोई ना प्रभु या साँई

सच्चे साँई को सहज में पाया करो
अपने दिल में सहज को बसाया करो

आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो

- आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो (२)
चैतन्याच्या संगे आम्ही अमृतात न्हालो (२)
जाणीव ती जीवा कधी नाही झाली (२)
शक्ती कुण्डलिनी शरीर व्यापिली (२)
तुझ्या चरणासी येता जागृतीस आलो
आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो (२)
गणेश तो आम्हा ज्ञानार्जन देई (२)
माता निर्मला ही विश्वाची रे आई (२)
अज्ञान हे दूर होता अनुभवा आलो
आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो (२)
ब्रह्मदेव सांगे रे विष्णूच्या संगे (२)
शक्तिवान आम्ही भगवती अंगे (२)
दत्तगुरू नाम घेता अनाहती आलो
आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो (२)
शिवशक्ती राम सीता भक्त हनुमंत (२)
मातेच्या या ध्यानी आम्ही शोभिवंत (२)
भावामध्ये त्यांच्या येता सहस्रारी आलो
आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो (२)
कृष्ण राधा येशू मेरी आम्हा सांगे (२)
नाम घ्या निर्मल आम्ही तुम्हा संगे (२)
शरण ते त्यांना जाता तुझ्या भेटी आलो
आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो (२)
आत्मशिव ज्योति दिसे तुझ्या द्वारी
चैतन्याचे तेज अंतरी बाहेरी
सहस्रार तू छेदी माते स्वरूपी मी आलो
आम्ही माताजींच्या चरणासी आलो

आई आज दिवाली

आई आई आई, आज दिवाली है आई,
ऐसे शुभ अवसर पर, हम पूजें महालक्ष्मी
सब देव देवता आपही को पूजें, निर्मल माँ, ओ मैया
निर्मल माँ, ओ छिंदवाड़ावाली, महालक्ष्मी माताजी

हे महालक्ष्मी माँ गौरी, तू अपनी आपही जौहरी
तेरी कीमत तू ही जाने, तू बुरा भला पहचाने
ये कहते दिन और रातें, तेरी लिखी ना जाए बातें
कोई माने या ना माने, हम भक्त तेरे दिवाने ... (२)
तेरे पाँव, सारी दुनिया है पखारती

हे कृपाशाली महालक्ष्मी, हे भाग्यदाती भगवती
मेरी सुनना ये विनंती, तेरा चोला रंग बसंती
हे दुःख भंजन सुख दाती, हमें सुख देना दिन राती
जो तेरी महिमा गाये, मुँह मांगी मुरादें पाये ... (२)
हर आँख, तेरी ओर निहारती

हे महाकाली महाशक्ति, हमें दे दे ऐसी भक्ति
हे जग जननी महामाया, है तू ही धूप और छाया
तू अमृतजल अविनाशी, तू अनमिट पूरणमासी
सब करके दूर अंधेरे, हमें बखशो नये सवेरे ... (२)
तू तो, भक्तों की बिगड़ी सवारती

हे धनदाती धनलक्ष्मी, हे दयावान राजलक्ष्मी
हे विष्णुप्रिया वैष्णवी, हे सहजयोग दायिनी
ये सूरज चांद सितारे, सब तेरे ही गुण गाते
तू शांतिरूपी शांतिनी, हमें देना विश्वशांती ... (२)
तू तो, चैतन्य की गंगा बहाती

अर्पित करें

अर्पित करें सुमन हृदय के, करें अर्चना श्री आदि माँ की,
शीश झुकाए किया जो समर्पण, बहे चैतन्य मिले निर्मलानन्द ॥

करते ही शुद्ध इच्छा हृदय में, बहे अविरल प्रेम निश्चल क्षण में,
मिले यह सुखद परम अनुभूति, कि माँ ही विद्यमान है कण कण में ॥

सदैव माँ से करें प्रार्थना, माँ तेरी कृपा है जब इतनी
फैले विश्व में धर्म ये निर्मल, माध्यम बने सभी हम जिसका ॥

है अद्भुत दिया ज्ञान श्री माँ ने, योग सहज सिखलाया,
मिटा अहम्, अहंकार वा सारा, माँ की है अनुकम्पा ॥

निर्मला माँ की कृपा है इतनी, करें हम बस मिल अनन्य भक्ति,
है संतुलन इच्छा और क्रिया, पात्र बने अनंत आशीष का ॥

ये ज्यों करी प्रार्थना माँ से, बरसे माँ तेरी कृपा बरसे,
जागे कुण्डलीनी खुले सभी चक्र, निर्विचार होते क्षण भर में ॥

ॐ गं गणपतये नमो नमः

ॐ गं गणपतये नमो नमः प्रभो
सुखशांती दाता, हे ॐकार कमल परशूधारा
तूच विश्वत्राता, ॐ गं गणपतये नमः

उठा उठा महागणपती, गण उभे कराया आरती
गंध धूप सुगंधी फूले, दूर्वाकुर आम्ही रेखीची
मंचकी बसाया चरण क्षकितोया,
या आता अनंता, ॐ गं गणपतये नमो नमः

महाकाय तूच वक्रतुंडा, कोटी सूर्य तेज समप्रचंडा
देयो प्रभा गणनायका, विनवितो सिद्धीदायका
तूच हे कृपाळा, दे दया दयाळा
उठा विश्वनाथा, ॐ गं गणपतये नमो नमः

जन्मो जन्मी तुझिया प्रती, गणाधीशा लागो ही मती
गौरीसुता तुझियामुळे, मिळो जगा सदा सद्गती
मोर्देश्वर हे करूणा करा, हे रिद्धि सिद्धि दाता
ॐ गं गणपतये नमो नमः

आया हूँ दरबार तुम्हारे

आया हूँ दरबार तुम्हारे (कोरस)
बहुत दिनन का भूला भटका
ले-ले श्री माँ चरण तिहारे

निर्मल नाम पतित पावन है
चहुँदिश गावत सब सहजन है,
इस अमृत से पावन होने
ले-ले श्री माँ चरण तिहारे

धन नहीं माँगू, माँगू न सत्ता
ढूँढे पथिक तेरे प्यार का रस्ता
निर्मल छाँव की ठण्डी फुहार में,
ले-ले श्री माँ चरण तिहारे

भाग बड़े तुमसे मन लागा
अन्तर आत्मा तब से जागा
सहजी कहें सुन अर्ज हमारे
ले ले श्री माँ शरण तिहारे...

अर्पण ये तनमन

अर्पण ये तनमन श्री माँ तेरे चरणन
जन्मदिन ये तेरा करे तेरा अर्चन

अहोभाग्य सबका पधारी स्वयं माँ,
त्रिलोक की स्वामिनी ममता की प्रतिमा ।
आँखों में करुणा क्षमा दिल में भरकर,
प्रगटा है निर्गुण सगुण रूप लेकर ॥

हे आदिशक्ति करें तेरी भक्ति,
जाने स्वयं को तो मिल जाए मुक्ति ।
कृपा तेरी ही से सहज ज्ञान पाया,
अंधेरा ये मन का तुम्हीं ने मिटाया ॥

बना दो जगत को निर्मल रूप अपना,
हो पूरा हे माँ तेरे नैनों का सपना ।
सहज विश्व हो जाए सहजी हर इक जन,
खिलें फूल निर्मल महक जाए गुलशन ॥

ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे । - ॐ जय....

जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का,
स्वामी दुःख विनसे मन का ।

सुख संपत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का - ॐ जय....

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी,
स्वामी शरण गहूँ किसकी ।

तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी - ॐ जय....

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी,
स्वामी तुम अन्तर्यामी ।

पर -ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ - ॐ जय....

तुम करूणा के सागर, तुम पालन - कर्ता,
स्वामी तुम पालन कर्ता

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ - ॐ जय....

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,
स्वामी सबके प्राणपति,

किस विधि मिलूँ दयामय, तुम से मैं कुमति॥- ॐ जय....

दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे,
स्वामी तुम रक्षक मेरे

अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ - ॐ जय....

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,
स्वामी पाप हरो देवा ।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ - ॐ जय....

आयो जी आयो

आयो जी आयो, आयो जी आयो,
आज पावन दिवस आयो,

आज के दिन अवतरण हुआ माँ का
जग उजियारा छायो, आयो जी आज.....

ऋषि मुनि सब झूम के नाचे, देवन मंगल गायो...
माँ के मुख पर तेज है इतना, दर्शन पाने सब आयो...

माँ की आँखों में इतनी ममता, सबके मन हर्षायो...
माँ ने बाँटी इतनी खुशियाँ, सब जग आनन्द छायो...

माँ ने सबको पार किया है, सहज मार्ग बतलायो..
माँ ने सबको पार किया है, सहज मार्ग बतलायो...

माँ का जनमदिन सबको मुबारक, सब मिल मंगल गायो
हम सब मिलकर करते वन्दन, माँ अमृत बरसायो...

अंधकार से निकल

अंधकार से निकल के माता, अमर उजाले में आये (कोरस)
तेरी गोद में ज्ञान मिला, जो नश्वर जग न दे पाये

तीन लोक करते है माता, हृदय से सत्कार तेरा
शुद्ध ज्ञान की दाता माँ, सच्चा जीवन अब हम पाये

कुण्डलिनी देवी का रूप ले, देवलोक से है आई
महालक्ष्मी, सरस्वती, काली सब तेरी शक्ति माई
माँ भक्तो ने तेरी स्तुति गाई, हम सबने अमिट सुख पाये। तेरी गोद..

धन्य हुए सब जग के प्राणी, इस युग में तेरे आने से
पार हुए सहस्रों प्राणी, तेरे चरण कमल रज पाने से
माँ मिली शान्ति प्रकृति कण को, जहाँ से निकले तेरा साया। तेरी गोद..

अब सुध ले माँ अनाथ जीव की, जो तेरे आंचल में पड़ा हुआ
पैदा किया जिसे दो मानव ने, अंधकार में बड़ा हुआ
माँ आत्मज्ञान जिसे नहीं मिला, उसे तेरे भक्त ही अपनायें। तेरी गोद..

सम्पूर्ण समर्पण ले लो माँ, आगे पथ हमको दर्शाओ
सत्य कर्म दो सत्य वचन दो, निर्विचार कर हर्षाओ
चंचल चित्त को निश्चल कर दो, तेरी सेवा में आये ।

आदिगुरु दत्तात्रेय धर्माधारसत्त्वायः

आदिगुरु दत्तात्रेय धर्माधारसत्त्वायः
तेरी शरण हम आ गए माँ निर्मल हम तो
जन्म जन्म का फल पा गए
ना कोई ऊँचा ना कोई नीचा, निर्मल इस दरबार में
अंग प्रत्यंग विराट के हैं सब, निर्मल विद्या हम जान गए ।

पार किया है तेरी दया से, भव का गहरा सागर
अनुकम्पा से स्वयं को गए
विश्व स्व धर्म में आ गए

श्रद्धा सबूरी निरागसता, सत्वगुरु के भागए
निरंहकार से स्वर्ग समझ गए, तत्त्व गुरु का हम पा गए

आजा निर्मला माँ तेरा रस्ता मैं तक रहा

आजा निर्मला माँ तेरा रस्ता मैं तक रहा
रस्ता मैं तक रहा दिलमें तू आजा,
आजा, अम्बे मैया वास्ता है प्यार का

तू ही गुरूपद दात्री, तू ही मेरी माता
तू ही दत्त आदिगुरु, तू ही मेरा दाता
तू ही भव पार कराना निर्मला माँ

तू ही शिव स्वरूपा है, तू ही जगद्धाता
तू ही गुरु सदाशिव, तू ही है विधाता
तू ही मेरा मोक्ष सहारा, निर्मला माँ

एक गणपति एक ईसा

एक गणपति, एक ईसा, दोनों ने आदि माँ को ध्याया
अंतर क्या दोनों की शक्ति में, बोलो
एक गौरी के दुलारे, एक राधाजी के प्यारे

गणपति तो है मूलाधारी, ईसा है विश्वाधारी
गणेश अबोधिता की है सूरत, ईसा क्षमा की सूरत
एक बालक, एक राजा, दोनों ने अहंकार को त्यागा
अंतर क्या दोनों की कीर्ति में, बोलो
एक जागृती दिलाए, एक प्यार कराए

नरक के द्वार खड़े, लम्बोदर मर्यादाएं दिखाए
स्वर्ग का द्वार बने, खुद ईसा निर्मल हमको बनाए
एक शासक, एक पालक, दोनों ही निर्मल माँ के बालक
अंतर क्या दोनों की तृप्ति में, बोलो
एक नर्क छुड़ाए, एक स्वर्ग दिलाए

गणपति ने अवतार लिया, एक ईसा में खुदको समाया
स्वर्ग का मार्ग सहज दर्शाया, पुनरुत्थान दिलाया
एक आदि एक अंती, दोनों में है ओम की शक्ति
अंतर क्या दोनों की भक्ति में, बोलो
एक मातृ पुजारी, एक पितृ पुजारी
एक गौरी.. एक राधाजी

अल्लाह तेरो नाम

अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम,
सबको सन्मति दे भगवान

मांगो का सिंदूर ना छूटे
माँ बहनों की आस ना टूटे
देह बिना दाता भटके ना प्राण

ओ सारे जग के रखवाले,
निर्बल को बल देने वाले
बलवानों को दे दे ज्ञान

भर दे प्रेम भक्ति अन्तर में

भर दे, प्रेम भक्ति अन्तर में,
निर्मल माँ, निर्मल माँ
भर दे,

ऐसी भक्ति दे दे माँ,
जो मेरे अंग - अंग को रंग दे
रंग दिया था, जो मीरा को,
मुझ पर वो रंग डाल,
हे श्री मातृ कृपाल,
भर दे.....

ऐसी ज्योत जला दे माँ,
मन, तन, चित्त हो पूर्ण प्रकाशित
बढ़े प्रेम माँ तुझ चरणन में,
निरानंद हो पाँऊ
भर दे....

ऐसा ध्यान करा दे माँ,
पूर्ण कुण्डलिनी जग जाये,
पूर्ण ज्ञान हो, पूर्ण प्रेम हो,
परम गति को पाऊँ
भर दे.....

भवानी दयानी

भवानी दयानी, भवानी दयानी, महापाप हानी ,
महापाप हानी (कोरस)

सुरनर मुनि जनजानी, सकल बुद्ध ज्ञानी, भवानी दयानी ॥१॥ (२)

जग जननी जग जानी, महिषासुर मर्दिनी । (२)

ज्वालामुखी चंडी, अमरपद दानी, भवानी दयानी ॥२॥ (२)

भय काय तथा

भय काय तथा प्रभू ज्याचा रे	(४)
सर्व विसरली प्रभुमय झाली	(२)
पूर्ण जयाची वाचा रे	(२)
भय काय तथा प्रभू ज्याचा रे	॥१॥ (२)
जगत विचरे उपकारास्तव	(२)
परी नच जो जगताचा रे	(२)
भय काय तथा प्रभू ज्याचा रे	॥२॥
इति निर्धन परस्त्र ज्याचा	(२)
सर्व धनाचा साचा रे	(२)
भय काय तथा प्रभू ज्याचा रे	॥३॥
आधी व्याधी मरणावरती	(२)
पाय अशा पुरुषाचा रे	(२)
भय काय तथा प्रभू याचा रे	॥४॥

बैठे हरि राधा

बैठे हरि राधा संग
कुंज भवनो अपनो रंग
मोर मुकुट श्रवण कुण्डल
गले वैजयंती माल
मधुर मुरली अधर धरे
विहंसत भरी उर उमंग

ब्रह्म शोधिले ब्रह्मांड मिळाले

ब्रह्म शोधिले, ब्रह्मांड मिळाले आई, तुझिया धामी (कोरस)
जन्मोजन्माची पुण्याई आज आली माझिया कामी
आई तुझिया धामी (कोरस)

चित्तापरी मम जे जे दिधले, जिज्ञासेने ते शोधियले
अभाव मजला तीव्र भासता, दगडालाही मी पूजियले
गम्य अगम्य सर्वची कळले (२)
भरता पोकळी रिकामी, आई तुझिया धामी ॥१॥ (कोरस)

अनुभूतिने चैतन्याच्या, स्वहृदयी तुज मी साक्षियले
धर्म सत्वहीन, नश्वर आहे, देवाविण मज हे कळले
सत्य असत्य सर्वची कळले (२)
मजला अंतर्दामी, आई तुझिया धामी ॥२॥ (कोरस)

सुप्तातून मज जागृति येता, ध्यानातच मन स्थिरावले
उणेपण गेले अधिकही गेले, संतुलन हे मी आचरिले
यत्न - प्रयत्न निष्फळ ठरले (२)
विलोपले श्रीचरणी, आई तुझिया धामी ॥३॥ (कोरस)

तूच आदि तूच अनादि, तू ब्रह्मांड हे जाणियले
परिवर्तित मंगल जीवन हे, कृपेत तुझिया उभारियले
तव शक्तिने कल्पतरुला (२)
दे योगाचे पाणी, आई तुझिया धामी ॥४॥ (कोरस)

जन्मोजन्माची पुण्याई आज, आली माझिया कामी,
आई, तुझिया धामी (कोरस)
आई तुझिया धामी

भर दे

भर दे इतनी भक्ति माँ... मेरे अंग अंग में ।
जैसी राम के बजरंग में माँ, बजरंग में, बजरंग में.....

भर दे इतनी प्रीति माँ, जितना पानी सागर में (२)
कमी नहीं होगी तो भी, तनिक तेरे प्यार के आगर में,
प्यार के आगर में..... (२)

भीख तू इतनी दे दे माँ, मेरी मैली चादर में (२)
दर्पण हर पल देखूँ, तेरे सत्संग में, सत्संग में.....

भर दे हर इक बाग को माँ (२)
प्यार के फूलों कलियों से
महक तेरी ही आयेगी तब (२)
सड़कों से, गलियों से.....

लगन दे ऐसी, माताजी,
लगन दे ऐसी, माताजी जैसी राधा को श्याम से (२)
ऐसी श्रद्धा दे माताजी जैसी शबरी को राम से, श्री राम से...

ब्रज से आई

ब्रज से आई मस्ती में.... सहजी की ये टोली ।
कन्हैया के रूप में मैया से... खेलन रंगीन होली ।
अबीर गुलाल क्या लाल नीला ।
रंगों से है भरी झोली ।
ढोल मंजीरे पे झूमकर गोपियाँ बजाएं ताली ।
प्यार दुलार है रंग माँ का ।
है प्यारी प्यारी बोली ।
धानी रंग का घागरा । हरे रंग की चोली ।

बोलो आदिशक्ति

बोलो आदिशक्ति श्री माताजी श्री निर्मलादेवी की जय (२)
महालक्ष्मी महासरस्वती महाकाली की जय
महालक्ष्मी की जय, महासरस्वती की जय
महाकाली की जय

माँ भक्तिप्रिया, माँ निष्कामा (२)
है निर्गुण माँ, निष्पापा माँ
सारा ब्रह्मांड है जिसने रचा, निर्मल की जय
महालक्ष्मी.....

माँ निष्कला, माँ निर्मदा, श्री माताजी, निरंतरा (२)
ब्रह्मा विष्णु शिवशक्ति, माँ निर्मला की जय
महालक्ष्मी...

माँ निर्लेपा, निरंजना (२)
महादेवी माँ, हे महामना
सुखकर्ता माँ, दुःखहर्ता माँ कल्की की जय
महालक्ष्मी....

महामाया माँ, जगजननी माँ (२)
शुभकरनी माँ, दुःखहरनी माँ (२)
बोलो विश्वधारिणी सहजदायिनी माँ की जय
महालक्ष्मी.....

बढ़ते हैं जब जब पाप धरती पर

बढ़ते हैं जब जब पाप धरती पर, (कोरस)

पाप मिटाने आई माँ

एक हैं माँ पर नये नये

रूपों में दर्शन लाई माँ

माँ है एक, रूप अनेक (२)

बनके कन्हैया बन्सी बजैया,

प्रेम का राग सिखाया है (२)

बनके बुद्ध कभी शुद्ध किया मन,

जग को त्याग सिखाया है

कभी मुहम्मद बनके बसाया,

मक्का और मदीने को (२)

ईसा बनके छलनी किया,

माँ ने ही अपने सीने को (२)

नानक बनके कभी ज्ञान के,

दीप जलाने आई माँ,

एक है माँ.....

कभी कुरान तो कभी बाईबल,

कभी वेद, कभी गीता माँ (२)

कभी मरियम, कभी यशोदा,

कभी फातिमा, सीता माँ (२)

माँ के नाम की दे के दुहाई,

जो लोगों को लड़ाते हैं (२)

वो हैं बन्दे धर्म के अन्धे,

वो कभी बच नहीं पाते हैं

विश्व धर्म को स्थापित करने,

बीच हमारे आई माँ

एक हैं माँ.....

बघा आई आल्या

बघा आई आल्या या सहज मंदीरी (कोरस)
पांघरूनी अंगावरी शालू भरजरी
आईच्या या मंदीराला खांब सोनेरी
मोतीयांच्या लावल्यात आत झालरी
सोनीयाचा कळस हा दिसे ग भारी
पांघरूनी अंगावरी शालू भरजरी ॥११॥
बघा आई आल्या...

आई माझी कुंकु ल्याली कपाळी भारी
बिंदी बिजवर शोभे शोभली माळी
रूप दिसे आईचे हे कमला परी
पांघरूनी अंगावर शालू भरजरी ॥१२॥
बघा आई आल्या....

नेसवा गं आईला हा शालू भरजरी
पूजा करा आईची ही आपुल्या अंतरी
आई माझी प्रेमळ प्रेमळ भारी
पांघरूनी अंगावर शालू भरजरी ॥१३॥
बघा आई आल्या....

चला ग सयांनो चला करा ग घाई
नका करू उशिर घ्या पूजेला बाई
बसली ग आई माझी आसनावरी
पांघरूनी अंगावर शालू भरजरी ॥१४॥
बघा आई आल्या या सहज मंदीरी
पांघरूनी अंगावर शालू भरजरी
बघा आई आल्या....

चित्त सदा रहे माँ चरणन में

चित्त सदा रहे माँ चरणन में, करो प्रार्थना शुद्ध हृदय से
ध्यान स्वतः हो जाएगा ।

देव, असुर, मानव, त्रिलोक, त्रिपुर, किया सबका माँ ने ही सृजन
भ्रमित न हो तू माया की मृगतृष्णा में, थाम ले श्री माँ का प्रेमांचल
सर्व त्रिताप नाश हो जाएगा, पार स्वयं हो जाएगा ।
ध्यान स्वतः हो जाएगा ।

कर्मकाण्ड न योग तप, न तीर्थ यज्ञ कुछ काम आए ।
जो पूजे माँ को शुद्ध हृदय से, परम पद पाएगा, पाएगा ।
ध्यान स्वतः हो जाएगा ।

शुद्ध ज्ञान मांगो श्री माँ से, चित्त समर्पित श्री चरणों में
जो करे प्रकाशित आत्मा को, अंदर और बाहर में
अहंकार रहे पूर्ण समर्पित, माँ की महिमा गाने में
जो पूजे माँ को नित्य हृदय में, भक्ति अनन्य ही पाएगा ।
ध्यान स्वतः हो जाएगा ।

निर्विचारिता की माटी से, गढ़ो श्रीनिर्मला माँ की मूरत ।
भक्तिश्रद्धा से करो स्थापित, बीच हृदय के प्रांगण में
करो प्रार्थना श्री गणेश की, सहज ही निर्विचार हो जाएगा ।
ध्यान स्वतः हो जाएगा ।

ध्यान बीज धारित होने पर, ध्यान सही कहलाता है ।
धारित ध्यान ही प्लावित होकर, साक्षी भाव में आता है ।
साक्षी भाव में धारित हो कर, फल शिव तत्त्व का पाएगा ।
ध्यान स्वतः हो जाएगा ।

दुर्गति-हारिणि दुर्गा अम्बे

दुर्गति-हारिणि दुर्गा.....अम्बे,
दुर्गति-हारिणि दुर्गा अम्बे, तेरी जयजयकार हो
तेरी जय जय कार हो माँ, तेरी जयजयकार हो

भव-भय-हारिणि भवानी अम्बे, चरणों में नमस्कार हो
तेरे चरणों में नमस्कार हो (२)

तेरी ही आभा से ज्योति, सूरज चाँद सितारे
तेरी ही माँ शक्ति लेकर, खड़े हुए हैं सारे,
सुखदायी हो सृष्टी सारी (२)

हलका दुःख का भार हो, तेरी जय जय कार हो
तेरी जय जय कार हो माँ, तेरी जय जय कार हो

हे महादेवी, हे कल्याणी..... कल्याणी
हे महादेवी, हे कल्याणी, दुष्टों का संहार करो
मंगलमय वरदान दो मैया, भव से बेड़ा पार करो, माँ भव...
भाव भक्ति से शरण आये, विनती माँ स्वीकार करो

तेरी जय जय कार हो
तेरी जय जय कार हो माँ, तेरी जय जय कार हो (२)

दरबार हजारों देखे हैं

माँ दरबार हजारों देखे हैं, तेरे दर सा कोई दरबार नहीं...६
माँ प्यार हजारों से पाया, तेरे प्यार सा कोई प्यार नहीं...२
तेरे दर सा....६

माँ हर फूल में तूने रंग भरा, हर गुल में है तेरी खुशबू
जिस गुल में तेरी खुशबू ही ना हो, ऐसा तो कोई गुलजार नहीं...२
तेरे दर सा...६

माँ दुनियाँ वालों से क्या माँगू, दुनिया तो आप भिखारी है
तेरे आगे हाथ पसारा है, तू करती कभी इन्कार नहीं...२
तेरे दर सा....६

दर पे तेरे जो भी आया

दर पे तेरे जो भी आया
वो तो श्रद्धा के फूल ले आया
माँ मेरी, शेरॉवाली (२)

भवन तेरा, बड़ी दूर मैया
तेरे भक्तो ने आना जरूर मैया
तेरे सेवक है लाखों पुजारी
माँ मेरी, शेरॉवाली (२)

अम्बे मैया मेरी जगदम्बे मैया,
तेरा भगत कभी ना कम्बे मैया
तेरी सुन्दर छवि है निराली
माँ मेरी, शेरॉवाली... (२)

अर्ज मेरी, मैया मंजूर करो
खाली झोली मेरी भरपूर करो
अपना सेवक ना भेजो माँ खाली
माँ मेरी, शेरॉवाली... (२)

डम - डम - डम डमरू बजायें

डम-डम-डम डमरू बजायें, शिव शंकर कैलाश पती
युग युग सोया जीव जगायें, शिव शंकर कैलाश पती
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय, बोलो ओम नमः शिवाय

माथे ऊपर तिलक चन्द्रमा, पहने नाग की माला
डमरू की धड़कन पे नाचे, सृष्टी का रखवाला
निज भक्तन के कष्ट मिटाये, शिव शंकर कैलाशपती

जटा जूट से बहती गंगा, सबके ताप मिटाती
धरती और प्यासे जीवों की, मैया प्यास बुझाती
निज कृपा जग पर बरसायें, शिवशंकर कैलाशपती

मंगलकारी नाम है उनका, वो हैं शक्तिदाता
भवसागर से तर जाये वो, जो शिवनाम है गाता
मोह माया से मनको छुड़ाये, शिव शंकर कैलाशपती

दुर्गा आदिशक्ति

दुर्गा आदिशक्ति श्री माताजी
श्री माताजी निर्मला देवी

(कोरस)(२)

माँ कृपा से जाना है, खुदको ही पाना है
अपनी शुद्ध इच्छा को, परम शक्ति में समाना है
आत्म बोध ये अपना है, अनुभव से जाना है (२)

मेल हुआ जब आत्मा का, आप से तब, पार हुए हम
निर्विचार और निर्विकल्प भी
सहज में ही हो गये
माँ प्रेम तुम्हारा ये, बहता एक सागर है
हम बूँद बने इस सागर की
अब समा ही जाना है
आत्मबोध ये अपना है, अनुभव से जाना है (२)

महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली
त्रिगुणात्मिका माँ
कुण्डलिनी आप ही हैं, सजदे करते आप को हम
इस योग महान से नया जन्म मिला हमको
सब रोग छूटे, दुःख दर्द मिटे
सबने इसे पाना है
आत्मबोध ये अपना है, अनुभव से जाना है (२)

ब्रह्मचैतन्य का माध्यम अब
देह हमारा हो गया
झूठ सत्य और पाप पुण्य में
भेद कितना जान गये हम
इस स्थूल रूप में हम सूक्ष्म को पाये
निर्विचार में समर्पण होकर
शून्य को पाना है
आत्मबोध ये अपना है, अनुभव से जाना है (२)

ज्ञान दे, ज्ञान दे

ज्ञान दे, ज्ञान दे माँ निर्मल, ज्ञान दे, ज्ञान दे माँ निर्मले
भक्तिसुमन महके हृदय में - (२)

ज्ञान दे माँ निर्मला निर्मल, निर्मल ज्ञान का सागर हो तुम
श्वेत सुन्दर शारदे ।
दूर कर अवगुण हमारे, निर्मल विद्या दान दे
आत्मज्ञान की ज्योति जला दो, सुप्त हृदय में प्राण दे, ज्ञान दे...

हैं बहुत से स्वप्न मन में, सर्वजन कल्याण दे,
हम हैं तेरी सन्तान माते, सहज जग निर्माण दे
विश्वनिर्मल धर्म फैले, यही हमें वरदान दे, ज्ञान दे...

आदिमाँ तू आदिभवानी, तू प्रतिपालक जनकल्याणी
ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर में, तेरा ही तेज समाया
हृदय समर्पित श्री चरणन में, पूर्ण कृपा कर हे वरदानी
चित्त सदा रहे तव चरणन में, यही हमें वरदान दे, ज्ञान दे...

दुनिया के हर नज़ारे में

दुनिया के हर नजारे में माँ तुम ही मुस्कराती हो
रौशन हुई ये दुनिया, जब नूर माँ बहाती हो

माँ की शरण में आये तो, जाना है खुद को हमने
पहले किया था मैं ही मैं, अब माँ ही माँ बुलवाती हो
दुनिया के...

सब अंधेरे मिट गये हैं, अब हमारी राहों के
जब कभी भटके हैं हम, मंजिल की राह दिखाती हो
दुनिया के...

सागर जैसा प्रेम है माँ का, मिला है मोती माँ की दया का
गुलशन सा महके है मन, जब दिल की कली खिलती हो
दुनिया के.....

गजानना श्री गणराया

गजानना श्री गणराया, आधी वंदू तुज मोरया
मंगलमूर्ती श्री गणराया, आधी वंदू तुज मोरया ॥४॥

सिंदूर चर्चित धवळी अंग, चंदन उटी खुलवी रंग
बघता मानस होते दंग, जीव जडला चरणी तुझिया, आधी ॥१॥

गौरी तनया भालचंद्रा, देवा कृपेच्या तू समुद्रा
वरदविनायक करुणागारा, अवघी विघ्ने नेसी विलया, आधी ॥२॥

गाइए गणपति जगवंदन

गाइए गणपति जगवंदन, शंकरसुवन भवानीनन्दन
सिद्धीसदन गजवदन विनायक, कृपासिंधु सुन्दर सब दायक
मोदकप्रिय मुद मंगलदाता, विद्यावारिधि बुद्धिविधाता
मांगत योगिजन कर जोरे, बसहिं श्रीमाताजी मानस मोरे

गणपति आयो रे

गणपति आयो रे, लाल घर गणपति आयो रे
भोला गये कैलाश, गौरा अशनान रचायो रे

चन्दन चौकी ढाय गौरा ने मरदन कीन्हा
तन का चैतन्य समेट बना इक पुतला दीन्हा
सुन्दर बालक दिव्य शक्ति से, जीवित कीन्हा गौरा माँ ने
वही गणेश कहाएँ, लाल घर गणपति...

किस लाडली ने तुझे जन्म दियो है
किसने दियो उपदेश, लाल घर गणपति...

माता गौरा ने मुझे जन्म दिया है
भोला ने दियो उपदेश, लाल घर गणपति...

गौरा माँ के तुम हो दुलारे, निर्मल माँ के बेटे प्यारे
काट दो सारे क्लेश, लाल घर गणपति...

गणनायका शुभ दायका

गणनायका शुभदायका, तू बुद्धि दे ह्या बालका
हे, ईश्वरा करुणाकरा, आलो तुझ्या मी मंदिरा (२)
चिंतामणी तव पूजनी, घेऊनीया दुर्वाकुरा
संतुष्ट हो पर देवता, तू जाग आपुल्या लौकिका

देवादिकांचा देव तू, संत भावनांची ठेव तू
या बालकांच्या प्रार्थनेचा, जाण मंगल भाव तू
मोरेश्वरा करुणाकरा, घे धाव घे जगपालका

अज्ञानमय तम नाशवी, अन्याय काली पाशवी
तव तेज जगती उधळूनी, मधुरा उषा तू हासवी
तू मंगलाची देवता, दे अभय तव गुणगायका

गुरु तोच म्हणवील खरा माझा

गुरु तोच म्हणवील खरा माझा (२)

गुरु जोच बनवील मम माझा ॥धृ॥

प नि रे सा सा रे ग रे ग प सां नी सां ध ग प

अनंत युगांचा माझा संपला शोध,
सकल धर्म सत्वांचा मज झाला हा बोध
लोपविला स्वार्थ आणिक हा क्रोध,
धन माया भोगाशी झालो अभोग, गुरु तोच.....॥१॥
प नि रे सा सा रे ग रे ग प सां नी सां ध ग प नि

साक्षात गुरुदेव गुरू एकमेव,
गुरू ज्ञान पूंजी दूजी नाही ठेव
गुरू तूच विठ्ठल हरी तू महादेव,
गुरू चरणी पाही विद्या सत्यमेव, गुरु तोच...
प नि रे सा सा रे ग रे ग प सां नी सा ध ग म ॥२॥

गुरुविण जीवन हे खडकावरील बीज,
असूनी भुवरी परी फुटेना अंकुर तीस
गुरु प्रेमवृष्टीने जाईल भीज,
गुरु ज्ञाना ते होई परिपूर्णची, गुरु तोच.... ॥३॥

गुरू एक जगी त्राता

सुखाच्या क्षणात, व्यथांच्या घणात, उभा पाठिशी एक अदृश्य हात ! (१)

गुरू एक जगी त्राता, (२)

गुरू दया सिन्धु, गुरू दिन बन्धु, गुरू जननी जन्मदाता ॥ गुरू एक ॥धृ॥

घन तमात जणु दीप चेतवी, तन मनात चैतन्य जागवी,

कण कणात जणु प्राण डोलवी

जे अरूप त्या देई रूप, करी मूर्त च अमूर्त । गुरू एक...॥१॥

गुरूसमान कोणी नाही सोयरा, गुरूविण नाही थारा

गुरू निदान गुरू मोक्ष आसरा,

देव-दैव लाभे सदैव(२), गुरूचरण लाभ होता । गुरू एक ॥२॥(२)

गुरू माऊली

गुरू माऊली तू निर्मळ मनाची

गुरू कृपा जशी दयासागराची ॥धृ॥

सहज तुझी क्रांती तुझी भव्य मूर्ती

भक्तांची कैवारी अशी तुझी किर्ती ॥१॥

तुझ्या लेकरांना धर्म झाले तुझी कृती

समर्पणाच्या निर्गुणात दिसे तुझी आकृती ॥२॥

तुझे नाम मंत्र मुखी तुझे गायन

निरपेक्ष भक्ति चरणी अर्पण ॥३॥

समूळ जागृती इच्छा लेकराची

तुझ्या ठायी देखिली शक्ति ईश्वराची ॥४॥

गुरुवंदना

जय गुरुदेव, जय दत्तात्रेय, जय श्री माताजी
चरणावरती सहजी वाहती, भाव फुले ताजी ॥धृ॥
गुरु हा ब्रह्मा, गुरु हा विष्णु, गुरुस शिव म्हणती ।
गुरु वाचूनी या आत्म्याला, नाही सद्गती ।
गुरु स्वतःचा केले आपण, जय श्री माताजी ॥१॥

आपण आमचे गुरु तत्त्व हे, ऐसे जागविले ।
हृदयी आत्मज्ञानाचे जणू, कमळ फुलविले ।
ज्ञानाची ही गंगा वाहे, या हृदयामाजी ॥२॥

आई जैसे मुलास देते, प्रेम अमृतपान ।
श्री माताजी तैसे आपण, दिधले अमृतज्ञान ।
कृपा आपली अशी असावी, विनंती ही माझी ॥३॥

गुरुशरण

ऐ मन गुरु शरण में रहियों, ऐ मन माँ की शरण में रहियो
हर पल निर्मल निर्मल कहियो....

गुरु हमारी आदिशक्ति, करले ऐ मन इनकी भक्ति
इनके ही गुण गईयो ...

गुरु होत है ज्ञान की पुंजी, मोक्ष द्वार की है वो कुंजी
चरणोंपे फुल वहियो.....

गुरु हमारी प्रेम का सागर, भरले बन्दे अपनी गागर
आनन्द ही में रहियो....

गुरु होत है नाथ अनाथा, इन चरणों मे रख दे माथा
आशिष इनका पड़यो...

कर दे कश्ती माँ के हवाले, श्वास श्वास माँ आप सम्भाले
इनकी कृपा तर जड़यो....

कर ले विनती माँ निर्मल से, काट के बन्धन सब जीवों के
निर्मलता भर दड़यो.....

गूजे सदा जयकार श्री माँ जी के भवन में

गूजे सदा जयकार, श्री माँ जी के भवन में
हो रही जय जय कार, श्री माँ जी के भवन में
माँ का ध्यान करे मन निर्मल
निर्मल भक्ति है पुण्यों का फल
करती है श्री माँ निवास, अपने बच्चों के मन में
संकट से माँ सदा उबारें
दर्शन दे कर भाग्य सँवारे
श्री माँ की महिमा अपार, हम गायें सब मिल के
कुंडलिनी आदिशक्ति माँ
सहजदायिनी पराशक्ति माँ
करती हैं भव से पार, चलो माँ की शरण में
सुखकर्ता दुःखहर्ता माता
आदि अन्त की माँ निर्माता
कलियुग में अवतार, जग आया चरण में

घने घने जंगलाँ

घने घने जंगलाँ विच रहंदी माता मेरिये
देखने दा सुन्दर नजारा हो,
सुआ सुआ चोला माता, अंग विराजे
केसर तिलक लगाया हो...
नंगे नंगे पैरी माता, अकबर आया
सोने दा छतर चढ़ाया हो....
पंजा पंजा पांडवां ने, भवन बनाया
अर्जुन चंवर झुलाया हो...
पान, सुपारी, माता ध्वजा नारियल,
पहलड़ी भेंट चढ़ाई हो
मंदिर दे आसे पासे कोयल बोले
तेरी जय जय काराँ हो....

गणपति घर आए सहजीपति

आओ सहजी मिल गणेश मनाएं
अबोधिता को संभाल जी (२)
गणपति घर आए सहजीपति

गणपति आए कुंडलिनी जगाए,
सुबुद्धि दायक दयाल जी
गणपति घर आए सहजीपति

निर्मल के संग आए, शिवजी को साथ लाए
कार्तिकेय आए साथ भी
गणपति घर आए सहजीपति ॥धृ॥

रिद्धी सिद्धी के तुम हो दाता
सहजियों के श्रेष्ठ भ्राता
शुद्धी कारण हृदय की कराली
अश्लीलता को निकालदी
गणपति घर आए सहजीपति ॥१॥

पवित्रता के द्योतक तुम हो,
विवेक बुद्धि प्रदायक तुम हो
सहजियों के विनायक तुम हो
क्षमाशील हो शिवलाल जी
गणपति घर आये सहजीपति ॥२॥

साक्षात् आत्मा बने सुंदरम्
सत्यम् शिवम् पाए निर्मल तत्त्वम्
पूर्ण समर्पण हमको सिखादो
आदिशक्ति के हे हम लाल भी
गणपति घर आये सहजीपति ॥३॥

हांसत आली निर्मला आई

- हांसत आली निर्मला आई (२)
घालूनी पैजण पायी, आई ॥धृ॥ (२)
नवरत्नांचा मुकुट शिरावर, कंठी शोभे मोतीहार (२)
सुंदर माझी निर्मला आई, घालूनी पैजण पायी, आई (२)
जरीपदराचा कसुनि पितांबर, चोळी ल्याली बुट्टेदार (२)
सुंदर माझी निर्मला आई, घालूनी पैजण पायी, आई (२)
शिव, ब्रह्मा, विष्णुही सारे, ध्याती निशिदिनी मुनिवर सारे (२)
सुंदर माझी निर्मला आई, घालूनी पैजण पायी, आई (२)
सहजयोगी आम्ही अशी पाहिली, शरण तिजला सर्व ही जाई (२)
सुंदर माझी निर्मला आई, घालूनी पैजण पायी, आई (२)

हे प्रेम मूर्त जगी आले

हे प्रेम मूर्त जगी आले
मम झाले मन धाले, हे सर्व जगी संचरिले

बाल वदन तव बघुनी ख्रिस्ता
सकल दुरित भय पावे अस्ता
तव दिव्य रूप जगी आले
मम झाले मन धाले, हे सर्व जगी संचरिले ॥१॥

मम मन सखया तुझा पाळणा
वदन वाहिलें तव संस्तवना
हे सर्व तुलाही दिधले ।
मम झाले मन धाले, हे सर्व जगी संचरिले
हे प्रेम मूर्त जगी आले

॥२॥

हे निर्मल माँ

हे निर्मल माँ, हे निर्मल माँ
तेरा प्यार मोक्ष का आनंद है माँ

तू स्वर की देवी, ये संगीत तुझसे
हर शब्द तेरा है, हर गीत तुझसे (आ.. २)
हम पार सहज में, तेरी कृपा से
निर्मल विद्या का, वरदान दे माँ

देवों ने समझी, मुनियों ने जानी
चैतन्य की भाषा, पुराणों की बानी (आ..२)
साधक ये समझे, मानव ये जाने
ये अनमोल घड़ियाँ, ये अवतार तेरा

तू आदिशक्ति, सहस्रार विराजे
चैतन्य लुटाये, सतयुग जगाये (आ... २)
विश्व की जननी, तू महादेवी
तेरा पुत्र बनने की, पात्रता दे माँ

हे आदिमा, हे अंतिमा

हे आदिमा, हे अंतिमा, जे वांछिले, ते तू दिले (२)
कल्पद्रुमा ॥धृ॥

या मातीचे आकाश तू, शिशिरात या मधुमास तू (२)
देशी मृता तू अमृता, पुरुषोत्तमा ॥१॥ (२)

देणे तुझे इतुके शिरी, झालो ऋणी जन्मान्तरी
अपकार मी अपराध मी, परी तू क्षमा ॥२॥

देणे जरी अमुच्या शिरी, परि अज्ञजना तू पार करी (२)
देशी जगा तू सहजयोगा, जनकोत्तमा ॥३॥

हमको मन की शक्ति देना

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें

भेदभाव अपने दिलसे, साफ कर सकें
दूसरों से भूल हो तो, माफ कर सकें
झूठ से डरे रहें, सच का दम भरें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें

मुश्किलें पड़ें जो हम पर, इतना करम कर
साथ दे तू धर्म का, चले जो धर्म पर
खुदपे हौसला रहे, बदी से ना डरें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें

हे आदिशक्ति माँ

हे आदिशक्ति माँ, सबदुखहारिणी माँ (कोरस)
तेरे प्यार की शक्ति ने माँ, दिया अद्भुत ये ज्ञान

होती है रोशन वो धरा, पड़ते जहाँ पर तेरे कदम
बहती है रूहानी सबा, करती जहाँ पर तू रहम
तेरे रहम - ओ - करम की है ये दास्तान, दास्तान

पाक-ए-फिजा गुलशन में है, नई महक है जहान में
रंगो गुल भी है यूँ जवां जवां, खिलते हैं जो तेरी राह में
तेरे प्यार का है बना ये कहकशां, कहकशां

उन बंदिशों को क्या कहूँ, बांधे थीं जो हर शख्स को
वो रंजिशें भी हुयीं तमाम, रोके थीं जो वस्ले अक्स को
अक्ष चश्म-ए-रूह से है मुकम्मिल, ये जहान, ये जहान

हो रही जय जयकार

हो रही जय जयकार माताजी तेरे मन्दिर में २ (कोरस)

धूप दीप और जले कपूरी खुशबू न्यारी - न्यारी
गेंदा और गुलाब मोतिया, केसर कुमकुम प्यारी
बहे ठण्डी - ठण्डी मधुर ब्यार - माताजी तेरे मन्दिर में

आत्म ज्ञान के ग्राही आये, माता तेरे द्वार
सहज योग काया में छाया, कुण्डलिनी साकार
पल में हुआ भेदन सहस्रार- माताजी तेरे मन्दिर में

ऊँच नीच का भेद नहीं माँ, नहीं बड़ा कोई छोटा
मन से जिसने ध्यान किया माँ, खाली हाथ न लौटा
पाया सच्चा तेरा प्यार, माताजी तेरे मन्दिर में

ताल मृदंग मंजीरा बाजे, शंख और शहनाई
चिमटा और करताल बजे हैं, बहार भवन में छाई
नाचे सहज योग परिवार, माताजी तेरे मन्दिर में

हम बच्चे भोले भाले

हम बच्चे भोले भाले, गणपति से मतवाले
हमें अपनी शरण में रखना, माँ निर्मल शरण में रखना ।

हम जानें नहीं पूजा
न जानें कोई अर्चना
जाना है हमने इतना
हम हैं तुम्हारी रचना, हम बच्चे...

चैतन्य जहाँ तक जाए
हम सहज वहाँ फैलाएँ
हमें आत्म शक्ति देना
श्रद्धा और भक्ति देना, हम बच्चे...

हमें सत्य मार्ग पर चलना
नये युग के वाहक बनना
बस यही है निश्चय अपना
पूरा हो आपका सपना, हम बच्चे

हे माँ आदि कुण्डलिनी

माँ, आदि कुण्डलिनी गौरी माँ (कोरस)

आदि -शक्ति, माँ जगदम्बा ।
करुणामयी माँ,की है कृपा तूने,
योग सहज लाकर आत्मबोध दिया (२)

अहं समर्पण श्री चरणों में किया,
चैतन्य बहाकर नवजीवन है दिया (२)

जीवन ज्ञान जो हमने एकत्र किया,
दैवी ज्ञान देकर भ्रम से मुक्त किया (२)

पिछले कर्मों के थे संस्कार भरे,
आत्मबोध से ही क्षण में दूर हुए (२)

हे मंगल ईशा

हे मंगल ईशा ॐकार तू गणेशा
अर्पण तनमन जीवन तुजला मयूरेशा
हृदयाची तम उजळीत ये हासत ये नाचत॥धृ॥

धरतीवर ये शिंपित श्रावण प्रथमेशा, अर्पण तनमन...
वेदांचे दे नवनित शब्दांचे दे अमृत
रिमझिम रिमझिम अविरत हे पूर्ण परेशा, अर्पण तनमन...

जीवन हे तव चरणी माते अर्पियले

जीवन हे तव चरणी, माते अर्पियले
तू माता मी बालक, अक्षय हे नाते ।
माते तू दिधले जीवन हे..... ॥१॥

तू अवनी, तूच गगन, तू जीवन, तूच पवन
व्यापुनिया सर्व भुवन, तिष्ठसी दशांगुले ॥१॥

दुरितांसी दाहक तू, भक्तासी शीतल तू
तव ज्योतिच्या तेजे, विश्व हे प्रकाशिले.. ॥२॥

सौम्य तेज हास्य वदन अंतरी तव सप्तभूवन
एक असूनी तू अनेक चराचरा व्यापियले ॥३॥

नवजीवन तू दिधले, स्थिती तिन्ही पलिकडले
दीपासम मम तनूस, महादीप बनवियले
जीवन हे तव चरणी, माते अर्पियेले ॥४॥

हर पल विचारों में

हर पल विचारों में विचरती, आदि माँ वो आप हैं
अब यहाँ तो अब वहाँ, मुझे भासती ही आप हैं

दूरियों में आप हैं...
दूरियों में आप हैं, नजदिकियों में आप हैं
मेरे हृदय में बैठकर, मेरी खुदी का नाप हैं ।

नन्हा सा कतरा बन नजारा...
नन्हा सा कतरा बन नजारा.. कर रहा हूँ आपका
कतरे की मैं है मिट गयी, बस आप ही अब आप हैं ।

ना रही बुलबुल ना रहा है कफस का शोरगुल
लखते जिगर रोशन हुआ, वो रोशनी ही आप हैं ।

जय गणराया

जय गणराया... श्री गणराया...
जय गणराया... श्री. गणराया... मंगल मूर्ति मोरया ॥धृ॥

सिद्धि विनायक, बुद्धिप्रदायक,
सिद्धि - विनायक, बुद्धिप्रदायक, निर्मल पुत्र गजानना,
मंगल मूर्ति मोरया ॥१॥

अष्टविनायक... मंगलदायक... अष्टविनायक, मंगलदायक
निर्मल पुत्र गजानना मातृप्रेम गजानना
मंगल मूर्ति मोरया ॥२॥

सिंदूर वदना... संकट हरणा... सिंदूर वदना, संकट हरणा
निर्मल पुत्र गजानना मातृप्रेम गजानना
मंगल मूर्ति मोरया ॥३॥

जय जय जननी

जय जय जननी श्री गणेश की, प्रतिमा परमेश्वर परेश की
जय जय जननी श्री गणेश की ॥धृ॥

जय गजवदन षडानन माता, जय जय जय जय निर्मल माता ।
ध्यान दान की सुन्दर प्रतिमा, बनी वाहिनी शुभ सन्देश की ॥

जय आदिशक्ति हे मातनिर्मला, जय जय जय जय भक्त वत्सला,
भक्तिदान दो भक्तिगम्या, कीजिए कृपा निर्मल गणेश की ॥

हे जगदम्बे मात भवानी, शुद्ध विद्या तव चरणन जानी,
मोक्ष दान दे मोक्षप्रदायिनी, तू विनाशिनी भवक्लेश की ॥

सविनय विनती सुनिए हमारी, माँ निर्मल भोली अति प्यारी,
मन अन्तर में ज्योत जला दो, चन्द्रनिभा ज्योति दिनेश की ॥

जय श्री माताजी

जय माताजी निर्मल माताजी, ओ जय माताजी निर्मला माताजी
तेरी जय हो, तेरी जय हो, जय हो जय हो जय हो जी ।

गणपति तू, गौरी माता तू, शुद्ध विद्या देती माता तू
ब्रह्मा भी तू, सरस्वती तू, काली भी है तू, महालक्ष्मी तू
तेरी जय हो, तेरी जय हो...

आदि गुरु तू दत्तात्रेय तू, सब धर्मों का धर्म है तू
लक्ष्मी भी है तू, नारायण है तू, नाभी में सबके बैठी है तू
तेरी जय हो, तेरी जय हो...

दुर्गा भी है तू, अम्बे है तू, आदिशक्ति भवानी है तू
शिव भी तू, पार्वती तू, सीता भी है तू, राम है तू
तेरी जय हो, तेरी जय हो...

राधा भी है तू, कृष्ण है तू, हंसा स्वामिनी माता है तू
तेरी जय हो, तेरी जय हो...

कल्की साक्षात् मोक्षदायिनी तू, सहस्रार स्वामिनी माता है तू
तेरी जय हो, तेरी जय हो
तेरी जय हो, तेरी जय हो....

जगी तारक जन्मा आला

जगी तारक जन्मा आला, चला पाहू चला हो त्याला ॥धृ॥

नृप वैभव घेऊन नाही, की अन्य अलौकिक काही
तो दीनच जन्मा आला, जगी दीना तारायाला ॥१॥

जगी सर्व तमाला सारी, तरी नाही प्रखर कर धारी
तो सौम्यच जन्मा आला, जगी पाप्या तारायाला ॥२॥

हे आकाशातून खाली, नवजीवन घेऊन आले
ह्या देही साठवून ह्याला, जय येशू जय जय बोला
जगी तारक जन्मा आला ॥३॥

जय गणपति वन्दन गणनायक

- जय गणपति वन्दन गणनायक (३)
तेरी छवि अति सुन्दर सुखदायक (२)
जय गणपति... (२)
तू चार भुजाधारी, मस्तक सिन्दूरी रूप निराला (२)
है मूषक वाहन तेरो, तू ही जग का रखवाला (२)
तेरी सुन्दर मूरत मन में, (२)
तू बालक सिद्धि विनायक - जय गणपति...
मन मन्दिर का अँधियारा, तेरे नाम से हो उजियारा (२)
तेरे नाम की ज्योति जली तो, मन में बहती सुखधारा (२)
तेरो सुमिरन हर पूजन में, (२)
सबसे पहले फलदायक, जय गणपति...
तेरे नाम को जिसने ध्याया
उस पर रहती सुखछाया (२)
मेरे रोम - रोम अंतर में
इक तेरा रूप समाया (२)
तेरी महिमा तू ही जाने, (२)
शिव-पार्वती के बालक - जय गणपति...

जय गणेश गणनाथ

- जय गणेश गणनाथ दयानिधि, चरण शरण हम लागे तिहारे ।
विघ्नेश्वर हे नाथ कृपानिधि, सकल विघ्न करो दूर हमारे ।
जय गणेश...
जो भी ध्यावे नाम तिहारा, उसका तुमने भाग्य संवारा ।
मंगलकारी नाथ कलानिधि, भाव भक्ति से तुमको पुकारें ।
जय गणेश...
करुणामय गजवदन विनायक, परमानंद परम सुखदायक
हे सिद्धेश्वर हे विद्या निधि, हर मुश्किल से तू ही उबारे ॥
जय गणेश...
ऋषि मुनि योगी सब आराधें, नाम तिहारा जो भी सार्धें ।
हे शिवनन्दन देव सुधानिधि, शरणागत के काज संवारे ।
जय गणेश....

जय गणेश जी की माँ अम्बे

- जय जगदम्बे, जय जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय आदिकुण्डलिनी जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय विष्णु की लक्ष्मी जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय ब्रह्म की सरस्वती जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय शिव की पार्वती तू अम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय राम की सीता जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय कृष्ण की राधा तू अम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय येशू की मेरी तू अम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय मोक्षप्रदायिनी जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय सहस्रारस्वामिनी जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय निर्मल माता जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय आदि-शक्ति जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय आदिमाता तू जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय महामाया तू जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय सर्व स्वरूपिणी तू अम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय विश्वव्यापिनी जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
जय त्रिगुणस्वामिनी जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)
श्री निर्मला माता जगदम्बे, जय गणेश जी की माँ अम्बे (२)

जय शिव शंकर

जय शिव शंकर जय गंगाधर, करुणाकर करतार हरे ।

जय कैलाशी जय अविनाशी सुखदायी सुखसार हरे ॥

जय शशिशेखर, जय डमरूधर, जय जय प्रेमाधार हरे ।

जय त्रिपुरारी, जय मद्हारी, अमित अनंत अपार हरे ॥

जय रामेश्वर, जय नागेश्वर, वैद्यनाथ केदार हरे ।

काशीपति हे विश्वनाथ, श्री मृत्युंजय अविकार हरे ॥

जन्मदिन आयो

आऽ..... आऽ... आऽ....	
जन्मदिन आयो आदिशक्ति का	(२)
स्मरणदिन आयो निर्मलभक्ति का	(२)
जन्मदिन आयो	
चहुँदिस देखो आनंद छायो	(२)
धरती अंबर झूम के गायो	(२)
छाया है रंग मस्ती का	
सब गायें हम मंगल गान	(२)
माँ चरणों में करें प्रणाम	(२)
आशिष माँगे भक्ति का	(२)
आशिष माँगे मुक्ति का	(२)
माँ की महिमा है ये अपरंपार	(२)
माँ कृपा से खुले है द्वार	
कर लो नजारा शक्ति का	
इन्द्रधनुष की घटा छायी गगन है	(२)
निरानंद में सहजी मगन है	(२)
स्वागत करते आदिशक्ति का	(२)

जय गणेश, जय गणेश

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा	
माता तेरी पार्वती, पिता महादेवा	(कोरस)
गणपति देवा, गणपति देवा	
अंधो को आँख देत, कोढ़ियन को काया	
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया	
गणपति देवा, गणपति देवा	(कोरस)
पान चढ़ाओ, फूल चढ़ाओ और चढ़ाओ मेवा	
लड्डुओं का भोग लगे, संत करे सेवा	
गणपति देवा, गणपति देवा	(कोरस)

एकदंत दयावंत चार भुजाधारी
मस्तक सिंदूर शोहे, चुहे की सवारी
गणपति देवा, गणपति देवा (कोरस)

जोगवा

जोगवा मागेन, आईचा जोगवा
अनादि निर्गुणी प्रगटली भवानी, उदे बाई , उदे बाई, उदे बाई, उदे
मोहमहिषासुर मर्दना लागुनी, उदे बाई , उदे बाई, उदे बाई, उदे
त्रिविध तापांची करावया झाडणी, उदे बाई , उदे बाई, उदे बाई, उदे
भक्ता लागुनी पावसी निर्वाणी, उदे बाई , उदे बाई, उदे बाई, उदे
भक्ता लागुनी ॥१॥

द्वैत सारूनी माळ मी घालीन, हाति बोधाचा झेंडा मी घेईन
भेद रहित ग वारिसी जाईन. ॥१॥

नवविध भक्तिचा करूनि नवरात्रा, करूनी निराकरण मागेन ज्ञानपुत्रा
दंभ संसार सोडीन कुपुत्रा ॥२॥

पूर्ण बोधाची भरीन मी परडी, आशा मनिषांच्या पाडिन मी दरडी,
मनोविकारा करीन कुरवंडी, अमृत रसांची भरीन मी दुरडी ॥३॥

आता साजणी झाले मी निःसंग, विकल्प नवऱ्याचा सोडियेला संग
काम क्रोध हे सोडियले मांग, केला मोकळा मार्ग हा सुरंग ॥४॥

ऐसा जोगावा मागुनि ठेविला, जाऊनि महाद्वारी नवस म्या फेडिला
एका जनार्दनी एकच देखिला, जन्म मरणांचा फेरा मी चुकविला.

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती, शरणागत प्रतिपालन हारी (कोरस)
चन्द्रबिंबसम वदन विराजे, शीशमुकुट माला गलधारी, जय...
वीणा वाम अंग में शोभे, सामगीत ध्वनि मधुर पियारी, जय...
श्वेतबसन कमलासन सुंदर, संग सखी शुभ हंस सवारी, जय...
ब्रह्मानन्द मैं दास तुम्हारो, दे दर्शन परब्रह्म दुलारी, जय...

जागो सवेरा

जागो सवेरा आया है, माता ने जगाया है २ (कोरस)
सहस्र कमल - दल निर्मल माता ने दरबार लगाया है ।

श्री माताजी, श्री महाराज्ञी, देवकार्य समुद्यता,
हे माता अकुला, विष्णु ग्रन्थि विभेदनी,
माता भवानी, माँ भक्तिप्रिया, माँ भक्तिगम्या, माँ शर्मदायिनी,
देवी निराधारा, माता निरंजना, माता निर्लेपा, महाशक्ति निर्मला,
माँ निष्कलंका, हे माता नित्या, माँ निराकारा, माँ निराकुला-
मात निर्गुणा निर्मला माँ में, पूरा निराकार समाया है ।

हे माता निष्कला, माता निष्कामा, माँ निरुपप्लवा, हे नित्य मुक्ता,
माँ निर्विकारा, माँ निराश्रया, मात निरन्तरा, माँ निष्कारणा,
माँ निरुपाधि, माँ निरीश्वरा, हे माता निरागा, मात निर्मदा,
हे माता निर्ममा, देवी निष्पापा
हे निःसंशया देवी माँ तूने सारा विश्व जगाया है ।

हे माता निर्भवा, माँ निर्विकल्पा, हे निराबाधा, हे माँ निर्नाशा,
माता निष्क्रिया, हे निष्परिग्रहा, मात निस्तुला, माँ नीलचिकुरा,
देवी निरपाया, देवी निरत्यया, जननी सुखप्रदा, माँ सान्द्रकरुणा,
माता महादेवी, माँ महापूज्या, महापातकनाशिनी, हे महाशक्ति,
हे महामाया
आपके कारण महारतिः, मानव ने खुद को पाया है

हे विश्वरूपा, माँ पद्मासना, हे माता भगवती, माँ रक्षाकरी,
रे राक्षसघ्नी, माँ परमेश्वरी, हे नित्ययौवना, हे पुण्यलभ्या,
हे अचिंत्यरूपा, हे देवी परा शक्ति, माँ गुरुमूर्ति, हे आदिशक्ती
माँ देवी योगदा, हे एकाकिनी, हे सुखाराध्या, माँ शोभना सुलभागति,
सतचित् आनंदरूपिणी
हे देवी लज्जा जी तूने, मोक्ष का राह दिखाया है ।

हे मात शुभकरी, हे मात चण्डिका, माँ त्रिगुणात्मिका, हे माता महती, माँ प्राणरूपिणी, माता परमाणु, माँ पाशहंत्री, हे वीरमाता, माता गम्भीरा, हे देवी गर्विता, हे क्षिप्रप्रसादिनी, हे सुधासुति हे धर्माधारा, हे विश्वग्रासा, मेरी माता परमोदारा माता शाश्वती देवी तूने, सबको पार लगाया है।

माँ लोकातीता, हे शमात्मिका, हे लीला विनोदिनी, माँ श्री सदाशिवा, माँ पुष्टि देवी, माँ चन्द्रनिभा, हे रविप्रख्या, हे पावनाकृति, माँ विमलादेवी, माँ वरदा देवी, हे माता विलासिनी, हे माता विजया, माँ विश्व निर्मला धर्मदायिनी, वन्दारुजन-वत्सला, सहजयोगदायिनी माँ तूने मोक्ष का पथ दिखलाया है ।

जब से पकड़े चरण

जब से पकड़े चरण श्री माँ के, मन बुद्धि को छोड़ दिया खुद को करके माँ के अर्पण, अपनी खुदी को छोड़ दिया

श्री माँ चरण की मस्ती देखो , चारों ओर खुमारी है माँ निर्मल के सहजयोग की, महिमा सबसे न्यारी है जिसने देखी डगर सहज की, अपनी गली को छोड़ दिया जब से पकड़े

सब सोचत हैं हम श्री माँ से, मिलने मिलाने आये हैं हम जानत हैं इसी बहाने, पार होने आये हैं इस कारण से हर जंगल को, हर बस्ती को जोड़ दिया जब से पकड़े...

यहाँ कोई कमजोर नहीं है, यहाँ कोई मजबूर नहीं चलते जाना फर्ज निभाना, मंजिल अपनी दूर नहीं बीच सफर में रह जायेगा, जिसने जी को छोड़ दिया जब से पकड़े...

जय जय भवानी

जय जय भवानी, जय जय शिवानी	(कोरस २)
निर्मल माता जय देवी	
सहजयोगदायिनी निर्मल माँ	(२)
सहस्रारस्वामिनी निर्मल माँ	(२)
मोक्ष प्रदायिनी निर्मल माँ, जय जय भवानी	
जय महालक्ष्मी निर्मल माँ	(२)
जय महाकाली निर्मल माँ	(२)
जय महासरस्वती निर्मल माँ, जय जय भवानी	(२)
मंगलदायिनी निर्मल माँ	
विद्यादायिनी निर्मल माँ	(२)
शक्तिदायिनी निर्मल माँ, जय जय भवानी	(२)
विश्व विलासिनी निर्मल माँ	(२)
विश्व विमोहिनी निर्मल माँ	(२)
विश्व संहारिणी निर्मल माँ, जय जय भवानी	(२)
आनंददायिनी निर्मल माँ	(२)
चिदानंददायिनी निर्मल माँ	(२)
ब्रह्मानंददायिनी निर्मल माँ, जय जय भवानी	(२)
भुवनमोहिनी निर्मल माँ	(२)
जगदोद्धारिणी निर्मल माँ	(२)
जगहितकारिणी निर्मल माँ, जय जय भवानी	(२)

जय जय माता निर्मला देवी

जय जय माता निर्मला देवी, मन मन्दिर में आओ
मन मन्दिर में आओ माता, मन का तिमिर मिटाओ
मन का तिमिर मिटाओ माता, मन में ज्योत जगाओ
आदिशक्ति तुम शक्ति कुण्डलिनी, जागृत करो माँ, उद्यत करो माँ
जय जय माता निर्मला देवी, मन मंदिर में आओ
मन का तिमिर मिटाओ माता, मन में ज्योत जगाओ
जागृत करो माँ, उद्यत करो माँ, निर्मल करो माँ निर्मल माता ।

जय जय जग जननी देवी

जय जय जग जननी देवी, सुर नर मुनि असुर सेवी
भक्ति-मुक्ति-दायिनी, भव-हारिणी निर्मला...

मंगल मुद्द सिन्धु सदन, पर्व शर्व रीष वदनी
ताप तिमिर तरुण तारिणी, किरण मल्लिका माँ, जय जय...

जय महेश भामिनी, अनेक रूप नामिनी
समस्त लोक दामिनी, शैल बालिका माँ, जय जय..

सहजयोग-दायिनी, सहस्रार स्वामिनी, मोक्षप्रदायिनी
सहस्रार स्वामिनी मोक्षप्रदायिनी, माता श्रीनिर्मला, जयजय...

जय अंबे कुंडलिनी माँ

जय अंबे कुंडलिनी माँ
सुन लो गणेश पुकार
पतित उद्धारण शक्ति तिहारी
होंगे हम सब पार

आदिमाया आदिशक्ति तू
सब चक्रों की चक्रवर्ती तू
ममता की है मूरत तू माँ
दया प्रेम अपार

माँ भवानी भव-भय-हारिणी
हे अपर्णा असुर-मर्दिनी
चला भँवर में तेरे सहारे
अब तू पार उतार,

मंगलमय वरदायिनी तू है
भक्तवत्सला कृपासिंधु है
चैतन्य से तेरे जागृत हो के
होगा सबका उद्धार

जय हे जय हे देवी

जय हे, जय हे, जय हे देवी

मोक्षप्रदायिनी निर्मल माँ

॥धृ॥

सर्वमंगलकारिणी, सहजयोगप्रदायिनी

सर्वमानववासिनी, साक्षात्कार-प्रदायिनी

प्रसन्नवदना, दिव्य-तेजसा, महामंगला निर्मल माँ ॥१॥

सर्व-व्याधि-निवारिणी, सर्व-मानव-तारिणी

सर्व-राक्षस-मर्दिनी, सर्व-देवता-धारिणी

विश्व-कारिणी, विश्व-धारिणी, विश्व-रक्षिणी निर्मल माँ ॥२॥

सदाशिव-हृदय-स्वामिनी, सदाशिव-हृदय-धारिणी

सर्वस्वरूपा सर्वेशी, सर्व-मंत्र-स्वरूपिणी

सर्व-व्यापिनी, सर्व-साक्षिणी, सर्व शाश्विनी निर्मल माँ ॥३॥

भक्त-वत्सला कल्याणी महापातक-नाशिनी

योगक्षेम-विवर्धिनी निरानंद-प्रदायिनी

महारूपा, महापूज्या, आदिमाता निर्मल माँ ॥४॥

जय महालक्ष्मी निर्मल माँ, जय महाकाली निर्मल माँ

जय महासरस्वती निर्मल माँ, आदिशक्ति निर्मल माँ ॥५॥

जो नर दुःख में

जो नर दुःख में दुःख नहीं माने

सुख स्नेह अरु भय नहीं जाके

कंचन माटी माने

नहीं निन्दा नाहीं स्तुति जाके

लोभ मोह अभिमान

हर्ष शोक ते रहे नियारो,

बाही मान अपमान ॥

गुरू किरपा जेही नर पै किन्ही

तिन यह जुगत पिछानी

नानक लीन भयो गोविन्द सों,

ज्यों पानी संग पानी ॥

जागो कुण्डलिनी माँ

जागो कुण्डलिनी माँ, करो सबपे कृपा
सहस्रार में आके, छू ही लेंगे वो हम आसमाँ

मूलाधार में तुम बैठी हो माँ, सदियों से तुम सोई हुई,
इच्छा हुई पा लें तुझको, हासिल हो तुम, जागो कुण्डलिनी माँ
समा जाओ माँ मज्जा में अभी, सभी चक्र तुम निरंजित करो
गणेशा स्वयं पूजें तुझको, शरण में तेरी, जागो कुण्डलिनी माँ ।

सोई आत्मा में प्रकाश भरो, जो बिखरे हैं चित्त एकत्रित करो
तभी दूर होंगे अंधेरे, रोशनी में तेरी, जागो कुण्डलिनी माँ ।

जग-मग-जग-मग चमके दरबार मैया का

जग मग जग मग चमके, दरबार मैया का,
मैया की जोत में से कर लो, दीदार मैया का ।

गौरी नन्दन सिद्धि दाता, वर देने आये हैं
आज वैकुण्ठ से देव - गणों ने, माँ पे पुष्प बरसाये हैं ।
चाँद सितारे घेर के बैठे, द्वार मैया का
मैया की जोत में से...

शिव भोले भण्डारी जी ने, दर पे समाधि लगायी है,
योगी दूर - दूर से आये, चरण रज शीष चढ़ाई है ।
इन्द्र जी साफ करें आकर, दरबार मैया का
मैया की जोत में से....

महावीर बजरंगबली ने, सेवा दिल में धारी है,
पवनसुत माँ को पंखा झलते, ये योद्धा बलकारी हैं
सूर्य दीप से रोशन है, दरबार मैया का
जग मग जग मग चमके...

सात जन्म के पुण्य कर्म से, दर्शन हो महारानी का,
हम सब पर उपकार हुआ है, इस ज्योति नूरानी का,
हर इक दिल में लहरें मारे, प्यार मैया का
मैया की जोत में से...

जागो हे जगदम्बे

जागो हे जगदम्बे, जागो हे ज्वाला,
जागो हे दुर्गे माँ, जागो बृज बाला,
जागो माँ जागो

जागो तुम्हारे भक्त तुमको जगायें
आओ माँ लाल तुम्हें प्यारे से बुलायें
ज्वाला है नाम तेरा तेज है निराला

जागो दिलों के अंधकार को मिटा दो
भटके हुए है मैया रौशनी दिखा दो
अपनी ही ज्योति का कर के उजाला

सारा जमाना हुआ ज्योत का दिवाना
मैया हम चरणों में माँगे ठिकाना
जिसपे तेरी नजर मैया उसका बोलबाला

शेर पे सवार माता अष्टभुजा धारी
दुष्टों की काल मैया भक्तों की रखवारी
नैनों में तेज तेरे गले मुंड माला....

जय जय जय श्री निर्मला माँ

जय जय जय श्री निर्मला माँ, लीलाधार श्री निर्मला माँ
शान्त सागर इन चरणों में, शरणा गति दे निर्मला माँ
हे सर्वव्याप्ता आनंद सागर, प्रेम भाव दे निर्मला माँ
साक्षी स्वरूप दे निर्मला माँ
हे सर्वज्ञा शांति सागर, क्षमा भाव दे निर्मला माँ,
निर्विचार दे...
हे सर्व स्वरूपा शक्ति सागर, तेजस्विता दे निर्मला माँ,
शरणागति दे...
हे परम शान्ता करुणा सागर, भक्ति भाव दे निर्मला माँ,
आत्म स्वरूप दे...
हे करुणामय चैतन्य सागर, हम धाराएँ श्री निर्मला माँ
अनन्य भाव दे....

जिसमें सूरत श्री माँ की

जिसमें सूरत श्री माँ की न आए नजर
अब मुझे ऐसा दर्पण नहीं चाहिए
गंध जिसमें भरी हो अहंकार की
वो दिखावे का टीका नहीं चाहिए

छोड़कर इस जमाने की रंगीनियाँ
आ गया हूँ मैं माँ तेरे दरबार पर
सिर्फ भक्ति से मतलब है मेरे लिए
कोई दुनिया का बन्धन नहीं चाहिए

मैं जहाँ भी तुम्हे देखूँ आओ नजर
मेरी आँखों को बख़्शो माँ वो रोशनी
सिर्फ इसके सिवा और कुछ भी नहीं
कोई जीवन का साधन नहीं चाहिए

मैंने दरबार में तेरे झू के चरण
फैसला कर लिया है समझ सोचकर
सत्य की खाक मिल जाए मेरे लिए
झूठी दुनिया का कंचन नहीं चाहिए

साधुओं ने जो पूछा दिली माजरा
एक सहजी ने उन साधुओं से कहा
शांति का पुजारी हूँ, मेरे लिए
दुष्ट लोगों का दर्शन नहीं चाहिए ।

जब रात ढले सुबह के लिए

जब रात ढले सुबह के लिए, हो नई किरण माँ आज के दिन
खुशियाँ भर दे हर पल के लिए, रुक जाये समय माँ आज के दिन ।

इन प्यार भरी आँखों के लिए, हो समा सुहाना आज के दिन
हर पुष्प खिले मुस्कान लिये, बनी याद रहे माँ आज के दिन ।

आए हैं तेरे दर्शन के लिए, मिले एक झलक माँ आज के दिन
लाए फूल हैं हम अर्पण के लिए, करें स्पर्श चरण माँ आज के दिन ।

आई हो माँ हम सब के लिए, बस एक बहाने आज के दिन
बहे प्रेम हृदय से जहाँ के लिए, बढ़े योग सहज माँ आज के दिन ।

जय भगवति देवि नमो वरदे

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पाप-विनाशिनि बहुफलदे ।
जय शुम्भ-निशुम्भ-कपाल-धरे, प्रणमामि तु देवि नरार्ति-हरे ॥

जय चन्द्र-दिवाकर-नेत्र-धरे, जय पावक-भूषित-वक्त्र-वरे ।
जय भैरव-देह-निलीन-परे, जय अन्धक-दैत्य-विशोष-करे ॥

जय महिष-विमर्दिनि शूल-करे, जय लोक-समस्त -पाप-हरे ।
जय देवि पितामह-विष्णु - नुते, जय भास्कर - शक्र - शिरोऽवनते ॥

जय षण्मुख - सायुधईशनुते, जय-सागर-गामिनि शम्भु-नुते ।
जय दुःख-दरिद्र-विनाश करे, जय पुत्र-कलत्र-विवृद्धि-करे ॥

जय देवि समस्त-शरीर-धरे, जय नाक-विदर्शिनी दुःख-हरे ।
जय व्याधि-विनाशिनि मोक्ष-करे, जय वान्छित-दायिनि सिद्धिवरे ॥

जय भोला भण्डारी शिवहर

जय भोला भण्डारी शिवहर, जय भोला भण्डारी (२)
जय कैलाशपती शिव शंकर, (२) सब जग के हितकारी

निशदिन तेरा ध्यान धरें हम, सिमरे मंत्र तिहारा
हे शिव शंकर मन्त्र जगाओ, होवे घट उजियारा
नमामी शंकर, नमामी शंकर, कृपा करो त्रिपुरारी

शंखनाद से शब्द जगाकर, स्वर संगीत बहाया
युग युग से ये सृष्टि नाचे, ऐसा डमरू बजाया
शिव का नाम जपे से जग में, सुख पाते संसारी

तीनों ताप हरण कर लेता, ये त्रिशूलतिहारा
शिव का नाम जपे से जग में, मिलता मुक्ति द्वारा
महादेव परब्रह्मविधाता, आये शरण तिहारी

केशवा माधवा

केशवा माधवा तुझ्या नामात रे गोडवा ॥धृ॥
तुझ्यासारखा तूच देवा, तुला कुणाचा नाही हेवा
वेळो वेळी संकटातुनी, तारीशी मानवा
केशवा माधवा... ॥१॥

वेडा होऊनी भक्तीसाठी, गोपगड्यांसह यमुनाकाठी
नंदाघरच्या गायी हाकीशी,
गोकुळी माधवा... ॥२॥

वीर धनुर्धर पार्थासाठी, चक्र सुदर्शन घेऊन हाती
रथ हाकुनिया पांडवांचा, पळविशी कौरवा
केशवा माधवा ॥३॥

कृष्ण गोविंद

कृष्ण गोविंद, गोविंद गाया करो (२)
प्यारा मोहन हृदय में बिठाया करो (२ कोरस)
कृष्ण गोविंद, गोविंद गाया करो (२)

लगाया करो ध्यान चित्त में समाकर
भगा मन कहीं फिर लाओ जमाकर (२)
बातें संतों की उसको पढ़ाया करो (२)

कोई कहते हैं भगवान खाते नहीं
शबरी की तरह कोई खिलाते नहीं (२)
याद निर्मल की दिल में बसाया करो

मुख से गाया करो, मन रंगाया करो
रंग में नहाया करो, तन डुलाया करो (२)
कहत तुकड्या चरण-रज लुटाया करो

गोविंद बोलो हरि गोपाल बोलो (४)
राधा रमण हरि गोपाल बोलो (४)
गोपाल बोलो हरि गोपाल बोलो (४)
गोविंद, गोविंद, गोविंद, बोलो (४)

किया जब, माँ निर्मल दर्शन तेरा

किया जब, माँ निर्मल दर्शन तेरा, साक्षात्कार हुआ परमेश्वर का,
दिल में ऐसी लहर उठी, कि पुण्यों का अनुभव होने लगा, होने लगा
किया जब... दर्शन तेरा.

मन तन ऐसा पुलकित हुआ, कि प्रेम का दरिया भर आया,
मुख से कुछ भी ना कह पाया, जो अन्तर मन में घटित हुआ
किया जब... दर्शन तेरा

भक्ति को इक नया रंग मिला, जब आत्मसाक्षात्कार हुआ
चैतन्य का ऐसा स्रोत बहा, और प्रेम बहा, बहता ही गया
किया जब.... दर्शन तेरा

आस जगी विश्वास हुआ, पा के नया जन्म धन्य हुआ
पूर्ण समर्पित हो जाऊँ, तुझ को हर पल ही ध्याऊँ
किया जब... दर्शन तेरा

कर कृपा श्री आदिशक्ति ने

कर कृपा श्री आदिशक्ति ने, लिया जन्म इस पावन धरती पे,
सहजयोग दिया, आत्मबोध दिया, इस ईश्वर की परा शक्ति ने
कर कृपा....

किया जागृत माँ कुण्डलिनी को, रख नाम निर्मला माँ तुम ने,(२)
अब पार हुए भव सागर से, किया चित्त आलोकित माँ तुम ने..
कर कृपा....

परमचैतन्य के उस सागर का, आभास कराया श्री माँ तुमने (२)
इक प्रेम का पाठ पढ़ा दिया, ये दीप जलाया माँ तुम ने
कर कृपा...

इन्सान से फरिश्ता बना दिया, इस मातृ-प्रेम की शक्ति ने (२)
आनन्द का सागर लहराया, दिया परमज्ञान श्री माँ तुमने
कर कृपा...

कैसी ये फुहार चली

कैसी ये फुहार चली, हाथों से बह निकली
भेदन चक्र चढ़ी, सहस्रार पार करी

मन को झकोर चली कि अनहत् से बह निकली
कंठ से यूँ निकली कि बाँसुरी बजने लगी
दिल की है तार छिड़ी, तन मन बाँध करी
कैसी ये फुहार चली...

लगे जग सारा मुझको है न्यारा
तूने है संवारा माँ करके इशारा
तेरा ये सहारा करे हमें न्यारा
जाने जग सारा माँ तुम हो सहारा
कैसी ये फुहार चली...

आँखों में प्रीत भरी, अलंकृत करने लगी
प्रेम को अर्थ धरी, ये जीवन रसमय करी
अंग से अंग लगी, पावन करती चली
कैसी ये फुहार चली...
लगे जग सारा...
कैसी ये फुहार चली...

नैनों के बाण चढ़ी, जल थल रितु में भरी
सहज में यूँ महकी, कि ममता की सार बनी
मैं की मियाद घटी, प्रेम परिधि चढ़ी...
लगे जग सारा...
कैसी ये फुहार चली..

करले माँ का ध्यान

करले माँ दा ध्यान बंदे

करे माँ दा ध्यान, तेरा होगा उत्थान, ओए...

माँ विच ही है सब कुछ अपना, और सब कुछ है पराया
अंत समय पछताएगा, गर, माँ नूं ना अपनाया

भटके मुसाफिर रुक जा हुन तू, इस विच है कल्याण
समय नूं पहचान बंदे, करले माँ दा ध्यान

कलयुग विच अवतर के माँ ने, योग सहज सिखलाया
भवसागर माया नू तर के, धर्मातीत बनाया ।

हृदय कमल विच ज्योत जला ले, कर माँ दा आह्वान
समय नूं पहचान बंदे, करले माँ दा ध्यान...

रूह साडी भटक भटक कर, माँ चरणां विच आई
जन्म जन्म जो खोज रहे सी, ओ पुंजी है पाई

सहस्र कमल नू खोल के माँ ने, दे दिता वरदान
समय नू पहचान बंदे, करले माँ दा ध्यान...

कहते हैं सब ज्ञानी माता

कहते हैं सब ज्ञानी माता..., ये दुनिया है फानी माता....
नहीं तेरा कोई सानी माता..., तू तो है रूहानी माता..

तू है सबके अंदर, हर शह तेरा मन्जर
है तेरा ये मफहूम...,

माँ मेरी तू कय्यूम, माँ मेरी तू कय्यूम
ईमान का तराजू, इंसान का,
आई बन के बादल, तू हर मुश्किल का हल,
हर बात तुझे मालूम, हर बात तुझे मालूम

ये नजरो का धोखा है, नहीं दिखता निर्मल
ये अक्ल का परदा है, नहीं हटता निर्मल
मत ढूंढो उसे बाहर, है वो सबके अंदर

काली दह पै खेलन आयो री मेरो बारो सो कन्हैया

काली दह पै खेलन आयो री मेरो बारो सो कन्हैया
मेरो बारो सो कन्हैया, मेरो छोटो सो कन्हैया - २

काहे की तैने गेंद बनायी, काहे का बल्ला बनायो री
मेरो बारो सो कन्हैया...
पटरेशम की गेंद बनायी, चन्दन को बल्ला लायो री
मेरो छोटो सो कन्हैया

मेरो छोटो सो कन्हैया, मेरो बारो सो कन्हैया
मारो टोल गेंद गई दह में, वो तो गेंद की गैल समायो री
मेरी बारो सौ कन्हैया, मेरो छोटो सो कन्हैया
दह में रहवै नाग कालिया, वानै सोती ही नाग दबायो री,
मेरो बारो सो कन्हैया
मेरो बारो सो कन्हैया, मेरो छोटो सो...

हुआ भारी युद्ध श्याम ना हारो, नाग नाथ रेती में डारो
वो तो फन - फन पै दर्शायो री,
मेरो बारो सो कन्हैया, मेरो बारो सो.... २

क्यों जाँ कहां

- क्यों जाँ कहां, जब है यहाँ ओ माँ (२)
मनोहारिणी प्रणव रूपिणी, आदि अनादि सगुण निर्गुणी (२)
निर्मला देवी तू ही जननी, तुझमें सारा विश्व समा ओ, माँ ॥१॥
वेदों का तू रूप मनोहर, ऋचा मंत्र का फूल तू सुंदर (२)
कर्म योग का करने जागर, हृदय बसी तू आदिमाँ, ओ माँ ॥२॥
सहजयोग तू ध्यान धारणा, तू स्फूर्ती की दिव्य प्रेरणा (२)
ज्ञान दान की तू है प्रतिमा, षडरिपु की तू है दया क्षमा, ओ माँ ॥३॥

कुदरतो जहान माता तेरा ही है साया

कुदरतो जहान माता, तेरा ही है साया (कोरस)
तू ही खुदा है तू ही मुझ में, तू ही सब में बसी हुई
माँ तू ही है हक, और तू ही जाहिर में छिपी हुई
खुद ही अपने को जीता, बना सहज अपना बादशाह
हूँ तेरा ही हिस्सा, खुदा की हूँ मिल्लीयत
अल्लाह की जागीर हूँ, तेरे कदमों की धूल हूँ
तो हैं अपने सातों जहाँ

आज रंग है सहज का रंग, निर्मल शक्ति का ही रंग है
आदिशक्ति का ही रंग है
बह चले आनन्द के रंग में, परम चैतन्य के रंग में

शीश नवाकर माँ से ये माँगूँ, अलख निरंजन ध्याऊँ, परम को पाऊँ
तेरे ध्यान में सोऊँ ध्यान में जागूँ, तेरे ही चरणों में
बह चले लगन के रंग में, परम चैतन्य के रंग में

सहज के रंग ने नया, इक जहाँ बसाया,
धर्म-मुल्क-वंश-जाति भेदों को मिटाया
दिखे जन सब एक रंग, खुदाई नजरिये से
बह चले लगन के रंग में, परम चैतन्य के रंग में

ज्यों कदम बढ़ाऊँ, तेरा ही सहारा,
जाऊँ जहाँ भी, तेरे प्यार की छाया
तू ही किनारा, तूझे ही पुकारा
तेरा इक आसरा, तेरा ही सहारा, यूँही दिल में बसी रहना
हम तो रंग गए निर्मल धर्म में, विश्व निर्मल धर्म के रंग में

खुद को खुदा का कर के, खुदी को मिटा दे
सत्य शांति आनन्द में, खुदी को मिटा दे, खुदा से मिला ले
खुद को साध कर बढ़ चले, सन्त पीरों की मंजिलों पे
हम तो रंग गए इस्लाम के रंग में, परम चैतन्य के ही रंग में

माँ तेरे हम सहजी, तेरी दुनिया रंग देंगे
 तेरी कृपा से मैया जग में, जगमग दीप जग उठेंगे
 हम तो रंग गए कियामा के रंग में, परम चैतन्य के ही रंग में
 रंग ऐसा रंग दे के कभी नहीं छूटे, धूप आँधी बरखा से कभी नहीं छूटे
 ज्यों ज्यों सहज की हवा बही, अजी दुनिया लगे बदली बदली रे
 रंग गए कय्यूम के रंग में, परम चैतन्य के ही रंग में
 अली के रंग में, वली के रंग में, रहीम के रंग में,
 करीम के रंग में, शक्ति के रंग में, भक्ति के रंग में,
 माता के रंग में, दाता के रंग में

खुद की खुदी को खोकर (गजल)

खुद की खुदी को खोकर, खुद तू खुदा में खोये जा (कोरस)
 लाफानी है वो पाये जा, जो फानी है वो खोये जा ।

ये जंग - ओ - ज़बर, ये तंग - ओ - हवा,
 ये दुश्मनी, सब खुदी की नाकामियां (२)
 जो तुझको तुझसे दूर करे,
 तू उस खुदी को मिटाये जा ।

ये धन - दौलत, शानो - शौकत,
 फानी हैं ये, रिश्ते मिटते जायेंगे (२)
 इन्सां की खिदमत इबादत है,
 इस बंदगी को बढ़ाये जा ।

जब मैं ही तुझसे दूर हुई,
 तो जान ले के गालिबन तू वली हुआ (२)
 जन्नत का होगा इल्म तुझे,
 तू अपनी हस्ती मिटाये जा (२)

ना सोच, समझ खुदी के बगैर,
 क्या मकसद है तेरा, कैसे मंजिल पायेगा (२)
 हर मंजिल हासिल आयेगी,
 तू 'बेलौस' कदम उठाये जा ॥

Krishna Radha Krishna

Oh Krishna Radha Krishna
We remember you in the morning
When the whole nature is dancing
On the notes of your divine flute.

Lord of Lords, you are the joy that falls
From heaven, we're delighted by your presence
And we witnessing your play, joyful play,
Every moment we sing:
In the night when the universe opens,
When all nature is breathing
We can feel in our hearts flowing
Nectars of joy, dancing joy, playful joy
Every time every where, every moment we sing:
Oh Krishna, Radha Krishna
We remember you every day
You are the sweet voice that soothes
And the power that shows the day
On the way, all the way.....

Lords of Lords, we can see you in our Mother
You make us love each other
And become like one being, mighty being,
Every moment we sing:

Following you, all the planets are turning
All the stars are sparking
You just dance through the blue space
Playing, your divine flute, magic flute,
Divine flute, every time, every where
Every moment we sing:

Lords of Lords, in Shree Mother we know you, in Her presence
We feel you, by Her grace we can sing,
Every day, every moment we sing;
.... On the notes of your divine flute.....

लवकर येई श्री गणराया

लवकर येई श्री गणराया, सकलांची भेटी छाया,
नाचत नाचत, -

(३)

आले गणपती रे - पायी घागऱ्या वाजती ॥

अंगी शेन्दुराची उटी, माथा शोभतसे किरिटी,
केसर कस्तूरी लल्लाटी, हाती मोदकांची वाटी ॥
सहजयोगी पाही पाही

विठ्ठल गणपती, श्री निर्मल गणपती

दूजा नाही, दूजा नाही - पायी घागऱ्या वाजती
लवकर येई श्री निर्मल माता - सकलांची भेटी छाया,
लवकर येई श्री निर्मल गौरी - सकलांची भेटी छाया

लहरला सहजाचा पताका लहरला

लहरला सहजाचा पताका लहरला (२)

शुभ संदेश ह्या पिढीचा, भविष्यकाळाला (२)

लहरला सहजाचा पताका लहरला (२)

चंचल चित्त आता ठहरले (२)

सर्व गवसले जे जे हरवले (२)

वात्सल्याने प्रेम घास भरविला (२)

आले बाळस सहजाच्या बाळाला ॥१॥ (२)

शिवशक्तिचा वज्र कडाडला (२)

सैतानी संकल्प हा फसला (२)

भूतबाधेचा मनोरथ ढळला

शक्तिरूप दुर्गेचा प्रकोप प्रगटला ॥२॥ (कोरस)

दृश्यातूनही अदृश्य ही दिसले (२)

नयनातूनी भय पार विलोपले, (२)

तेजस्वी माँ स्वरूप प्रखरले (२)

आदिशक्तिचा हाच खरा दृष्टांत हो ठरला॥३॥ (कोरस)

शुभ संदेश ह्या पिढीचा, भविष्यकाळाला (२)

लहरला सहजाचा पताका लहरला (२)

लालां तो वी लाल माँ

लालां तो वी लाल माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ
लालां पाईयां लाल माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥१॥

गंगा यमुना माँ दे पैर जो धोवन, चरणां नू लग के खुश पड़ियाँ होवन
चरणां नू चुमन बार बार माँ, बांही लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥२॥

पैरां दे विछुए चम चम चमकन, ऐवें लगन जिवें जुगनू चमकन
पैरां दा करन श्रृंगार माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥३॥

माँ दे पैरां विच पायल बाजे, रूनझुन इस दी प्यारी लागे
घुंघरू वी नचन देंदे ताल माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥४॥

मत्थे दी लाल बिंदी चमकाँ मारे, लाल लाल रंग ओहदा लाटां मारे
सूरज दी लाली खांदी मात माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥५॥

कन्ना दे झुमके लैन हुलारे, झुमझुम करदे देण लिश्कारे
तिन्नों लोक झूमन नाल माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥६॥

मईया दे हत्थां विच मेहंदी रचे, रची रची मेहंदी किनी सोहनी लागे
मेहंदी दा रंग सूआ लाल माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥७॥

जद दियां चुड़ियाँ निर्मल माँ ने पाइयाँ, देवी देवते देण वधाईयाँ
नत नत करन प्रणाम माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां... ॥८॥

लाल लाल चोला माँ दे अंग बिराजे, शेर उत्ते बैठी मईया प्यारी लागे
चुनरी वी ओढे लाल माँ, बाहीं लाल लाल चुड़ियाँ, लालां ... ॥९॥

माँ तेरी जय हो (श्रीमाताजी द्वारा रचित)

माँ तेरी जय हो, तेरा ही विजय हो,
तेरे गीत से आज, जग ये जीवित हो (कोरस)
माँ तेरी जय हो,
तेरे गाँव के खेत भी गा रहे हैं, तेरे आज नगरों में जय जय की धुन है
तुम्हें देख के ये जगी दीन दुनिया, और वो गा रही है कि
माँ तेरी जय हो
जब आँखों में आँसू, जुबाँ पे थे छाले, ये दिल गा रहा था कि
माँ तेरी जय हो
चिताएँ हमारी गगन से भिड़ी थी, वहाँ लिख रही थीं कि
माँ तेरी जय हो
माँ तेरी जय हो, तेरा ही विजय हो,
तेरे गीत से आज जग ये जीवित हो
माँ तेरी जय हो

मावेना नयनी आनंद

मावेना नयनी आनंद, हृदयात सच्चिदानन्द
आनन्द किती हा मोठा, सौख्यास कधी ना तोटा,
कणाकणात निर्मलानंद, हृदयात सच्चिदानन्द ॥१॥

सगुणात माऊली आली, निर्गुणात जाणिव दिधली
निजरूपी रंगले ध्यान, जडतेत वाहे चैतन्य ॥१॥

लोभस हे निर्मलरूप, सत् चिदानन्द धन चरण
योग्यांचे अंतिम स्थान, मोक्षाचे साक्षात रूप ॥२॥

हृदयात जया ध्यायिले, चित्तात जया साठविले ।
पाहून रूप ते डोळा, आनन्द हृदयी जागियला ॥३॥

दैन्य दुःख पाप नाशियले, मोक्षाचे दार उघडले
धन्य झाली आमुची भक्ती, सापडली जीवन मुक्ती ॥४॥

माहुर गडावरी

माहुर गडावरी, माहुर गडावरी ग तुझा वास, भक्त येतील दर्शनास (२)
पिवळे पातळ ग, पिवळे पातळ बुट्टेदार, अंगी चोळी ही हिरवीगार
पितांबराची ग, पितांबराची खोवून कास, भक्त येतील दर्शनास
माहुर गडावरी, माहुर गडावरी ग तुझा वास, भक्त येतील दर्शनास (२)
बिंदी विजवर ग, बिंदी विजवर भाळी शोभे काप बाळ्या नि वेल झुबे
हिच्या नथेला - ग, हिच्या नथेला हिरवे घोस, भक्त येतील दर्शनास
माहुर गडावरी, माहुर गडावरी ग तुझा वास, भक्त येतील दर्शनास (२)
सरी ठुशी नी ग, सरी ठुशी नी मोहन माळ, जोडवी मासोळ्या पैजण चाळ
पट्टा सोन्याचा ग, पट्टा सोन्याचा कमरेला, हाती हिरवा चुडा शोभला
भक्त येतील दर्शनास (२)
माहुर गडावरी, माहुर गडावरी ग तुझा वास, भक्त येतील दर्शनास (२)
जाई जुईची ग, जाई जुईची आणली फुले भक्त गुंफिती हार तुरे
हार घालीते ग, हार घालीते अंबे तुला, भक्त येतील दर्शनास
माहुर गडावरी, माहुर गडावरी ग तुझा वास, भक्त येतील दर्शनास (२)

महाराष्ट्र देशा

महाराष्ट्र देशा जागृत करूया, कवने करून ।
जागृती मोहीम हाती घेऊया, विनम्र होऊन ॥ (कोरस × २)
श्री गणराया प्रणाम अमुचा, शुद्ध मती द्यावी ।
आदिशक्तीला प्रणाम अमुचा शुद्ध बुद्धि द्यावी ॥(२)
सहजयोग्यांची विनंती ऐका, तुम्ही योगीजन ।
जागृती मोहिम हाती घेऊया, विनम्र होऊन ॥१॥
कुण्डलिनीला जागृती येता, ब्रह्मशक्ति वाहते ।
ब्रह्मशक्तीच्या कृपाप्रसादे, असुरी शक्ती जळते । (२)
शुद्ध बुद्धीचा प्रसार करूया, निर्मल होऊन
जागृती मोहिम हाती घेऊया, विनम्र होऊन ॥२॥
ज्योतीमधुनी ज्योत उजळू या प्रेम भावनेने
सहजयोग्याची प्रार्थना आता, शुद्ध भावनेने ॥ (२)
आदिशक्तीचे मंत्र फुलवू, या जागृत होऊन ।
जागृती मोहीम हाती घेऊया विनम्र होऊन ॥३॥

मातेचे गोंधळी

गोंधळी आम्ही गोंधळी	(२)
आईचे गोंधळी आम्ही मातेचे गोंधळी	(२)
गोंधळी आम्ही गोंधळी	(२ कोरस)
झाला धर्माचा बाजार, उठला गर्वाचा आजार	(२)
लेकरं बघून बेजार, आई आली धरतीवरी	(२)
माया आईची उठली, डोकी शत्रुंची फुटली	(२)
दोरी पापाची तुटली, शक्ती आली धरतीवरी	(२)
स्थान देवाचं जाणलं, आदिशक्तीला मानलं	(२)
तिच्या पुजेला बांधलं, दवंडी पिटली गावभर	(२)
गाव उलटून आला सारा, घेण्या आईचा भंडारा	(२)
तिनं केला हो इशारा, ईज आली अंगावर	(२)
हितं नाही खेल खंडुबा, करा फक्त तोबा तोबा	(२)
हितं देवाशीच घरूबा, मांडा त्याचाच संसार	(२)
नाही सांगत आता फार, जे आलं ते झालत पार	(२)
करा भक्तिचा बिगार, घ्या हो मोक्षाचा पगार	(२)

महामाया महाकाली

महामाया, महाकाली, जय शेरॉवाली, भवानी निर्मला माँ
निर्मल माँ, निर्मल माँ....

नाम निर्मला शक्तिदाता, माता पिता और सखा विधाता
करे सन्तों की रखवाली, जय शेरॉवाली...

सारा विश्व तेरे गुण गाये, प्रेम पक्व श्रद्धा सुमन चढ़ाये
बने सत्य साधना के पाली, जय शेरॉवाली..

चरण कमल की बने खड़ाऊँ, घृणित भाव मिटे जग माऊँ
इस जग गुलशन की माली, जय शेरॉवाली...

हमारी मंजिल तेरा द्वारा, तेरा आश्रय मैया सत्य सहारा
अब तू ही तू प्रतिपाली, जय शेरॉवाली....

माऊलीने ठोठाविले दार

आऽ आऽ आऽ

आऽ आऽ आऽ

माऊलीने ठोठाविले दार (२)

होऊनी जा आता गड्या पार (२)

सहजाच्या बंधनात, चैतन्य लहरींचा (२)

निरंतर होई तुजवर वार

होऊनी जा आता गड्या पार ॥१॥ (२)

चित्ताच्या अश्वाला, लगाम दे मनाचा (२)

होशिल मग सवाई घोडेस्वार

होऊनी जा आता गड्या पार ॥१॥ (२)

बाह्य दृष्टीला आता, तू आत ओढूनी घे (२)

स्वकर्माचा हो तू साक्षीदार

होऊनी जा आता, गड्या पार ॥२॥ (२)

ना मी गुन्हेगार, ना तू कोणाचा गुन्हेगार

अथांग सहजाला भरती फार

होऊनी जा आता गड्या पार ॥३॥ (२)

माऊलीने ठोठाविले दार (२)

होऊनी जा आता गड्या पार (२)

सहजाच्या बंधनात, चैतन्य लहरींचा

निरंतर होई तुजवर वार

होऊनी जा आता गड्या पार (२)

आऽ आऽ आऽ,

आऽ आऽ आऽ

Mataji, Mataji

Mataji, Mataji

Your face shines like a thousand Suns

You have given us,

More than we could ask for,

Bliss and peace and harmony,

Mataji, Mataji...

मेरी माँ पूनम का चाँद

मेरी माँ पूनम का चाँद जी....
माथे पे बिंदिया चमक रही...
हमने माता को मुकुट पहनाया...
उसे पे टीका... करे कमाल... माथे पे...
हमने माता को हार पहनाया,,
उस पे मोती... करे कमाल... माथे पे...
निर्मल माँजी को चुड़ियाँ पहनाई...
माँ के हाथों में चुड़ियाँ पहनाई...
उस पे मेहंदी... करे कमाल... माथे पे..
सहजी बहनों ने साड़ी पहनाई...
उस पे चुनरी... करे कमाल.. माथे पे...
माँ के पैरों में पायल पहनाई...
उस पे बिछवे....करे कमाल... माथे पे

माँ हम पे कृपा करना

माँ हम पे कृपा करना, माँ हम पे दया करना
वैकुंठ तो यही है, हृदय में रहा करना
ढूँढ़ेंगे राग बनकर, वीणा के तार बनकर
बस जाओ श्री माँ निर्मल, हृदय में प्यार बनकर
हर रागिनी की धुन पर, स्वर बन के उठा करना
माँ हम पे...

हम पार हो गये हैं, लेकर के सहज भक्ति
अपनी शरण में रखना, माँ निर्मल आदिशक्ति
बन सहस्रार धारा, प्राणों में बहा करना
माँ हम पे....

नाचेंगे मोर बनकर, माँ निर्मल तेरे द्वारे
माँ निर्मल छाई रहना, बन कर के मेघ तारे
अमृत की धार बन कर, प्यासों पे दया करना
माँ हम पे....

माँ निर्मल प्यार का सागर है

माँ निर्मल प्यार का सागर है, हम इसमें डूबते जाते हैं ।
हम नाव सहज की चढ़ बैठे, भवसागर को तर जाते हैं ॥

भोलेपन में आकर के, गणेश तत्त्व को पाते हैं ।
चैतन्य में रहते हुए हम, सच्चिदानन्द हो जाते हैं ॥
हम नाव सहज...

शुद्ध विद्या को पा करके, ब्रह्म तत्त्व को ध्याते हैं ।
इस ज्ञान के सागर में डूबे, हम स्वयं गुरु हो जाते हैं ॥

निर्विचार में आकर के, परमानन्द पाते हैं ।
ना गम ही रहे ना खुशी रहे, हम बंधन मुक्त हो जाते हैं ॥

सामूहिकता में आकर के, श्री माताजी को ध्याते हैं ।
महान माँ के चरणों में हम, खुद को समर्पित पाते हैं ॥

हम तन मन से माँ के होकर, खुद अपने को माँ में खोकर ।
हम नूर हैं श्री माँ निर्मल के, हम स्वयं लीन हो जाते हैं ॥
हम नाव सहज...

मन लागो मेरो यार

मन लागो मेरो यार फकीरी में, जो सुख पायो माँ के भजन में
वो सुख नाही अमीरी में

सहज नगर में रहनी हमारी, भली बन आयी सबूरी में
मन लागो....

हाथ में कुँडी बगल में सोटा, चारों दिशा जागीरी में
मन लागो....

भला बुरा सबका सुन लीजै, कर गुजरान फकीरी में
मन लागो....

कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिले सबूरी में
मन लागो...

माँ दर्श दिखा देना

माँ दर्श दिखा देना
भुलयां भटकयां नू, माँ राह ते ला देना ॥
तेरी छवि निराली ऐ ।
सब ते मेहर करे, माँ मेहरां वाली ऐ ॥
तेरे भरे भंडारे ने ।
झोलियां भर देंदी, जेहड़े आये तेरे द्वारे ने ॥
मैं तन मन वार देवां ।
सब कुछ देन वालिये, मैं तैनू हुण की देवां ॥
माँ प्यार सिखांदी ऐ ।
माँ तेरे आंचल हेठ सारी दुनिया समांदी ऐ ॥
तेरा प्यार अनोखा ऐ ।
सारे दुख कट दित्ते, हुण जीणां सिखाऐ ।
तेरी महिमा मैं गांदी रहवां ।
हर इक श्वास दे विच, तेरी झलक मैं पाँदी रहवां ॥

माँ निर्मला

माँ निर्मला, तुम देवी निर्मला (३)
तुम निराकुला, निष्पापा, देवी...
तुम ही निर्गुणा, तुम ही निर्ममा (३)
तुम ही निरीश्वरा, तुम ही निरागा, देवी...
तुम ही चण्डिका, तुम ही शुभकरी (३)
सत् चित आनन्द रूपिणी, देवी...
आदिशक्ति तुम, पराशक्ति तुम
महाशक्ति तुम, तुम परमेश्वरी, देवी...
तुम ही विमला, तुम ही वरदा (३)
विश्व निर्मला धर्म दायिनी, देवी...

मधुर सहज वीणा

मधुर सहज वीणा बजाए चला जा, जो सोए हैं उनको जगाए चला जा ॥धृ॥
कुकर्माँ के कीचड़ में जो फँस रहे हैं, कुविद्या जगत में जो फैला रहे हैं।
उन्हें सहज की बातें बताए चला जा, मधुर सहज वीणा... ॥

निराकार ब्रह्म है सब में समाया, सभी फिर हैं अपने न कोई पराया,
ये सन्देश घर घर सुनाए चला जा, मधुर सहज वीणा.... ॥

समझ के जो चंदन लगा धूल बैठे, पड़े माया में स्वधर्म भूल बैठे ।
उन्हें तू सहजी बनाए चला जा, मधुर सहज वीणा... ॥

माताजींच्या सुता

माताजींच्या सुता, तुला चैतन्याचे वरदान ।
एक मुखाने बोला, बोला जय जय श्री गणेश, भगवान ॥धृ॥
आले किती, गेले किती, भाग्य बनवून
माताजींच्या कृपा प्रसादे, झाले हो पावन ।
सहज ज्ञानाची ही गुटी देई संजीवन ॥१॥
माया मोठी शक्तिवान, अवगुणाची खाण ।
निर्मल मातेने तिला, केले हो हैराण ।
ऐकून सहजाचे ज्ञान, करा अहंकाराचे दहन ॥२॥
कलियुगाचा अंत हा, समिप आला जाण ।
मुक्त होई आता तू, सर्व बंधनापासून ।
जीवन मुक्तीचे, माता देई वरदान ॥३॥
धन्य धन्य निर्मलादेवी, तुमची ही किमया ।
शिकविले आम्हाशी तुम्ही, पवित्र राहावया ।
माताजींची स्मृती ठेवा, कंठी येती प्राण ॥४॥
गावो गावी संदेश देण्या करा हो प्रयाण ।
चैतन्य शक्तीने करा, विश्वाला प्रणाम ।
सेवा करा छान छान, धन्य करा जीवन ॥५॥
मूलाधारी गणेश हा, सहस्रारी आला ।
मानव धर्म त्याने, स्थापन केला ।
सर्व सहजी बनती, देवही महान ॥६॥

माँ तेरे निर्मल प्रेम को

माँ तेरे निर्मल प्रेम को, मेरा शत शत प्रणाम
तुझको तेरा हर बच्चा प्यारा, रावण हो या राम ॥६॥

राम ने पाप निवारण करने

पापी रावण को संहारा

रावणरूपी पाप तूने हटाकर, हमारा राम संवारा ॥१॥

पाप से घृणा, पापी से प्यार

ये ईसा की शिक्षा है

प्यार से पापी को पुनीत कर दो, ये तेरी दीक्षा है ॥२॥

राम रहीम श्याम शमीम

दोनों ही तेरे आँखों के तारे

फिर ये जगत में भेद भाव कैसा, सब हैं तेरे दुलारे ॥३॥

तू प्यार का सागर माँ,

फिर भी मानव क्यों प्यासा है

प्यासे जगत को प्यार से भर दो,

ये मेरी अभिलाषा है, मेरी ये अभिलाषा है ॥४॥

माता की ममता को दिल से ना भुला देना

माता की ममता को, दिल से ना भुला देना ।

जब कष्ट पड़े कोई, माता को सुना देना ।

है माँ महाशक्ति, दिया जन्म नया भाई ।

इस पाखंडी युग में, महादेवी माँ आई

हुए धन्य भाग भाई अब माँ की शरण लेना ।

सब पिछले पाप कटे, अब सत्य कर्म पाए ।

ना छोटा कोई बड़ा है, सब इक माँ के जाए ।

अब माँ की आज्ञा पाके, सिर पे बन्धन लेना ।

कुण्डलिनी की पूजा कर, जो मूलाधार समाई ।

वो अजर अमर देवी है, वेदों ने भी बतलाई

देवों ने भी महिमा गाई, भज खुद भी दिन रैना ।

निराकार में ध्यान लगा, देवों को शीश झुका के ।

खुदकी शक्ति पहचान, माँ के चरण कमल में जाके ।

निरानन्द सागर में नहा के, निर्मल नगरी में रहना ।

माता मेरी पत रखियो सदा श्री माताजी

माता मेरी पत रखियो सदा श्री माताजी

हम तेरे द्वारे पे आए आस लगाकर

दया कर माता दया कर (२)

हम आए आस लगाकर

माथे पर है मृगमद का टीका

रखती है माता रानी ध्यान सभी का

कोई नहीं हमरा तेरे सिवा श्री माताजी

हम तेरे द्वारे पे आए आस लगाकर (दया कर माता दया कर)

रूप निराला तेरी बात निराली

तू है आदिशक्ति शेरॉवाली

कोई नहीं मैया तुझसे बड़ा श्री माताजी

हम तेरे द्वारे पे आए आस लगाकर (दया कर माता दया कर)

कुण्डलिनी मैया सहज जगाया

जन्म- जन्म का कष्ट मिटाया

नैया मेरी मैया पार लगा श्री माताजी (शेरॉवालिए, महारानिए)

हम तेरे द्वारे पे आए आस लगाकर (दया कर माता दया कर)

मरणच मेले

मरणच मेले प्रभू माझे विजयी झाले

पश्चिम नटली पूर्वही नटली

वर दूतांची सैन्ये भरली

अनुरागा मध्ये प्रीती रमली, हो... ओ...

मरणच रडले प्रभू माझे...

शव गरताची हसू लागली

निसर्गाने फुले उधळली

संत महंते शिरे नमवीली हो...ओ..

भक्तही नमले प्रभू माझे...

नव बाळाला नमन करुया

नव सुमनांची माळ अर्पूया

गाणी मनोहर यास गाऊया हो... ओ..

हृदयी मम बसले प्रभू माझे...

मन कुन तो मौला

मन कुन तो मौला
आ आली उन मौला मन कुनतो मौला
दारा दिले दारा दिले दारे दानी
तुम तुम तानाना नाना नानो नाना रे
या अली या अली याला याला रे
याला याला याला याला

अपनी छबी बनाई के मैं पी के पास गई
जब छब देखी पी की तो अपनी भूल गई
छाप तिलक सब छीनीरे मोसे नैना मिलाय के
प्रेम वटी का मदिरा पिलायके (मोहे)
मतवारी कर दीनीरे मोसे नैना मिलाय के
बलि - बलि जाऊँ मैं तेरे रंग रेजवा
अपनी सी रंग दी रे मोसे नैना मिलाईके
हरी हरी चुड़ियाँ गोरी - गोरी बहियाँ
बाँह पकड़ हर लीनी
खुसरो निजाम के बलि - बलि जईये
मोहे सुहागन की नी रे...

माँ दर तेरे आया हूँ

माँ दर तेरे आया हूँ, अपना ही अब लेना ।
जन्मों का प्यास हूँ, मेरी प्यास बुझा देना ॥
माँ दर....

तुम दयाका सागर माँ, मैं तो एक भिखारी हूँ । (२)
मेरी बाँह पकड़ करके, अब पार लगा देना ॥

माँ दर....

करुणामयी माँ हो तुम, इतनी तो कृपा करना । (२)
जैसा हूँ वैसे को, शरण अपनी में ले लेना ॥

माँ दर...

कुछ ऐसा कर दे माँ, चित्त रहे तुझ चरणन में । (२)
दीदार करूँ हर पल तेरा, इन प्यारी अखियों से ॥

माँ दर...

माँ के दर पर आए है

माँ के दर पे आए हैं, माँगते हैं दान हम,
सुन लो माँ जी विनय हमारी, माँगते हैं ज्ञान हम,
है हमारा नम्र निवेदन, शुद्ध विद्या दीजिए
आत्मा का प्रकाश कर माँ, दूर अंधेरा कीजिए
आए हैं तेरी शरण माँ, माँगते वरदान हम... !

शुद्ध विद्या पाएं तो आत्म साक्षात्कार हो
चैतन्य लहरें बहें, चित्त निर्विचार हो
आए हैं तेरी शरण माँ, करने अमृत पान हम...

मंगलदायिनी माँ निर्मल के, चरण कमल में शीश झुकाएँ
तन मन करके माँ को अर्पण, सत्चित् आनंद रूप को पाएँ
आए हैं तेरे शरण माँ गाते तुम्हारे गान हम...

माताजी सबसे महान

माताजी सबसे महान, शक्तियों की हैं प्रमाण ।
ब्रह्म चैतन्य हुआ साकार, माँ के रूप में है ये काल ॥
देवी देव सभी बसें, मध्य में देह के ।
नमन कर तब ही मिलें, विश्व निर्मल धर्मताज ॥
माताजी सबसे महान...

माँ से ही पाया हमने, अपना आत्म साक्षात्कार ।
माँ कृपा से हम हुए हैं पार, चित्त को मिल गया प्रकाश ॥
माताजी सबसे महान...

हम लोगों को चाहिए, सामूहिक बन कर रहें ।
प्रेम से संगठन बढ़े, छूट जाए विष का भाव ॥
माताजी सबसे महान...

माँ को तुम पहचान लो, अवतरण विष्णु हैं वो ।
रूप कल्की धारण करें, हो जाए जब धर्म नाश ॥
माताजी सबसे महान, शक्तियों की हैं प्रमाण ।
ब्रह्म चैतन्य हुआ साकार, माँ के रूप में है ये काल ॥
माताजी सबसे महान....

मैं बार बार माता

मैं बार बार माता, तेरे गीत ही गाता हूँ ।

तेरे चरणों पर आकर, अपना शीश नवाता हूँ ।

जब से मैं तेरे दर पे, आया हूँ मेरी माता

दुःख दूर हुए ऐसे, जैसे ना हो कोई नाता ॥ मैं बार बार..

काम क्रोध और लोभ, आये न मेरे आगे ।

जब से हुई कृपा तेरी, सब दूर ही दूर भागे ॥ मैं बार बार...

ऐ माता मेरी निर्मल, तू मन में बसी रहना ।

तू छोड़ के घर मेरा, कहीं दूर मत जाना ॥ मैं बार बार...

तू दिल मे बसी सबके, तू दिल में बसी रहना ।

जो ध्यान तेरा लावे, उसे दर्शन दे देना । मैं बार बार...

है अर्ज यही माता, तू इसको कबूल करना ।

मुझे निर्विचार करके, सदा सहस्रार में रहना ॥ मैं बार बार...

मैया आदि मिलादे परम प्यारा

मैया आदि मिलादे परम प्यारा

सँवर जाए जीवन मेरा

भवसागर में चित्त ये डोले, दूर बसा है किनारा

सहज की नैय्या चढ़ गए हम, उसे पार

तू अब पहुँचा दे

उठ उठ तू अब कुण्डलिनी माँ

षडरिपु मुझे ललकारे

विनाश करके षड्रिपुओं का, हृदय पवित्र बना दे

अहंकार से पीड़ित जग में, सब दूर है अंधियारा

आज्ञा भेदन कर दिया, अब माँ सतयुग उदय दिखा दे

आदिशक्ति माँ तूने कृपा कर, ब्रह्मरंध्र खुलवाया

सहस्रार भी खिल गया अब तो, परम से मिलन करादे

माता पहाडां वाली

माता पहाडां वालडिये, ओ ओ...
लिख लिख चिट्ठियाँ पांदी तेरी सौंह
लिख लिख चिट्ठियाँ पांदी, कि चली पो मन्दरां जो...
मंदरे दे अंगणे च पिपले दा बूटा,
पतरां रूण झूण लाई तेरी सौंह
पतरां रूण झूण लाई कि चली पो मन्दरां जो..
माता पहाडां....

नंगे नंगे पैरी माता अकबर आया
सोने दा छत्तर चढ़ाया तेरी सौंह
सोने दा छत्तर चढ़ाया, कि चली पो मन्दरां जो..

छत्तरे च निकली माता ज्वाला,
माणिये दा मान घटाया, कि चलो पो मन्दरां जो..

माता पहाडां वालडिये ओ...
पान सुपारी माता ध्वजा नारियल, पहलड़ी भेंट चढ़ाई तेरी सोहं..

सो सठ पैड़ी मात चढ़ि के आई

जै जै कार बुलाई, कि चली पो मन्दरां..
कि आई गई मन्दरां जो... कि आई गई..

नमोस्तुते

नमोऽस्तुते, नमोऽस्तुते (X३ कोरस)
श्री निर्मला देवी, नमोऽस्तुते

महन्मंगले, हे सुरविमले, करी मला निष्पाप
सम्यक्, ज्ञाने गुरु स्वतः चा, होता मज अनुताप
निर्भय बनवी मजला इतुका, साक्षी मीच स्वतःचा
सकलांमध्ये असता तरीही, रज मी अणुरेणुचा
क्षमाशील तू बनवी मजला, शरण शरण माते ॥१॥

तुझ्या कृपेने बाळांमधली, ऋजुता लाभो मला
तुझ्या कृपेने ज्ञानी होऊनी, बघु दे दैवी लीला
तुझ्या कृपेने तृप्त तृप्त मी, उदात्त अन्तर्यामी
तुझ्या कृपेची देत जागृती, दिव्य शक्ति ती मी
सर्वस्वाचे देऊन लेणे, करी धन्य माते ॥२॥

तूच खरोखर या विश्वाची, कर्ती अन् करविती
तूच खरोखर हरी आपदा, देऊन धन संपत्ती
समर्थ तूचि समर्थ करी मज, दिव्यत्वाची मूर्ती
सर्व मंगला युगंधरा तू, तूचि आदिशक्ति
तुझ्या ठायी मज लाभो देऊन, सहजयोग माते ॥३॥

नमामि श्री गणराज दयाल

नमामि श्री गणराज दयाल, करत हो भक्तन का प्रतिपाल ।
नमामि श्री गणराज दयाल ।

निशदिन ध्यान धरे जो प्राणी, हरे सकल भव जाल ।
जनम - मरण से होत निराला, नहिं लगती कर माल ॥

लंबोदर गजवदन मनोहर, गले फूलों की माल ।
रिद्धि - सिद्धि चमर दुलावे, शोभत से दुखहार ॥

मूषक वाहन त्रिशूल परशूधर, चन्दन तिलक विशाल ।
ब्रह्मादिक सब ध्यावत तुमको, अर्जि सुनो दयाल ॥

नमो नमो मारिया

नमो नमो मारिया, ओ ओ ओ, (२ कोरस)

नमो नमो मारिया

दुताचा नमस्कार, तुझ्या पोटी जन्म घेई प्रभू तारणहार ॥१॥ (२)

सर्व स्त्रियांमध्ये आहे तूच जगात धन्य,

देव बाप झाला आहे तुजला प्रसन्न

मारियेने केला, ओ ओ ओ,

मारियेने केला देवपुत्राचा स्वीकार

तुझ्या पोटी जन्म घेई, प्रभू तारणहार

॥१॥

(२)

जोसेफाच्या मनामध्ये संशय येई,

निष्कलंक मारिया का गर्भवती राही

धर्मपत्नी ओ ओ ओ, धर्मपत्नी सोडण्याचा योजिला विचार

तुझ्या पोटी जन्म घेई प्रभू तारणहार

॥२॥

(२)

स्वप्नी जोसेफाच्या येई देवाचा दूत, निष्कलंक मारियेस देऊ नको दोष

गुण्या गोविंदाने हा नांदे परिवार, ओ ओ ओ

तुझ्या पोटी जन्म घेई प्रभू तारणहार

॥३॥

निर्मल ज्योति

वन्दन करते माँ निर्मल का, माँ अपनी है निर्मल ज्योति

माँ निर्मल ही सूर्य चन्द्रमा, माँ निर्मल ही सीप का मोती

नए प्रभात की नई किरण बन,

कलियुग में हुआ माँ का आगमन,

चहुँदिस फैला प्रेम उजाला, लाई संग माँ प्रेम की ज्योति...

कर जोड़े और शीश नवाकर

माँ के आंगे हाथ फैलाकर

माँगे माँ से दान ज्ञान का, करो निरंजित ज्ञान की ज्योति...

माँ निर्मल के गीत मैं गाऊँ

माँ की कृपा में खुद को पाऊँ

कैसे पाते आत्मतत्त्व को, प्रगट न गर माँ निर्मल होती...

निर्मल तेरे चरणों में

निर्मल तेरे चरणों में, बहती चैतन्य धारा (२)

त्रिलोक की हो निर्मल, त्रिलोक है तुम्हारा (२)

निर्मल तेरे चरणों में....

ब्रह्मा तुम्हें मनायें, विष्णु तुम्हें ध्यायें
(२)

डमरू हैं शिव बजायें

किया विश्व का उद्धार, निर्मल तेरे....

बिंदिया में गंगा बहती, बिंदिया से जमुना बहती (२)

बिंदिया से सूर्य चंदा

(२)

देखें ब्रह्माण्ड सारा, निर्मल तेरे....

आये हैं सहजी सारे, निर्मल तुम्हें पुकारें (२)

चित्त में तुम्हें बिठाकर

लें मोक्ष का नजारा, निर्मल तेरे....

निर्मला किती वर्णावी

निर्मला किती वर्णावी तुझी ग स्तुती

मानवाला देतेस देवाची अनुभूती ॥१॥

मुरलीच्या स्वरात तू, हृदयस्पंदाच्या लयीत तू

आनंदाच्या सरीत तू, सागराच्या भरतीत तू ॥१॥

प्रेमाचा सापेक्ष तू, धर्माचा आपेक्ष तू

कर्माचे मोक्ष ही तू, मर्माचे लक्ष ही तू ॥२॥

मानवतेचे तत्त्व तू, निर्गुणाचे सत्व तू,

कर्तृत्वाचे कर्तृत्व तू, जीवनाचे अस्तित्व तू ॥३॥

संगीताचा सुर तू, प्रेमाचा महापूर तू

देण्यासाठी आतुर तू, आनंदाचा सागर तू ॥४॥

निर्मला नाम अति न्यारा है

निर्मला नाम अति न्यारा है,
निर्मल प्रेम न्यारा से न्यारा है

२ (कोरस)

माता कहे पुत्र मेरा है ।
पिता कहे जीवन धारा है ।
न माता का न पिता का,
बस निर्मल तत्त्व सहारा है, निर्मल नाम.....

गुरू कहे शिष्य मेरा है
शिष्य कहे बस तेरा है
न ये गुरु का न शिष्यों का
बस गुरु तत्त्व का फेरा है, निर्मल नाम....

कहे निर्मल माँ, सुनो भाई सहजी
दुनिया रैन बसेरा है
इस दिल में आ बस जा मेरे
यहीं पे तेरा डेरा है, निर्मल नाम....

निर्मल चादर ओढ़ के

निर्मल चादर ओढ़ के, सहजी शरण में माँ के आये
मन में माँ के दर्शन कर के, मन ही मन हर्षायें

माँ ने भेजा जग में हमको, निर्मल दे कर काया
आकर के सहज में हमने, इसका मान बढ़ाया
जन्मों की ये पुण्यायी है, माँ के दर्शन पायें

निर्मल वाणी पाकर माँ से, नाम है माँ का गाया

अन्तर मन में माँ को देखा, माँ का ध्यान लगाया
मन वीणा की तारें झंकृत, सुन्दर गीत सुनायें

इन पैरों से चलकर, माँ के मन्दिर हम हैं आये
जहाँ जहाँ हो पूजा माँ की, दर पर शीश नवायें
हम श्री माँ को क्या करें अर्पण, स्वयं लीन हो जायें

निर्गुणाचे भेटी

निर्गुणाचे भेटी आलो सगुणासंगे
तव झालो प्रसंगी गुणातीत
मज रूप नाही नाव सांगू काही
झाला बाई काही बोलू नये ॥१॥

बोलता आपुली जिव्हा पै खादली
खेचरी लागली पाहता पाहता ॥२॥

म्हणे गोरा कुंभार, नाम्या तुझी भेटी
सुखा सुखी मिठी घडली कैसी ॥३॥

ना तो छलके न घटे

ना तो छलके न घटे जामे इशरत कभी, (कोरस)
ऐसे तवज्जों का तलबगार हूँ
मोहब्बत की ये लौ न भड़के न बुझे,
इस मुनव्वर तवज्जो का तलबगार हूँ, न छलके....

न रहे दुख के आँसू न रहे दर्दे गम,
खुशी से ऐसे रहजनी का तलबगार हूँ
हो जाए नफरत को नफरत से ही नफरत
ऐसे पशेमानी का तलबगार हूँ, न छलके....

महके प्यार ही प्यार जिस्म से,
ऐसे दिल की धड़कन का तलबगार हूँ।
हवस खुदनफादी जहाँ पर हो महरू
मैं ऐसे ही मस्कन का तलबगार हूँ, न छलके....

उफक जिसकी हद हो, आसमां जिसका कद हो
मैं ऐसे आला सहजी का तलबगार हूँ
इबादत माँ बुत की बेगरज यानी बेलौस
मैं ऐसे खुदनिसारी का तलबगार हूँ, न छलके....

नेत्र खोल

नेत्र खोल चल माता की नगरिया
जहाँ क्षमा मिले, तेरे पाप कटें
तुझे मोक्ष मिले, मोक्ष मिले ।

सहस्रकमलदल महाशक्ति विराजे, संत करे जयकार हो
जो मानव निर्मलाजी पूजें, हो जाएँ भव से पार हो
ज्ञान भरे सहजयोगदायिनी, विश्व निर्मलामात हो ।

मृदभाषी सत्कर्म करे जा, कर पक्का विश्वास हो
खुदगर्जी छल कपट छोड़ नर, करले आत्मविश्वास हो
करूणामयी की तेरे घट में नगरिया, काहे मनवा उदास हो

पूर्ण हृदय से जो निर्मला टेरे, सुनती माता पुकार हो
संपूर्ण विश्व की जननी माता, सबसे करती प्यार हो
जोत जले जिस घट में माँ की, महापाप कट जात हो

अवलोकन कर अन्तरात्मा, मिले महासुख भ्रात हो
हीरा जीवन का है सार यही, माँ निरानन्द साक्षात हो,
सहजयोग माँ की नगरी पथ है, कर शुभयात्रा हे तात् हो ।

निर्गुण निर्मल

निर्गुण निर्मल निष्पापा माँ, है हृदय की ये अभिलाषा माँ
बहे मन से प्रेम रस धार, जय बोले अष्ट भवानी की

अज्ञानी पंडित बना दिये, माँ ने बुझते दीपक जला दिये
की ममता की बौछार, जय बोले...

माँ ने सोई शक्ति जगाई है, अमृत की धार बहाई है
कर दिया भेदन सहस्रार, जय बोले....

माँ चरण शरण रज पाई है, घट विच माँ छवि समाई है
हुआ निर्बल का उद्धार, जय बोले...

चैतन्य आनन्द सुहाना है, यह शुभ संदेश बताना है
करे प्रतिज्ञा नर नार, जय बोले....

निर्भय निर्गुण

निर्भय निर्गुण धुन रे गाऊँगा
मूल कमल दल आसन बांधूजी, उल्टी पवन चढ़ाऊँगा ।
मन ममता को घेर कर लाऊँगी, पाँचो तत्व मिलाऊँगा ॥

पाँच पच्चीसों पकड़ मंगाऊँगी, एक ही डोर उड़ाऊँगा ।
इंगला पिंगला सुषुम्ना नाड़ी जी, त्रिवेणी पर नहाऊँगा ॥

शून्य शिखरपर अनहद बाजेजी, राग छतीस सुनाऊँगा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधोजी, ठीक निशाना धुनाऊँगा ॥

निर्मल माँ, जगदंबे माँ

निर्मल माँ जगदंबे माँ, सांद्रकरुणा विजय माँ
आदिशक्ति भगवती, निर्मला माँ
सहस्रारे महामाये, कलियुग अवतार लिया

द्विज बने हम, ये माया तेरी, आत्मा बने हम, हो कृपा तेरी
सहज घटित योग हुआ, आत्मबोध जन को दिया ॥१॥

परमचैतन्य का सावन, पूर्ण बोध का सावन,
निर्मल शक्ति का ये सावन, आत्मादर्शन जो हुआ
सीमित बुद्धि का त्याग किया ॥२॥

निर्विचार का तूने स्वर्ग दिया, निर्विकल्प में
चित्त भी स्थिर ये किया,
परमेश्वर पाने का, मोक्ष मार्ग सहज दिया ॥३॥

नानक मोहम्मद

आदिगुरु जनक लाओत्से (२), सॉक्रेटिस साँई निर्मल माई । २

नानक मुहम्मद इब्राहिम (४), मोजेस झरातृष्ट कनफ्यूशियस ॥

आदिगुरु जनक लाओत्से, सॉक्रेटिस साँई निर्मल माई ॥

नानक, मुहम्मद, इब्राहिम २ (कोरस)

भवसागर में कुंडलिनी माँ, आदिगुरु बने गंभीरा २

भव पार करे बोध दिलाए, गुरुपद दायिनी निर्मला माई ॥ नानक मुहम्मद...

धन्य धन्य भाग्य हमारे, मिली हमें आत्मज्ञान सही मातृकृपा । २

हा, विश्व निर्मला धर्म सिखाए, योगदायिनी निर्मला माई ॥ नानक मुहम्मद..

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की, अबोधिता है आदिगुरु । २

दत्तात्रेय है मात्रेया है, त्रिगुणात्मिका निर्मला माई ॥ नानक मुहम्मद.....

निर्मला श्रीधरा कंस चाणूरमर्दना

निर्मला श्रीधरा, कंस चाणूरमर्दना

शंखचक्र गदा हस्ते, गरूडारूढ़ आए पधार

निर्मला कुबेरा, दुःखदारिद्र्य भंजना ॥धृ॥

हितकारी तेरा प्यार, हितकारी तेरा वार

हितकारी है संहार, करे जग का तू उद्धार

बन विष्णु, बन कल्कि, लिए तूने दश अवतार, निर्मला x२

किया सबको तूने पार, तू ही जग की पालन हार

नित ध्यान तेरा जो किए, रोगों से विमुक्त हुए, निर्मला

तू है धनवंतरी कमाल, किया सूक्ष्मतम उपचार

कौमार्य का रक्षक तू, विष्णुमाया का बंधू तू (निर्मला)

तू है हंसा बड़ा महान, नीरक्षीर विवेक आधार

नमन करे बारम्बार

नमन करें बारम्बार, श्री माताजी
गायें मिल जय जयकार, श्री माताजी (२)

यमुना मैया आनंद हिलोरे,
बहत सुगन्ध बयार, श्री माताजी

भूमि देवी दे पुष्प प्रेम से
स्वागत हेतु न्योछार, श्री माताजी

चहुँ दिश गूँजत मंगल शहनाई,
अंबर गुलालन फाग, श्री माताजी

अनंत आशीष से झोली भर दी,
कृपा परम अपार, श्री माताजी

चरण कमल में आश्रय सदा
झरत चैतन्य फुहार, श्री माताजी

बलि-बलि जावत सकल सहज जन,
धन धन हमरे भाग, श्री माताजी

अटके भटके जन को तारे,
दियो अदभुत अधिकार, श्री माताजी

श्रद्धा भक्ति बढ़े निरन्तर
बढ़े सहज परिवार, श्री माताजी

सब जग हो जाए पार श्री माताजी
गद् गद् सब बलिहार, श्री माताजी

Nirmala Ma

Come holy spirit, with us be,
Fill us with joy and purity,
Shri Adi shakti Nirmala Ma
We bow to thee, we bow to thee.

Power of beauty you create,
A path in us to heaven's gate.
Shri Mahasaraswati Nirmala Ma
We bow to thee.....

Come Holy Mother, with us,
Fill us with peace and harmony,
Shri Shanti Rupena Nirmala Ma
We bow to thee.

Our lives are full of joy and grace,
Our heart is now your steady place
Shri Shivashakti Nirmala Ma
We bow to thee....

Please holy power through us flow,
Then godly ways we'll only go
Shri Vishvasakshini Nirmala Ma
We bow to thee.

You are forgiveness, you are love
Your blessings shower from above
Shri Mahalakshmi Nirmala Ma
We bow to thee.....

Your streams flow from eternity
We come from thee and go to thee
Shree Sahasrara Swamini Nirmala Ma
We bow to thee.....

Om Bhur Bhuvah

Shri Ganesha, Jay Shri Ganesha!
Om bhur bhuvah swaha
Mahaganapati Deva namah

We bow to the son of Lord Shiva
We sing to our glorious Lord,
We pray to the one who is worshipped first
Our elephant headed God

Your first tooth you have & four holy hands
The blessings, rope and goad,
The fourth offers food to your devotees
As they worship their innocent Lord.

You are the one who removes obstacles
The one who bestows all success
Eternal pure and beautiful
The wisdom by which we are blessed

We see you in our children's eyes
We see you in our brothers
We pray that your innocence leads us on
To the Lotus Feet of our Mother

Our Hearts Are Growing

Our hearts are growing
Our love is flowing,
For the love of you,
 You give us knowledge,
 You give us wisdom,
 We now know what to do,
Our eyes have opened,
Our hands have spoken,
We give ourselves to you,
 We will spread this wonder,
 We will give this nectar,
 So others can love you too,
For you are our Mother
To us there is no other
So we bow down to you,
 Our eyes have opened
 Our hands have spoken
 We give ourselves to you,
In our hearts we see you,
Through our hearts we seek you,
From our hearts we love you,
 For our souls are calling,
 As the new age is dawning,
 Please let us hold on to you,
Our eyes have opened,
Our hands have spoken,
We give ourselves to you,
 Our hearts are growing
 Our love is flowing
 For the love of you,
You give us knowledge
You give us wisdom,
We now know what to do,
We now know what to do.

पोवाडा

- पहिले नमन हो गणरायाला (२)
दुसरे नमन आदिशक्तिला
तिसरे नमन सहजयोगाला
गाऊ आता र पोवड्याला र जी, जी जी जी जी (२)
एकोणीसशे तेवीस सालाला (२)
मध्यप्रांती छिंदवाड्याला (२)
भर दुपारी बारा वाजेला
आदिशक्तिचा जन्म झाला र जी, जी जी जी जी (२)
धन्य माता, प्रसादराव पिता (२)
अति पुण्यवान उभयता (२)
दैवी कन्या त्यांची ललिता
सकल विश्वाची असे ही शान जी, जी जी जी जी (२)
निर्गुणातुनी सगुणात (२)
आली आदिशक्ति जगतात (२)
कलियुगात माता आली
निर्मला देवी माय भोळी र जी, जी जी जी जी (२)
धन्य ते पूर्वसुकृत (२)
कुण्डलिनी झाली जागृत (२)
सात चक्र पार करीत
आली सर्वांच्या सहस्रारात र जी, जी जी जी जी (२)
लेकुरे आम्ही अज्ञान (२)
नसे आम्हाला काही ज्ञान (२)
अनन्य भावे शरण
अल्पमती केले वर्णन र जी, जी जी जी जी (२)
सहजयोगाने होते प्रगती (२)
घ्या हो, घ्या हो याची प्रचिति (२)
दिव्यत्वाची जेथे प्रचिति
तेथे कर माझे हो जुळती र जी, जी जी जी जी (२)

पवन झकोरा लाया रे

पवन झकोरा लाया रे संदेसा, माँ निर्मला के आने का
नाचो झूमो, झूम के गा लो, मौसम आया गाने का

माँ के पथ पर फूल बिछा दो, करके न्यौछावर अपना तन मन
माँ की इक मुस्कान की खातिर, कर दो अपना सब कुछ अपर्ण
खुद को खोकर उसको पा लो, मौसम आया पाने का...

माँ निर्मल के नूर बनो तुम, कहती हैं येँ मौज बहारें
तभी बनोगे प्यारे बच्चे, माँ निर्मल की आँख के तारे
मन में अपने निश्चय कर लो, शिव स्वरूप को पाने का...

आत्म दर्शन सब पा जाओ, चैतन्य की लहरें बहने दो
खोल दो तुम द्वार हृदय के, प्रेम की गंगा बहने दो
आया है ये समां सुहाना, स्वयं लीन हो जाने का...

सुख दुख के सब बन्धन छूटें, छूटे आशा और निराशा
बन जाओ तुम साक्षी इसके, जग है खेल तमाशा ।
माँ ने दिया है तुमको साधन, ज्योति जोत समाने का...

प्रेम मुदित मन से कहो

प्रेम मुदित मन से कहो, माता निर्मल नाम,
श्री माता निर्मल नाम (कोरस)

पाप कटे दुःख मिटे, लेत निर्मल नाम
भव समुद्र सुखद नाव, एक निर्मल नाम
श्री माता निर्मल नाम

परम शान्ति सुख निधान, दिव्य निर्मल नाम
निराधार को आधार, एक निर्मल नाम

महादेव सतत जपत, दिव्य निर्मल नाम
सन्त-हृदय सदा बसत, एक निर्मल नाम

माता पिता बन्धु सखा, सब ही निर्मल नाम
भक्त जन जीवन धन, एक निर्मल नाम
श्री माता निर्मल नाम

पिंजड़ेवाली मुनिया

- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (४)
- उड़ उड़ बैठी मूलाधार दवड़िया माँ जी (३)
- गणेश के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- ओंकार के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- षण्मुख के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- शुद्ध के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी स्वाधिष्ठान दवड़िया माँ जी (३)
- अली के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- वेदों के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- संगीत के सब रस लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- कला के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी नाभी के दवड़िया माँ जी (३)
- लक्ष्मी के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- हरि के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- धर्म के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी भवसागर दवड़िया माँ जी (३)
- गुरू के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- नानक के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- साँई के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी हृदय के दवड़िया माँ जी (३)
- दुर्गा के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- काली के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- राम के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- जानकी के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)

- करुण के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- शंभु के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- अनंत के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी विशुद्धि के दवड़िया माँ जी (३)
- केशव के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- राधा के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- मुरली के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- रास के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी आज्ञा के दवड़िया माँ जी (३)
- येशु के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- मरियम के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- महावीर के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- जीना के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी सहस्रार दवड़िया माँ जी (३)
- देवी के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- श्री के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- माता के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- मोक्ष के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- प्रभु के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- संगम के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- निर्मल के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- उड़ उड़ बैठी सुषुम्ना दवड़िया माँ जी (३)
- सहज के सब रस ले लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)
- चलत मुसाफिर मोह लिया रे, पिंजड़ेवाली मुनिया (२)

प्यार भरे ये दो निर्मल नैन

प्यार भरे, ये दो निर्मल नैन (कोरस)
जिनसे मिला, ये अमृतमय चैन
कोई जानेना, इस प्यार की गहराई
इन आँखों की गहराई, प्यार भरे
झील कहो पर उसको भी है तल
जिनके आगे, सागर भी ओझल
सूर्य प्रकाश भी, हो जाये ओझल
तुलना से भी उपर उठ गया, इन नैनों का स्तर, प्यार भरे
जैसे सरिता, सागर में जाये धुल,
निर्मल मंगलता में गये हम घुल
भूत भविष्य की, चिन्ता गये हम भूल,
सुगन्ध मय इस चेतना से, निखरे है ये फूल, प्यार भरे
आँसू झर झर बह निकले,
अनुकम्पा जब जाती घटा बन
सुन लो उन नैनों से कभी
हितकारी मीठे सच्चे खरे बैन
जीवन का सब सत्व है इनमें,
खुद को कर दो पूर्ण समर्पण
सब कुछ लुटा दो पाने को, ये आँखों का अनमोल रतन, प्यार ...

पायो जी मैंने सहज में

पायो जी मैंने सहज में सब पायो.... २
मैंने पाया माँ का दर्शन, नैनों में मस्ती छायो...
मैंने पाई माँ की ममता, फूल बन मुसकायो...
मैंने पाया चैतन्य अनुभव, मन झूमें और मैं गायो..
मैंने पाया आत्म दर्शन, सब जग आनन्द छायो...
मैंने पाई गुरु की किरपा, ईश से मिलवायो...
मैंने पाया मोक्ष का मार्ग, फिर जनम नहीं आयो...
छूटे सब जीवन के बंधन, ज्योति ज्योति समायो..
सहज में सब हिलमिल आओ, अन्त नहीं पछतायो...

प्यासा पपीहा

प्यासा पपीहा जैसे पुकारे, देख के बादल श्याम
ऐसी लगन से मैं भी पुकारूँ, नाम तेरा सुबह शाम
निर्मल माँ - निर्मल - माँ - निर्मल माँ

बन जाये मेरी ऐसी सहज सी, निष्ठा माँ के चरण में
माता -पिता का जैसा भरोसा, होता है बालक के मन में
सागर समर्पित नदिया को जैसे, भाता नहीं विश्राम
ऐसी लगन से...

माँ का ही चिन्तन, माँ का ही अर्चन,
माँ का ही वन्दन करूँ मैं
माँ का मनोहर दर्शन करूँ, और ऐसा मगन सा रहूँ मैं
चंदा को देखे जैसे चकोरा, भूल के सारे काम
ऐसी लगन से....

श्री माँ मुझको सहज कृपा की, ऐसी प्रतीक्षा रहेगी
फूल कमल का जैसे ये सोचे, कैसे ये रात कटेगी
सुबह में मिलकर जैसे कमल, वो सूरज को करता प्रणाम
ऐसी लगन से....

रचिल्या ऋषी मुनीनी

रचिल्या ऋषी मुनीनी, ज्याच्या ऋचा अनंत डंका विनायका रे, झडतो तुझा दिगंत	॥४॥
वरदायका गणेशा, महदाशया सुरेशा का वेध लाविसी तू, हेरंब एकदंत	॥१॥
येसी जळातूनी तू, कोणा कळे न हेतू अजुनी भ्रमात सारे, योगी मुनी महंत	॥२॥
सहज मंदिरात येती, जे जे अनन्य भक्त ते सर्व भाग्यवंत, होतात पुण्यवंत	॥३॥

रे सहजी झूम- झूम के

रे सहजी झूम - झूम के नाचे..
तू सोये भाग जगा ले आज..
चैतन्य की बरसे आज फुहार ।
अरे रे रे

रे इतना जोर से नाच तू आज...
ये धरती अम्बर झूमे साथ....
रे गायेँ चारों दिशाएँ आज...
अरे रे रे...

रे सहजी चारों दिशा से आए..
श्री माँ जी के चरणों में सब गायेँ..
रे सहजी झूमें माँ मुस्काये..
अरे रे रे

श्री माँ जी के माथे पे बिंदिया साजे...
रे मुखड़ा प्यारा चाँद सा लागे...
जो देखे, देखता ही रह जाये..
अरे रे रे

श्री माँ जी के चरणों में जो आए...
वो माँ से आज प्यार है पाए..
श्री माँ जी भव से पार लगाए
अरे रे रे

रब्बानी बन

आ तुझको दिखाऊँ नई दुनिया का नजारा

अंधा पढ़े लंगड़ा चले

राहत दिवान पा जाए

(२)

देखा जल्लाद को तौहिद में ढलते हुए

देखा बाजारू तबियत रूहानी बनते हुए

(२)

देखा बहकी खुदी को बंदगी में झुकते हुए

(२)

देखा टूटे दिल को प्यार में खिलते हुए

(२)

कर दूर भरम अपना है ये वक्ते कयामा

दोजख में तू आ जाएगा गर अब भी ना जाना

(२)

रब्बानी बन, रब्बानी बन, रब्बानी बन, रूहानी बन (कोरस २)

रूहानी बन, रूहानी बन, रूहानी बन रूहानी बन

जैसे फूल कमल में बदलता है

सूरज चाँदनी उगलता है

निष्कलंक चाँद को देखा है

ये वो जन्नत का नजारा है

आखों से हमने देखा है।

देखा आकाश में तस्वीर को सजते हुए ।

देखा चरणों में देवताओं को झुकते हुए

(२)

देखा माता को देवी रूप में सजते हुए

(२)

पाक ख्वाहिश में चैतन्य को बहते हुए

अब देर ना कर हासिले - मकसद को पा ही ले

यही वक्त - ए - तगय्युर है, इसे आज खो न दें

मूरख तो सत्य से भागेगा

निरानंद से मुख तो मोड़ेगा

अंधो को दिया दिखाने में

इक उम्र लगेगी ऐ 'रौशन'

भटकों को राह पे लाने में

रब्बानी बन, रब्बानी बन, रब्बानी बन, रूहानी बन (कोरस २)

रूहानी बन, रूहानी बन, रूहानी बन रूहानी बन

रंग दे चुनरिया रंग दे

- रंग दे चुनरिया, रंग दे चुनरिया रंग दे
माता निर्मला रंग दे (२)
निर्मल रंग में रंग दे, साँई के रंग में रंग दे ।
तेरे चरणों के धूल से रंग दे, (रंग दे चुनरिया रंग दे) (२)
ऐसा रंग रंगा दे, मैया रंग नहीं छूटे ।
धोबिया धोए चाहे सारी उमरिया (रंग दे चुनरिया रंग दे) (२)
लाल न रंगा ओ, हरो न रंगाओ
निर्मल रंग में रंग दे चुनरिया ।
कोई कहे इसे मैली चदरिया, कोई कहे इसे पाप चदरिया
निर्मल कर दे मेरी चुनरिया
निर्मल माता मात भवानी, आदिशक्ति श्री कुण्डलिनी,
तेरे चरणन में लागि नजरिया (रंग दे चुनरिया रंग दे) (२)

राह में बिछी है पलकें आओ

- राह में बिछी हैं पलकें आओ
गुल महके, रंग दम के आओ
आए चमन में फिरसे बहार
आओ जो तुम तो आए निखार
ऋतु महके, ऋतु बह के
कली कली पावन घूमे ॥धृ॥
शिवरात्री की है ये सोला सिंगार
चैतन्य की हल्की है फुहार
श्री माँ पधारिये दिल के द्वार
आओ आप के हैं इंतजार
तन झूमे, मन झुमे
सहजियों के दिल ये बोले
पायलों के मोती छमके, आओ ॥१॥
आज परमात्मा से है मुलाकात
सूक्ष्म सी है, ये दिल की बात
श्रद्धा के दीप जलाए सात

आज है शिव से योग की रात
चित्त ये समर्पित करके
चिदानंद स्थिति
सहजियों को मोक्ष दिलाने आओ ॥२॥

Rise and Shine

Rise and shine and give God the glory glory. (२)(chorus)
Children of the Lord.

Mother said to children, let it be floody floody (२)
go and help out, those in muddy muddy (२)
I am in your hearts...
We are Nirmalites (३)

We are the children of Adishakti Mataji; (२)
We are the lucky ones, blessed by Shree Mataji (२)
We are the pioneers..., of new world.
We are Nirmalites (३)

We shall take the message of love (२)
We shall sing the song of love (२)
We shall light the lamp of innocence
We are Nirmalites (३)

स्वागत आगत स्वागतम्

स्वागत आगत स्वागतम् । हम सब करते स्वागतम्
आज हमारे बीच पधारे । श्रीमाताजी आप ही तारे
झूम झूम के , झूम झूम के करते हैं गान
स्वागत आगत...

पूज्यवर माताजी के दर्शन पाकर, करते हैं स्वागत दिल से गाकर (२)
प्रेम फूलों की माला पहनाते हैं हम,
स्वागत आगत..

निर्मल माँ से है विनती हमारी, जीवन सुख से कर दे भारी
आनंद प्रेम शांति सदा ही रहे,
स्वागत आगत...

सात जन्म जो पुण्य किये हैं

सात जन्म जो पुण्य किये हैं, सफल हुए सारे
इसीलिये माताजी हमको, दर्शन हुए तिहारे... (२)

दुखियों का दुःख दूर करे तू, माता निर्मला देवी (२)

हम सबका उद्धार करे तू, शान्ति सुख की देवी (२)

सब धर्मों को छोड़ चरण में, आये शरण तिहारे (२)

इसीलिये माताजी हमको, दर्शन हुए तुम्हारे

अहं भाव को छोड़ के अपने, शरण तिहारे आए
भवसागर के दुःख सुख से माँ, तू ही पार कराये
ना आँधी हो न हो तूफाँ, संकट टल ही जाये
इसीलिये माताजी हमको, दर्शन हुए तुम्हारे

कुण्डलिनी को जागृत करके, सब के पाप हरो
आशीर्वाद मंगलमय देकर, पावन सब को करो
जन्म मरण के फेरे मिट गये, खुल गये भाग हमारे
इसीलिये माताजी हमको, दर्शन हुए तुम्हारे

सहजयोगिनी सहजदायिनी

- सहजयोगिनी सहजदायिनी, सहज गुण उरधारिणी (२) (कोरस)
स्नेह सलिला निर्मला, मातेश्वरी दुख हारिणी
सहज आत्मानन्द, परमानन्द सुख विस्तारिणी (२)
शक्तिरूपा, विश्वरूपा, मात विश्व धारिणी (१)
स्नेह सलिला...
सब मनोरथ पूर्ण करती, सकल सुख संचारिणी (२)
क्षमाशीला, दयानी, अधनाशिनी, भवतारिणी (१)
स्नेह सलिला...
चेतना जागृत करे, आत्मानुभूति प्रसारिणी (२)
शक्तिदात्री, मुक्तिदात्री, विघ्न बाधा तारिणी (१)
स्नेह सलिला...
स्निग्ध हासिनी, मुधरभाषिणी, अगम विगम विचारिणी (२)
स्वावलम्बिनी, स्वाभिमानिनी, मात स्वेच्छाचारिणी (१)
स्नेह सलिला...
हर सहजयोगी से शरणागत से समव्यवहारिणी (२)
प्रार्थना बिन, याचना बिन, जगत जन उपकारिणी (१)
स्नेह सलिला...
सहज का सन्देश लेकर, अखिल विश्व विहारिणी (२)
तर्क युक्ता, प्रमाण युक्ता, योग पर अधिकारिणी (१)
स्नेह सलिला...

शंकरसुत गणेश

निर्मल / शंकरसुत श्री गणेश, ॐकार तवरूप, भारले मनी ।

वेदातील तू प्रथम, शब्द सूर नाद ब्रह्म
मूर्तिमन्त पूज्य श्लोक, पूर्वेला गणराज, भासतो रवि ॥१॥

आज्ञाची तूच ज्योत, ज्ञानाची तू प्रभात,
उमलून ये सूतास, प्रगटून श्री गणेश, जागला पुरी ॥२॥

शंकर सुत श्री गणेश, ॐकार तव नाद, भारले मनी

शंभो शंकरा

शंभो शंकरा करूणाकरा, जग जागवा, शंभो
सांब सदाशिव हे त्रिपुरारी शंभो
हृदय निवासी साक्षी स्वरूपी शंभो

अज्ञान ने लोपवा, द्यावा प्रकाश सदा
चराचर उजळाय़ा, चैतन्याची ज्योत चेतवा
हे शिवा,

जागवीली अंतरे कुण्डलिनी योगाने ३
आसावले सहजयोगी, अमृताने चिंब नाहवा
हे शिवा

हृदयी तुम्ही आमुच्या वास करा सर्वदा
होऊनीया कृपावंत विश्व निर्मल धर्म जागवा
हे शिवा ३

शुभ मंगलमय दिवस है आया

शुभ मंगलमय दिवस हैं आया
आदिशक्ति स्वयं हैं पधारी

हर लहर पर नई तरंग हैं
हर तरंग पर नई उमंग हैं

हर हृदय में उल्लहास आह्लाद हैं
परम परमेश्वरी का उपहार हैं

सुर नर मुनि सब झूम रहे हैं
आज प्रकृति खिल फूल रही हैं

फूल खिले भँवरे खग मिल के
रचयिता के ही गुण गाएं

देवों ने पुष्प वर्षा की हैं
प्रार्थना पूर्ण हुई सन्तों की

ब्रह्मा विष्णु महेश सदाशिव
स्वयं माँ रूप हैं पधारी

शंकर भोले भाले

ललाट पे है चन्द्रमा, चन्द्रमा, जटा में गंगधार हैं
चढ़ी है भस्म अंग पे, गले में सर्पहार हैं ॥
नवा रहे हैं शेष देव, सिर तुम्हारी भक्ति में,
है कोटि सूर्य का प्रकाश
शिव तुम्हारी शक्ति में

शंकर भोले भाले शैल बिहारी, त्रिपुरारी,
तेरी लीला प्रभु सब से है न्यारी,

सब देवों में महादेव तू, तुझ सा कोई न दूजा
भक्ति भाव से सब करते हैं, भगवन तेरी पूजा हैं
शिवजी तेरा तो है - रूप निराला, भोला भाला,
तेरी छवि पे सभी है बलिहारी ॥

सागर मथ के सभी देवता, अमृत पर ललचाये
तुम अभयंकर, विष को पीकर, नीलकंठ कहलाए
जो भी आया शंभो, शरण तिहारी, दुखहारी,
उसकी नैया तूने पार उतारी ॥

हे शिव शंकर जहाँ भी तेरा, डम डम डमरू बाजे
हे... शिवशंकर, हे प्रलयंकर
हे शिव शंकर जहाँ भी तेरा डम् डम् डमरू बाजे,
धर के नाना रूप तेरे गण, संग -संग तेरे नाचे
तेरा किसी ने भी भेद न पाया, कैसी माया ।
भायी तुझ को तो नन्दी की सवारी ।

शंकर भोले भाले शैल बिहारी, त्रिपुरारी,
तेरी लीला प्रभु सब से है न्यारी,

श्री माँ के उजालो

श्री माँ के उजालों, निर्मल माँ के उजालो
आँखों में सिमट आओ, अंधेरो को निकालो

जब सहज में आये हैं, तो हम एक हुए हैं
रास्ते पे तेरे चल के, सभी नेक हुए हैं
हर पग पे संभाला है, तो आगे भी संभालो,
श्री माँ के...

बरसों से तुम्हें दिल की नजर ढूँढ़ रही हैं
जिस घर में बसी हो, वही घर ढूँढ़ रही है
अब करके कृपा माँ, मुझे आँचल में छुपा लो,
श्री माँ के...

दुनिया का अजब हाल है, इंसान के हाथों
ऐसा तो न होगा कभी, शैतान के हाथों
अब चाहो तो आकाश पे, धरती को उठालो,
श्री माँ के...

श्री माँ ने बुलाया है

रोकेगा क्या संसार, हमें श्री माँ ने बुलाया है
अब कौन करे इन्कार, हमें तो माँ ने बुलाया है

मिला हमको संदेश, चलो श्री माँ के देश
पहनो चोला बस एक, देखो बदलो ना वेष
लो हमसे बढ़ाकर प्यार, हमें श्री माँ ने बुलाया है

क्या खुशी की खुशी, क्या हमें गम का गम
जब तक है दम में दम, बढ़ते जायेंगे हम
अब दूर नहीं दरबार, हमें तो माँ ने बुलाया है

माना मंजिल की ओर, है कठिन रास्ता
हमको श्री माँ के सिवा, किसी से क्या वास्ता
है बहुत बड़ा उपकार, हमें श्री माँ ने बुलाया है

श्री जगदम्बे आई

श्री जगदम्बे आई रे, मेरी निर्मल माँ
मेरे जाग उठे भाग, सिर पे चरण कमल की छाँव
सारे जग में पड़ी बधाई रे,
मेरी निर्मल माँ...

माँ की शक्ति है बलशाली, निर्मला देवी शेरॉवाली
इस दर पे ना रहे कोई खाली, जग गुलशन की है रखवाली
जननी है जन्मदायिनी, सहजयोग धर्मदायिनी
हृदय में ना खुशी समाई रे,
मेरी निर्मल माँ

मानव रचना में माँ का अंश पड़ा है, रत्नों का भंडार भरा है
मानव में अहंकार भरा है, अपनी शक्ति से दूर खड़ा है
पीड़ित नरक में भाई, पार करे निर्मल माई
देवी परमार्थ को आई रे
मेरी निर्मल माँ ।

भाग्य उदय हुआ भाई तेरा, जगदंबे का लग गया फेरा
चित्त चिंत्ता का कटेगा घेरा, स्वर्ग बनेगा जीवन तेरा
सच्चे दिल से ध्यान करले, माताजी का मान कर ले
रूहानी आवाज आई रे,
मेरी निर्मल माँ ।

जब जब हानि होय धर्म की, नर भूलें शक्ति अन्तर्मन की
तब शक्ति जागृत हो ब्रह्म की, करें स्थापित मूर्ति सत्कर्म की
कर्मदायिनी विश्वनिर्मला, धर्मदायिनी मात गर्विता
माँ ने अलौकिक ज्योति जलाई रे,
मेरी निर्मल माँ ।

श्री माताजी के चरणों में मन रख दो

- श्री माताजी के चरणों में मन रख दो - (२)
- हो जाओ सम्पूर्ण समर्पित - (२)
- मन की सच्ची लगन रख दो
श्री माताजी के चरणों में मन रख दो (२)
- माँ होती ममता की मूरत, धरती पर भगवान की सूरत - (२)
- बिन बोले माता सब जाने, किस बालक की क्या है जरूरत - (२)
- आँसू मोती बन जाएँगे, आँसू पूर्ण नयन रख दो
श्री माताजी के चरणों में - (२)
- नाम निर्मला, निर्मल अन्तर, अन्तर में करूणा का सागर (२)
- सहजयोग का अमृत बाँटे, भर लो जिसकी जितनी गागर - (२)
- जीवन होगा सहज, सहज से, सहज यहाँ जीवन रख दो
श्रीमाताजी के चरणों में .. (२)
- माँ सबका हित चिन्तन करती, जड़ जीवों को चेतन करती (२)
- पारसमणि सा स्पर्श है माँ का, जिसको छू दे कुन्दन करती - (२)
- जैसे हो तुम स्वयं को वैसा, माता के आँगन रख दो
श्री माताजी के चरणों में .. (२)
- सबकी खातिर प्यार है माँ का, सबसे बड़ा आधार है माँ का (२)
- इक दो की क्या बात करें हम, सारा जग परिवार है, माँ का - (२)
- सब मिलकर माँ के गुण गाओ, सेवा में भक्ति भजन रख दो
श्री माताजी के चरणों में ... (२)
- विनती रख दो माँ के आगे, बिगड़ी बनते देर न लागे
माता अपने उपकारों का, मूल्य न माँगे, सूद न माँगे (२)
- शेष सभी कुछ माँ पर छोड़ो, तुम विश्वास का धन रख दो
श्री माताजी के चरणों में ... (२)
- ज्यों जगदम्बा आदि भवानी, मंगल करनी शुभ वरदानी
ऐसी मात निर्मला देवी, प्रगट हुई जन - जन कल्याणी - (२)
- माँ की शक्ति को पहचानो, और शत कोटि नमन रख दो
श्री माताजी के चरणों में... (२)

सारे जग में तेरी धूम

सारे जग में तेरी धूम, आदिशक्ति माँ
आते बड़े बड़े महाराजे, तेरी शान तुझी को साजे
माथे प्यारी बिन्दिया साजे, कोई....
कोई लौटे न महरूम, आदिशक्ति माँ

निर्मल दरबार में जो भी आए
मुँह से माँगी मुरादें पाए
जो भी सहजयोग में आया
उसने जीवन सफल बनाया
माँ का भेद नहीं है पाया, कोई

तेरे दरबार की क्या शान है
हनुमान खड़े दरबान है
तेरे नाम को जिसने ध्याया
तुमने बिगड़ा काम बनाया
कलियुग में है तेरी माया, कोई

ब्रह्मा, विष्णु हैं तुमको मनाते
शंकरजी हैं ध्यान लगाते
तू ही निर्मल तू महामाया
निर्मला नाम है जग में छाया
सारा जग चरणों में आया, कोई....

सारे विश्व को सहजी बनाया
तूने सारा ब्रह्माण्ड रचाया
सूरज चंदा तुझे रिझाएँ
तारे देख - देख हर्षाएँ
सारे तेरा ध्यान लगाएँ, कोई.....

सबसे सुन्दर है निर्मल नगरिया
हर सहजी पे माँ की नजरिया
मन मन्दिर में करो बसेरा
छूटे जन्म मरण का फेरा
डालें चरणों में हम डेरा, कोई...

सहजयोग अति पावन है

सहजयोग अति पावन है, जरा अनुभव तो कर ले
कर जागृत कुण्डलिनी को, तू योग घटित कर ले,
सहजयोग अति...

भटका है ईश्वर अनुभव को, साधक इक बन के २
हाथों पर अनुभव ले ले, श्री माँ की कृपा से
सहजयोग अति...

जितना है तू साधक गहरा, उतना रस पी ले २
परमचैतन्य के अनुभव का, खुद को अंग बना ले
सहजयोग अति...

होंगी दूर अविद्या सारी, परम ज्ञान पा ले २
कर ले जागृत धर्म अन्तर में, प्रेम का दीप जला ले
सहजयोग अति...

सत्गुरु पाये मोरे सारे दुःख बिसरे

सत् गुरु पाये मोरे सारे दुःख बिसरे, अंतर के पट खुल गए री
ज्ञान की आग जली घट भीतर, कोटि कर्म सब जल गए री
पाँच चोर लूटते रात दिन, आप ही आप में नस गए री
सत्गुरु पाये....

बिन दीपक मोरे भया उजियाला, तिमिर कहाँ जाने नस गए री
त्रिवेणी से मोरे धार बहत है, अष्ट कमल दल खिल गए री
सत्गुरु पाये...

अढ़सठ तीरथ हैं घट भीतर, आपस में सब मिल गए री
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ज्योत में ज्योति मिल गए री
सत्गुरु पाये...

सजदे करने झुके

छोडकर अपने रब को दरे मौतबर ।
हम अगर जायेंगे तो किधर जायेंगे ।
हर तरफ उसके जलवे हैं बिखरे हुए ।
जिस तरफ भी लेकर नजर जायेंगे ।

रहीम रज्जाक रहमान या खुदा ।
है रब के बन्दे ये नाम खुदगर्जी में लेते है ।
राम राधा रघुनाथ रमैय्या ये भगवान के नाम
भक्त अपनी मर्जी से लेते हैं ।
माताजी का नाम सहजी ले ले कर
अपना जीवन जी लेते हैं

२

दिल की तरफ गर्दन झुकाकर सजदे कर लेते हैं ।
सजदे करने झुके तस्लीम हो भी चुके ।
अब्दियत में मेरे रंग भर आयेंगे ।
इतने कायल तेरे प्यार के हो गये
के रिहाई मिलेगी तो मर जायेंगे ।
सजदे...

३

२

२

ठोकरें दर बदर, गम और रूसवाईयाँ ।
सब सिमटकर तेरे रूबरू आये हैं ।
फेर ली गर जो तूने ये मेहरे नजर ।
तेरे इमदाद कोहम कहाँ पायेंगे ।
ठोकरें दर बदर, गम और रूसवाईयाँ । अल्लाऽ !

३

बोले काजी ना पढ़े नमाज तो रूसवाई होगी ।
बोले पंडित ना गये मंदिर तो रूसवाई होगी ।
बोले उस्ताद बगैर ट्यूशन के न पढ़ाई होगी ।
बोले समधी बगैर दहेज के न सगाई होगी ।

२

२

बोले बीबी दूध जल्द ना लाये तो वहाँ लाईन होगी ।
बोले पुलिस बगैर रिश्वत के न लिखाई होगी ।
बोले आईन जो खिलायेगा उसकी ही सुनवाई होगी ।
बोले मालिक मकान पगड़ी दो तो कियामी होगी

२

बोले कन्डक्टर ना लाईन लगाये तो न रवानी होगी । २
 बोले व्यापारी बिन मिलावट न कमाई होगी ।
 बोले लीडर दो वोट सब, गम से तभी रिहाई होगी । २
 आबादी बढ़न पर कुछ भी ना पाबंदी होगी ।
 और कुछ बोलने पर भी न मनायी होगी । २
 गरीबी, भूख और बेकारी की तब, तरक्की होगी ।
 ठोकरें दर बदर, गम और रूसवाइयाँ
 सब सिमटकर तेरे रुबरू आये है । फिर ली गर २
 जो तूने ये मेहरे नजर । तेरे इमदाद को हम कहाँ पायेंगे । अल्लाऽ
 फेर ली गर जो तूने ये मेहरे नजर । तेरे इमदादा को हम कहाँ पायेंगे ।
 है तेरे ही रहम छुटे दहरो दरम । जहाँ बसते नहीं हैं करीमो धरम ।
 जब तेरे ही करम बन गये अब धरम ।
 हर भरम से हम बाहर निकल आयेंगे ।
 जब तेरे ही करम बन गये अब धरम ।
 हर भरम से हम बाहर निकल आयेंगे ।
 सब्ज ये अंजुमन ये हवा झूमती ।
 तेरी बेलोसी में और निखर आयेंगे । २
 जब तू ही तू बसी है ये दोनो जहाँ । तो तारे भी सजदों में झुक जायेंगे ।
 शबनम की नमी है तू । दिल में जमकर जगी है तू ।
 दुश्मनों पे चट्टानों सी तनी है तू । २
 महके बादे सबा की रब्बानी है तू । २
 बुलबुल की चहक है तू । बुलबुल की चहक है तु ।
 हर गुल की महक है तू । तू ही आसमाँ है और ये उफक भी है तू ।
 जीने का मकसद है तू । २
 जलवा - ऐ -जमाल तू । मिसाल तू जलाल तू ।
 तारिकी मशाल तू । हर सवाली के सवाल का जवाब है तू ।
 हर जवाबी के जवाब का सवाल है तू ।
 तू ही मुरशिद तू ही मूसा । तू ही मरियम तू ही ईसा ।
 तू ही धन है तू ही पैसा । बता दो कोई तेरे जैसा ।
 तू ही प्यार, मोहब्बत है तू । अंजुम और महताब है तू ।
 जो ना ढले वो आफताब है तू । हर मौसम का शबाब है तू ।

सब्ज ये अंजुमय ये हवा झूमती
तेरी बेलोसी में और निखर आयेंगे । २
जब तू ही बसी है ये दोनों जहाँ । २

तो तारे भी सजदों में झुक जायेंगी ।
जब तू ही तू बसी है ये दोनों जहाँ ।
तो तारे भी सजदों में झुक जायेंगे ।
चली लहरों पे लहरें चमन दर चमन ।
आबिद पीने लगे हैं ये आबे हयात् २

जब इरादतइबादत में ढलने लगी।
तो बेलोस सब पार हो जायेंगे । अल्ला ।
जब इरादत इबादत में ढलने लगी । २

तो बेलोस सब पार हो जायेंगे ।
सजदे करने झुके तस्लीम हो भी चुके ।
अब्दियत में मेरे रंग भर आयेंगे । इतने कायल
तेरे प्यार के हो गये । के रिहाई मिलेगी तो मर जायेंगे ।

सहज बिना कोई ना उतरा पार

सहज बिना कोई न उतरा पार, क्यों घड़ियाँ जीवन की खोता,
मत कर पगले सोच विचार, निर्मल से तू करले प्यार,
माताजी से करले प्यार ॥

आशाओं के सपने सजाए, काम न तेरे आए,
सुन्दर जो घर महल बनाए, माटी में मिल जाए ।
साथ ना कुछ भी जाता मूर्ख, यहीं धरा रह जाता मूर्ख,
जोड़ा धन जो अपार ॥

दूर हटेगी सारी चिन्ता, धीरज मन में धर ले,
देकर डोरी हाथ श्री माँ के, तू एक निश्चय कर ले ।
पाप निवारेंगे सब तेरे, काज सवारेंगे सब तेरे ।
प्यारी निर्मल माँ ॥

सहज की राह

मन आ जा सहज की राह पर, मेरी माता सर्व शक्तिमान है
जिसने किये उपकार बहुत, जिसे जानता ये जहान है ॥१॥

सहज की इस राह पर आनन्द है, उल्लास है
हम गम करें किस बात का, जब माँ हमारे पास है
आदि शक्ति माँ भवानी, देती सुख का दान है, मन... ॥२॥

इस राह पर जो आ गया, मानो वो सब कुछ पा गया
सुख दुःख के सब बन्धन गए, भव से मुक्ति पा गया
शुद्ध चक्र हुए सब उसके, मिलता अनूठा ज्ञान है, मन...॥३॥

माँ की शरण में आओ तो, चैतन्य का अनुभव करो,
दौड़ेगी इक ठंडी लहर, तन में नया संचार हो
ज्ञान दे आत्म बोध का, माँ करती मोक्ष प्रदान है, मन...॥४॥

सतगुरू हो महाराज

सतगुरू हो महाराज, मोपे, साई रंग डारा,
साई रंग डारा.....

शब्द की चोट लगी मेरे मन में
बेध गया तन सारा,
साई रंग डारा...

औषधि मूल कछू नहीं लागे
क्या करे वैद बिचारा,
साई रंग डारा...

सुर नर मुनिजन, पीर औलिया
कोऊन पावे पारा
साई रंग डारा...

साहिब कबीर सर्व रंग रंगिया
सब रंग ते रंग न्यारा
साई रंग डारा.....

श्री रामचन्द्र कृपालु

श्री रामचन्द्र कृपालु, भज मन हरण भवभयदारूणम् ।
नवकंज - लोचन कंज - मुख कर - कंज पद कंजारूणम् ॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरज-सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि, शुचि नौमि जनकसुतावरम् ॥

भज दीनबन्धु दिनेश दानव, दैत्यवंशानिकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द, कौशलचन्द्र दशरथ नन्दनम् ॥

सिर मुकुट कुण्डल तिलक, चारु उदार अंग विभूषणम्
अजानुभुज शर - चाप धर, संग्रामजित खरदूषणम् ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन -रंजनम् ।
मम हृदयकुंज निवास कुरू, कामादि खलदल गंजनम् ॥

Silent Night

Silent night, holy night
all is calm, all is bright,
Round young Virgin Mother and child
Holy infant so tender and mild
Sleep in heavenly peace
Sleep in heavenly peace
 Silent night, holy night
 Shepherds quake at the sight
 Glories streams from heaven afar
 Heavenly hosts sing, "Alleluia"
 Christ our Saviour is born
 Christ our Saviour is born
Silent night, holy night
Wondrous star, lend your light
With angels let us sing
Alleluia to our king,
Christ our Saviour is born
Christ our Saviour is born

सहज की धाराओं का

सहज की धाराओं का हम अमृत पीते हैं ।

जय श्री देवी, जय श्री माता, कह कह कर हम जीते हैं ॥

आकाश से आओ, या धरती से, हमें उठाती हो ।

हृदय में बैठ, महादेवी, महालक्ष्मी कहलाती हो ।

चैतन्य की बरखा को, जैसे हम पीते हैं ।

जय श्री देवी जय श्री माता, कह कह हम जीते हैं ॥

जय शिवा, जय शिवा गा रहे, ये हृदय का कमल सजा रहे ।

आत्म बोध ही, शिव का मान है ॥

आत्मा हैं हम, ये आत्म ज्ञान है ॥

आत्मा में दोष कभी न रहे, नीलकंठ, स्वर मधुर में, गा रहे ।

शंकर, महादेव गा रहे, ये हृदय का कमल सजा रहे ॥

सहज की धाराओं का हम अमृत पीते हैं ।

जय श्री देवी जय श्री माता, कह कह कर हम जीते हैं ॥

जय शिवा, जय शिवा, गा रहे, ये हृदय का कमल सजा रहे ।

योगी जन तो पार हुए, जग को माँ अब पार करो ।

कलयुग में रहते सारे, सबके अवगुण माफ करो ॥

चरणों का आश्रय लेकर, आँसू नहीं पीते हैं ।

जय श्री देवी जय श्री माता, कह कह कर हम जीते हैं ॥

जय शिवा, जय शिवा, गा रहे, ये हृदय का कमल सजा रहे ।

श्री माता जी स्वयं, देवी रूप में,

कई बार जन्म लें, रक्षात्म राह दे ।

तांडव नृत्य कर, बता रहे, जो दुष्ट हैं, उन्हें सदैव मिटा रहे ।

भोलेनाथ बनके, विष पी रहे,

और गंगा हिम की बहा रहे ।

सहज की धाराओं का हम अमृत पीते हैं ।

जय श्री देवी जय श्री माता, कह कह कर हम जीते हैं ॥

बसो हृदय में, माँ तुम अब, अक्षय पथ का दान करो ।

नन्हें हाथों से माँगे, स्थित प्रज्ञ वरदान को ॥

सहजयोग को पाकर, दुःख दर्द से रोते हैं ।

जय श्री देवी जय श्री माता, कह कह कर हम जीते हैं ॥

जय शिवा, जय शिवा, गा रहे, ये हृदय का कमल सजा रहे ।
हृदय में सात चक्र के, जो बंधन है परिधि अनहत् में समा रहे,
श्री पार्वती की शक्तियाँ लुटा रहे ।

शंकर, महादेव, गा रहे, ये हृदय का कमल सजा रहे ।
सहज की धाराओं का हम अमृत पीते हैं..
जय शिवा, जय शिवा...

सत्य साधकों की

सत्य साधकों की माताजी, तूने सदा बढ़ाये मान
माँ हम क्या कुछ बोलें, तू सब देवों की शान । २ (कोरस)

जब जब होय धर्म की हानि, आदिशक्ति रूप तू धरती
अंधकार में पड़े जीवों की, बन ज्योति पीड़ा हरती
अपने सेवक के दुखड़े हरती, खुद सहती कष्ट महान । माँ हम..

था क्षण - भंगुर जग से मन पीड़ित, कहीं नहीं मिला विश्राम
निर्मल कृपा से शक्ति पाई, चंचल चित्त ने पाया आराम
ऐसी बही प्रेम रस धारा, इच्छा पूर्ण हुई कर स्नान । माँ हम...

कर जोड़ खड़े माँ बालक तेरे, सबके हृदय की इच्छा ।
माँ अंधकार ना रहे किसी में, बढ़े प्रेम भाव दृढ़ सच्चा
सहज ज्ञान में ना रहे कोई कच्चा, सब बोले एक स्वर गान । माँ हम...

महाचंडिका नाम भी तेरा, माँ इसी रूप में आओ ।
सहजयोग की माँ सारी बाधा, तुम क्षण में दूर भगाओ ।
बने सहज स्वर्ग भूमंडल सारा, ले कर में दुधारा तान । माँ हम...

सात चक्रों के रथ पे सवार

सात चक्रों के रथ पे सवार, आई गौरा शिवजी से मिलने
रथ को चला के गणेशजी आये, सौन्दर्य लहरी साथ बहाये
चैतन्य की झड़ती फुहार,
आई गौरा...

ब्रह्माजी ने रथ को सजाया, विष्णुजी ने नाद बजाया
आदिगुरुओं ने करी पुकार,
आई गौरा...

हे अनहद आसन पे अंबे है बैठी, लीला कान्हा संग खेलत रहती
विराट ने खोले है द्वार
आई गौरा...

बुद्ध महावीर ने दीप बनाये, लौं येशू की जल जल जाये
जग मग चमका है माँ का दरबार
आई गौरा...

महामाया ने ताना बनाया, देवगणों ने गान है गाया
आदिशक्ति की हो रही जय जयकार
आई गौरा...

शंकर बैठे मेरू पे धुन में, लीन हुयी अंबे चरणन में
भोले आनंद में रहे हैं विहार
आई गौरा...

शिव में अंबे, अंबे में शिव है, परामाया में एकमेव है
जगमाया से प्रगटे ओंकार
आई गौरा...

Salutations to the Queen of Sahasrara

Salutations to the queen of sahasrara
Salutations to the queen of the seven peaks
On the great day O Mother
We weep the universe at your lotus feet.
Mother it's just your love and compassion.
We see the blossom of your care and affection.
Who can be the fragrance so sweet and sound.
Who can be radiance of the heart resound.
It's you, it's you, it's you Mother always forever,
Who can be the beginning of this creation.
Who can be its deepest inspiration.
It's you, It's you, It's you Mother always forever.
Who can be the purity of words and meaning
Who is the compassionate ever redeeming.
It's you, it's you, it's you Mother always forever.

Sitting in the Heart

Sitting in the heart of the universe x 2 (chorus)
We know your love is flowing through us x2
Shree Mataji we love you x 2 sitting in.....
 You are Mahakali, Mahalakshmi
 You are Mother, Adi Shakti
 Your powers within us when we feel it
 Our hearts rejoice in bhakti
 When we surrender, we are in paradise
You are the supreme creator
You play the game of creation
You have given us Shri Ganesha
For us to have Realisation
When we surrender, we are in paradise
 God Goddesses of Vaikuntha
 Bless us when we get together
 On the shores of Ganapatipute
 Our hearts are united together
 When we surrender, we are in paradise

शुभ मंगलमय पावन

शुभ मंगलमय पावन दिन है आया (आया रे आया)
पूजन को माँ तेरे निर्मल, नभ ने अमृत बरसाया

कैसा सुन्दर निराला नजारा, झुका माँ के चरणों में ब्रह्माण्ड सारा
उतरे हैं नभ से चाँद सितारे, चरण रज से पाते हैं आभा ये सारे
खिली पूर्ण वैभव से ये माँ प्रकृति, चमकी है सोने सी देखो ये धरती
खिलाए हैं वो पुष्प खुशबू वो फैली, खुशबू के अंग संग पवन भी है डोली

सींचा वो अमृत फूलों में फलों में, करे इनको अर्पण माँ के चरणों में
बना नीर क्षीर छू के माँ के चरणों को,
कमल भी हैं व्याकुल छू के इन कमलों को

झूमे गगन सारी धरती है डोली, चेतन के रस रंग से खेले ये होली
करें कैसे हम पूजा अर्चन तुम्हारा, जो ममता से छलके हृदय माँ तुम्हारा
हे माँ आदिशक्ति ये अर्पण समर्पण, हो स्वीकार तुमको करे मन ये नर्तन

श्री निर्मल माता

श्री निर्मल माता, तुम्हीं जगदम्बा हो ।
हे आदिशक्ति माँ, तुम्हीं श्री अम्बा हो ।

तेरे दर पर जो आये, बिन माँगे सब पाये ।
सब कुछ ही दिया तूने, फिर और वो क्या माँगे...

वो प्रेम स्रोत खोला, हम डूब गये जिसमें
अब और कहाँ जाये, सब तीर्थ हुए पूरे...

मारूत बनी कुण्डलिनी, ये तेरी कृपा है ।
ये कृपा बढे इतनी, हम तुझ मे समा जाये..

निरानंद की सीमा तो, पायेंगे हम सब ही
जब सहस्रार अपना माँ, तुझ में वलय होगा...

वो प्रेम की भक्ति दी, माँ निर्मल शक्ति दी ।
हैं शब्द नहीं, कैसे दें धन्यवाद तेरा....

सारे जगत को

सारे जगत को मोक्ष के पथ पर, सहजयोग ही लायेगा । (२ कोरस)
माता निर्मला के चरणों में, सारा जगत झुक जायेगा ॥

सब लोग निर्विकल्प में उतरेंगे ।
विश्व निर्मल धर्म फैलेगा ।
इस पृथ्वी पर माँ की कृपा से, ईश्वर का राज्य ही आयेगा।(२)

जय आदिशक्ति निर्मल माँ ।
जय मोक्षप्रदायनी निर्मल माँ
जय सहस्रार स्वामिनी निर्मल माँ
यह मन्त्र विश्व में छायेगा । सारे जगत को

तन अनेक पर धर्म एक ।
स्वर अनेक पर मंत्र एक ।
रोम रोम में छा जायेगा, चैतन्य शक्ति का प्रकाश । (२)

जय महालक्ष्मी निर्मला माँ ।
जय महासरस्वती निर्मला माँ ।
जय महाकाली निर्मला माँ ।
यह मंत्र चैतन्य बरसायेगा । सारे जगत को....

सर्व-मंगल-मांगल्ये

सर्वभूता यदा देवी, भक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये, का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥
सर्वमंगलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि, नारायणि (निर्मल माँ) नमोऽस्तुते ॥

सर्वस्य बुद्धिरूपेण, जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि, नारायणी (निर्मल माँ) नमोऽस्तुते ॥

कलाकाष्ठादिरूपेण, परिणाम-प्रदायिनि
विश्वस्योपरतौ शक्ते, नारायणि (निर्मल माँ) नमोऽस्तुते ॥

सृष्टिस्थितिविनाशानां, शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये, नारायणि (निर्मल माँ) नमोऽस्तुते ॥

शंख-चक्र-गदा-शाङ्गगृहीत-परमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे, नारायणि (निर्मल माँ) नमोऽस्तुते ॥

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये, ऋद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महाऽविद्ये, नारायणि (निर्मल माँ) नमोऽस्तुते ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे, सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि, दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥

एतत्ते वदनं सौम्यं, लोचनत्रय- भूषितम् ।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः, कात्यायनि नमोऽस्तुते ॥

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तुते ॥

तुझे निर्मला नाम

तुझ्या पूजनी अर्चनी लीन व्हावे,
तुझे निर्मला नाम आम्ही स्मरावे ॥४॥

तुझ्या दर्शनाला आम्ही रोज यावे,
तुझ्या मंदिरी गीत आम्ही म्हणावे
तुझ्या किर्तनी रात्री रंगूनी जावे
तुझे निर्मला नाम आम्ही स्मरावे ॥१॥

आम्हाला विसावा प्रपंचामध्ये तू,
आम्हा पाठीराखी भविष्यामध्ये तू
तुझ्या चरणाचे आम्ही दास व्हावे,
तुझे निर्मला नाम आम्ही स्मरावे ॥२॥

तुवा दाविला मुक्तिचा मार्ग आम्हा,
तुवा दाविला भक्तिचा स्वर्ग आम्हा
तुझ्या किर्तीचे गोडवे नित्य गावे,
तुझे निर्मला नाम आम्ही स्मरावे ॥३॥

तुझे रूप पाहुनिया

तुझे रूप पाहुनिया, मी दंग झालो २ (कोरस)
तुझे नाम घेता घेता, मी धन्य झालो

तुच माऊली आमुची, तुझ्या सावलीत आलो
तुझ्या चिंतनी मी रंगूलो, समाधीस्थ झालो
तुझ्या चरणाची धूळ, कपाळी मी ल्यालो ।

निर्मल असे रूप जणू, प्रकाशाची ज्योत
निरानंदाची तू आणि प्रेमाची डोर, आम्ही मोट....
ह्या अर्पणाने आई, जणू अमृत मी प्यालो

कुणी म्हणे लक्ष्मी तुला, कुणी म्हणे साई
कुणी म्हणे सरस्वती, आम्ही म्हणू आई
तुझ्या नामाने ग आई, पावन मी झालो.

तेरे ही गुण गाते हैं

तेरे ही गुण गाते हैं - तुझको निसदिन ध्याते हैं
तेरी शरण में आये हैं - तू है सारे जगत की जननी,
माँ तू है सारे जगत की जननी

तू है श्रीमाता, निश्चिंता, गर्विता, लोकातीत
तू है निस्तुला, निर्मला, वन्दारूजनवत्सला
तू है निरीश्वरा, गंभीरा, निरंतरा, धर्माधारा
तू है निष्क्रिया, निरत्यया, भक्तिप्रिया, निराकुला
तेरी कृपा हो जाए हम पर, तू है सच्चिदानंदरूपिणी

तू है निर्गुणा, निरंजना, निष्कलंका, चंडिका
तू है निरपाया, निराश्रया, निर्लेपा, त्रिगुणात्मिका
तू है निष्पापा, निर्भवा, निर्विकल्पा, निरुपप्लवा
तू है निर्मोहा, निर्मदा, निर्विकारा, क्षमात्मिका
तेरी कृपा हो जाए हम पर, तू है महापातकनाशिनी

तू है महारथी, गुरुमूर्ति, शाश्वती, परमेश्वरी
तू है चित्तशक्ति, सुधास्तुति, निर्नाशा, रक्षाकरी
तू है विलासिनी, एकाकिनी, विष्णुग्रंथि-विभेदिनी
तू है निरुपाधि, महाशक्ति, आदिशक्ति, शुभकरी
तेरी कृपा हो जाए हम पर तू है सहजयोगदायिनी

तू है निराधारा, निराकारा, नित्ययौवना, पद्मासना
तू है निरहंकारा, नीलचिकुरा, सांद्रकरूणा, निष्कारणा
तू है महामाया, निःसंशया, भक्तिगम्या, रविप्रख्या
तू है चन्द्रनिभा, सुखाराध्या, स्वभावमधुरा, सुखप्रदा
तेरी कृपा हो जाए हम पर, तू है नित्यलीला विनोदिनी

तू है परमोदरा, महापूज्या, पुण्यलभ्या-विश्वरूपा
तू है महादेवी, भगवती, शोभना, सुलभागति
तू है पाशहंत्री, पराशक्ति, परमाणु, पावनाकृति
तू है निष्कामा, निर्विकल्पा, वीरमाता, विश्वग्रासा
तेरी कृपा हो जाए हम पर, तू है भवानी विश्वसाक्षिणी

तू है निर्बाधा, अचिंत्यरूपा, अकुला, धीरसमर्चिता
तू है विश्वगर्भा, नित्यमुक्ता, देवकार्यसमुद्यता
तू है श्री सदाशिवा, श्री महाराज्ञी, विमला, विजया, निरागा
तू है स्वस्था, लज्जा, निष्परिग्रहा, महती, पुष्टि, योगदा
तू है शर्मदायिनी, निर्ममा, राक्षसघ्नी, निष्परिग्रहा
तेरी कृपा हो जाए हम पर, तू है वरदा - क्षिप्रप्रसादिनी

तू ही जगत पिता

तू ही जगत पिता, तू ही परम पिता
सबके तुम्हीं रखवाले, तुम हो सभी के सहारे
जय जय गणपति

तुम ज्ञान हृदय में जगाते, तुम ध्यान में नित आते
जिसे सुमिरे सभी, बिसरें न कभी
तुम्हें ऐसे तिलक करें

करें सदा तेरा वंदन निशदिन, माथे लगे तेरा चंदन निशदिन
कष्ट मिटा के मेरा, तुम दूर कर दो अंधेरा
तुम्हें कोटि नमन, तन मन अर्पण
तुम्हरे चरणों में पले

तेरे चरण कमल में

तेरे चरण कमल में रहने वालों में लिख ले मेरा नाम (२)
ये है सुखशांति का धाम । निर्मल धाम (४)

आया था, श्रद्धा सुमन चढ़ाने, डाले झोली में
माँ से पाऊँगा, मैं कुछ दान भी डालूँ झोली में
सौम्य प्रकाश चेतना देखी, जैसे भोर की लाली में
स्वार्पण करके बोला मैं, कुछ ना डालूँ झोली में
निरपेक्ष यही, भक्ति कुटिर है, चैतन्य का कहाँ ऐसा धाम
ये है सुख शांति...

अर्पित है तन मन धन अपना, चरण नहीं, ये स्वर्ग की रचना (२)
वास्तविक है, नहीं ये कल्पना, ऐसे धाम की करें क्यों तुलना (२)
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे का, अब नहीं कोई काम
ये है सुख शांति...

अग्रिकुंड है अहंकार का, जटिल मेरे ही भूतकाल का
जबसे बना भिक्षुक इस द्वार का, भविष्य उज्वल सहज प्यार का
यही है मक्का, यही करबला, गंगा, यमुना चारों धाम
ये है सुख शांति...

चरणामृत से पावन कर दो (२) निर्मलामय जीवन कर दो (२)
अणु रेणु में चैतन्य भर दो, किताबों में नहीं, ज्ञान वो दे दो
यही है गीता, वेद यहीं है, यहीं बाइबल, कुरान
ये है सुख शांति....

तेरे दर को छोड़ माँ निर्मल जाऊँ कहाँ

तेरे दर को छोड़ माँ निर्मल जाऊँ कहाँ
एक तू ही तो है मेरा सारा जहाँ

कुण्डलिनी जागृत हुई सहस्रार खुला
कलियुग में अवतार लिया सबने जाना
फिर तू ही तो है मेरा सारा जहाँ
तेरे दर को छोड़....

करता निसदिन पाप मैं ज्ञान में
कर कृपा मैं आऊँ तेरे ध्यान में
मान और सम्मान में सबका भला
तेरे दर को छोड़....

कर धर्म तू, सेवा ना वृथा जाए है
नित निर्मल माता तुझे समझाए है
ऐ बन्दे, ना कर तू अपने पर गुमां
तेरे दर को छोड़...

ये जग सराय मेरा इसका खेल है
दो दिन बसेरा मेरा तेरा मेल है
फिर तू ही तो है मेरा सारा जहाँ
तेरे दर को छोड़...

माँ निर्मला चरणों में जा रे ए बन्दे
कट जाएंगे सब तेरे जन्म मरण फंदे
ऐ बन्दे, ना कर तू अपने पर गुमां
तेरे दर को छोड़...

तेरे चरणा दे हेठ

तेरे चरणा दे हेठ बाण गंगा वगे, नाले ज्योति जगे शेरॉवालिये ।
तू है शक्ति अम्बे, पापी थर थर कम्पे, नाले माफी माँगे शेरॉवालिये । २
(कोरस)

तेरी चुन्नी नूँ लावाँ किनारी, माँ किनारी २
तैँनूँ पूजेगी दुनिया सारी, माँ सारी २ । तू है शक्ति अम्बे...

तेरे चुन्नी नूँ लावाँ मैं किंगरी, माँ किंगरी,
तैँनूँ पूजाँगी सारी जिंदडी, माँ जिंदडी । तू है शक्ति अम्बे..

तेरे मुकटाँ नूँ लावाँ मैं हीरे, माँ हीरे, ठंडी ठंडी पवन वगे सिरे, माँ सिरे ।
तेरे सिरे नूँ लावाँ मुकुटाँ, माँ मुकुटाँ, तेरे चरण विच साडा झुकता, माँ झुकता ।
तेरे हथाँ नूँ लावाँ मैं मेहदी, माँ मेहदी, ठंडी हवा हथाँ विच वहंदी, माँ वहंदी ।
तैँनूँ पावाँ मैं सोने दी चूडी, माँ चूडी, देखो चैतन दी लहरें उडी माँ उडी ।
तेरे उंगली नूँ पावाँ अंगूठी, माँ अंगूठी, सारी बाधा सदा गई छूटी, माँ छूटी ।
तेरे पैरांच पावाँ मैं पायल, माँ पायल, तू है मेरी कश्ती दी सायल, माँ सायल ।
तेरे माथे नूँ लावाँ बिंदी, माँ बिंदी, दूजा जन्म साँजू तू दें दी, माँ दें दी ।
तैँ नूँ पावाँ मैं जरी दी साडी, माँ साडी, उठी शक्ति सुषुम्ना नाड़ी, माँ नाड़ी ।
तैँनूँ भोग लगावाँ मिठाई, माँ मिठाई, जनम मरण ते दे दे रिहाई, माँ रिहाई ।
तैँनूँ भोग लगावाँ, माँ चने, माँ चने, तू विराजे सभी दे मने, माँ मने ।
तेरे गांवाँ मैं मंगल आरती, माँ आरती, अपने भक्ताँ नू ही संवारती,
माँ संवारती ।

तेरो नाम साचा नाम

तेरो नाम साचा नाम, माँ का नाम निर्मल नाम
तेरो नाम पावन नाम, निर्मल नाम साचा नाम
निर्मल नाम साचा नाम, तेरो नाम पावन नाम
जय जय माता निर्मला देवी, तेरा नाम साचा नाम

तेरी जयजयकार हो

निर्मलादेवी माँ, ओ माँ, ओ माँ
गणपतिपुळे में आये जो, कभी खाली हाथ न जाये
जय माँ....

निर्मला देवी माँ, तेरी जय जयकार हो (२ कोरस)
जय जगदम्बे माँ, तेरी जयजयकार हो (२)
कितना पावन है यह दर्शन, सब करते तेरा वन्दन
ओ माँ.... देवी माता, सब करते तेरा वन्दन

मंगलकरनी माता, ओ भवभय हरिणी माता (२)
तू ज्ञानदायिनी, बुद्धिदायिनी
जय जय कार हो, तेरी जय जयकार हो
जय जय माँ, जय जय माँ...

जो गणपतिपुळे में आया...
उसने जीवन का सुख पाया (२)
यह कैसी तेरी माया,
सब कुछ मैंने पाया (२)
तेरा दर्शन पाया, माँ तेरा ही गुण गाया (२)
माँ, माँ, माँ,... जय जय माँ

जगत जननी, जय अम्बे, तेरी जय जय कार हो
जो श्री दर्शन को पाये, कभी खाली हाथ ना जाये (२)
जय जय माँ.....

तुम ही जगदम्बे माता, मैं तेरे ही गुण गाता (२)
तेरा मेरा नाता, है प्रेम का ये नाता (२)
नये साल के शुभ अवसर पर आशीर्वाद दो (२)
निर्मलादेवी माँ, ओ माँ, ओ माँ
तेरी जय जय कार हो

उघड सहस्रार माते

- प्रेमाची शिदोरी, आज्ञाचक्रावरी
उघड सहस्रार माते, उघड सहस्रार ॥धृ॥ (कोरस)
निर्मिलेसी विश्व जेव्हा जिवामध्ये आलो,
जन्म-मृत्युच्या या, फेऱ्यामध्ये सापडलो
तुझा खेळ झाला माते, परी न विसावा
उघड सहस्रार माते, उघड सहस्रार ॥१॥
रानोमाळी भटकत होते, जीव जीवनात,
काम क्रोध मोहमाया, याच्या बंधनात
पापपुण्याचा हा भोग, मेळ न दिसावा,
उघड सहस्रार माते, उघड सहस्रार ॥२॥
वेदपाठ करिती कोणी, गीता पठण केले,
तेच तेच ग्रंथी ज्ञान, जना उपदेशिले
आयुष्य ते गेले वाया, कृष्ण न दिसावा,
उघड सहस्रार माते, उघड सहस्रार ॥३॥
कोणी योगीराज, कोणी सिद्ध शिवनाथ,
संत साधु म्हणती कोणी, सिद्धि दावितात
अनुभवशून्य सारे, त्रासलो ह्या जीवा,
उघड सहस्रार माते, उघड सहस्रार ॥४॥
तुझ्या चरणासी माते, जेव्हा आम्ही आलो
कृष्णस्वरूप पाहून तेव्हा, मनी दंग झालो
ध्यानामध्ये मूलाधारी, शक्तिरूप देवा,
उघड सहस्रार माते उघड सहस्रार ॥५॥
तुझ्या कृपे, निद्रित शक्ति ऊर्ध्वमुखे येई
सात चक्रे तिच्या स्पर्शे, जागृत ती होई
आज्ञास्थानी येता माते, का ग विसावा,
उघड सहस्रार माते, उघड सहस्रार ॥६॥
तेज जेव्हा त्या शक्तिचे, इडा पिंगलात,
थंड थंड चैतन्याच्या, लहरी वाहतात
सहस्रार भेदनाने, अनंतत्व ठेवा,
उघड सहस्रार माते, उघड सहस्रार ॥७॥

उठा उठा हो सकळीक

उठा उठा हो सकळीक, वाचे स्मरावा गजमुख
रिद्धि - सिद्धिचा नायक, सुखदायक भक्तांसी ॥१॥

अंगी शेंदुराची उटी, माथा शोभतसे किरिटी,
केशर कस्तूरी ललाटी, हार कंठी साजिरा ॥१॥

कानी कुंडलांची प्रभा, सूर्यचंद्र जैसे नभा,
माजी नागबंदी शोभा, स्मरता उभा जवळी तो ॥२॥

कांसे पितांबराची धटी, हाती मोदकांची वाटी,
रामानंद, स्मरता कंठी, तो संकटी पावतो ॥३॥

विनती सुनिए

विनती सुनिए आदिशक्ति मेरी, पूजन का अधिकार दीजिए,
शरणागत है हृदय पुजारी ।

गुरु चरणन की लागी लगन है, तव चरणन में उतरा स्वर्ग है ।
परमेश्वरी हे मंगलकारी, खोए साधक पार उतारी ॥

प्रीत बहे अविरल नयनों से, हे हृदयेश्वरी भव भय भंजन
माँ ऐसी शुभ शक्ति दीजिए, सब में जागे आनन्द बिहारी ॥

और कहूँ क्या अन्तर्यामी, आत्म बोध अनुभूति की दात्री ।
आदि गुरु गुरुओं की माता, इस विनीत को गुरु पद दीजिए ॥

विश्व वन्दिता

सर्व-मंगल-मांगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।

ब्रह्मरूपे सदानन्दे परमानन्द-स्वरूपिणी
रिद्धि सिद्धि-प्रदे देवि, नारायणि नमोऽस्तुते ।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे ।
सर्वस्यातिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ।

विश्व-वन्दिता, निर्मला माता, सर्व-पूजिता, निर्मला माता,
ब्रह्म स्वरूपिणी, योग-निरूपिणी, शुभदाम् वरदाम् नमो नमः
विश्व वन्दिता.....

जगत जननी निर्मला, मूल प्रकृति अखिलेश्वरी की,
नित्या सत्या सनातना, पराशक्ति परमेश्वरी की,
विश्वाधारिणी, मंगल-कारिणी, शुभदाम् वरदाम् नमो नमः
विश्व वन्दिता...

सहजयोगिनी निर्मला, निराश्रया सर्वेश्वरी,
प्रेम मूर्ति भक्त वत्सला, स्नेहमयी मातेश्वरी,
भक्ति प्रदायिनी, मुक्तिप्रदायिनी, शुभदाम् वरदाम् नमो नमः
विश्व वन्दिता...

प्रगत सगुणा निर्गुणा, रिद्धि सिद्धि की दात्री है,
सौम्या सरला महामना, पाताञ्जलि गुण पात्री है,
घट घट वासिनी, आत्मविकासिनी, शुभदाम् वरदाम् नमो नमः
विश्व वन्दिता....

वन्दे मातरम्

सुजलाम सुफलाम मलयजशीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम्, वन्दे मातरम् ॥ २

शुभ्रज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्,
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर-भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् वन्दे मातरम् ॥

सप्तकोटी-कंठ-कल-कल निनाद-कराले,
द्विसप्त-कोटी-भुजैःधृत-खरकरवाले
अबोला केन माँ एत बले ।
बहुबलधारिणीम्, नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम्, मातरम्, वन्दे मातरम् ॥

वंदन करुया मातार्जीना

वंदन करुया मातार्जीना, महाशक्तिला सहजयोगिनीला
वंदन करुया मातार्जीना ॥धृ॥ (कोरस)

किर्ती जयाची त्रैलोक्याची, मूर्ती असे ही प्रेम रसाची(२)
आरती तव चरणा...
वंदन करुया ॥१॥

सहजयोगाची प्राप्ती झाली, ज्ञानदिपाची ज्योत लाविली (२)
ज्ञानमार्ग दाविला...
वंदन करुया ॥२॥

महामातेचे भजनी न्हाले, श्री निर्मला माताजी (२)
चहुकडे वाजती नगारे, वाहू पदी सुमना...
वंदन करुया ॥३॥

वन्दना करें वन्दना

वन्दना करें वन्दना, आदिशक्ति की वन्दना
प्रार्थना करें प्रार्थना, निर्मला माँ से प्रार्थना
आदिशक्ति की अर्चना, वन्दना करें ...

शुभमंगलमय बेला में, झूम झूम कर गाते हैं
स्वागत में श्री निर्मल माँ के, श्रद्धा सुमन बिछाते है
प्रार्थना करें प्रार्थना, आदिशक्ति की अर्चना, वन्दना करें....

आज के दिन हम, पुलकित मन से
माँ की जयजयकार करें, शीश नवाकर श्री चरणों में
नमन बारम्बार करें, आदिशक्ति की आराधना, वन्दना करें...

शुद्ध हृदय में शिव को पायें, तन मन से निर्मल हो जाएं
निर्मल रंग में रंग दो हमको, शक्ति का वर तुमसे पायें
याचना करें याचना, आदिशक्ति की अर्चना, वन्दना करें.....

आनन्दमय सागर है श्री माँ, आनन्द मन में भरती है
ज्ञान ध्यान देकर माँ निर्मल, अंधेरा दूर करती है
आदिशक्ति की नित साधना, - वन्दना करें....

विघ्न हरण गजवदन

विघ्न हरण गजवदन गजानना
करहु कृपा मोपे हे शिव नंदन

रिद्धि सिद्धि नवनिधि के दाता
सब जग के तुम बुद्धि विधाता
शंकर नंदन आप निरंजना
भक्तन के तुम जग वंदना
विघ्न हरण गजवदन.....

वर दे माँ वर दे

प्रिय स्वतंत्र रव, अमित मंत्र नव
भारत में भर दे । वर दे माँ, वर दे

काट अंध उर के बंधन स्तर, बहा जननी ज्योतिर्मयी निर्झर
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर, जगमग जग करे दे
वर दे माँ, वर दे

नवगीत, नवलय, ताल छंद नव, नवल कंठ, नव जलद मंत्र रव
नव नभ के नव विहग वृन्द की नव पर, नव स्वर दे
वर दे माँ वर दे

Wheels of Fire

Chorus:

Om Twameva Sakshat

Shri Nirmala Ma

Shri Nirmala Devi

Namo Namah

Om Twameva Sakshat

Shri Nirmala Ma

Shri Nirmala Ganesha

Namo Namah

For you are eternal innocence
The power sublime
Enlightening flame of chastity
Eldest brother of mine

For you are the power of creation
The spirit behind
The essence of knowledge and art
Pure wisdom divine

For you are the beauty of family peace
Your care is so sweet
You bless us with wealth and dignity
Release us from greed.

You reside as the spirit in our heart
Reflection divine
As bliss and awareness eternally
Majestic you shine

You vibrate our words with love so kind
We know we' re all one
As brothers and sisters we dance in your bandhan,
Praise God Almighty one

For you are compassion and truth
Through you we forgive
As you are the way and the light
For ever we live

For you are collective consciousness
The power that flows
Redemption of whole humanity
Cool wind that blows

योग दायिनी माँ तुमको प्रणाम

योग दायिनी माँ तुमको प्रणाम, चरणों में तेरे सातों धाम

आदि माँ तू परम कृपालु, हम भक्तों को दे ये दान
जिन हाथों से सृष्टि बनाई, उन हाथों से हमको थाम

कुण्डलिनी है स्वरूप तेरा, सब चक्रों में है वास तेरा
हमें उठा कर निज चरणन तक, किया हमें स्वर्ग प्रदान

आभा तेरी है नीरज जैसी, प्रेम तेरा है चंद्र समान
शिव शक्ति तू ब्रह्मदायिनी, तू ही सबसे शक्तिमान

या मोहम्मद जीसस क्राइस्ट

या मोहम्मद जीसस क्राइस्ट, गौतम बुद्धा, गुरु नानक जी
सर्व देव, देव जननी, आदिशक्ति श्री माताजी ।

हम आपके बच्चे हैं, हमें अपनी शरण में रखना
हमें आपके कदमों पर, एक सच्ची राह पे है चलना ।

ये प्यार का संदेशा, दुनिया वालों से कहना ।
इक शम्मा जला करके, मेरे दिल में उजाला करना

You are My Mother

You are my Mother, you are my Father
You are my brother, and my friend
You are the beginning, you are the center
And you are beyond the end.

Refrain:

For I love you Mother, you help me feel
Feel you in all, feel you in me.
Mother I'm in you and you're in me
Mother, I'm in you and you're in me

I'm in you and you're in me
You are the fountain of all joy
You are the cool breeze of truth
You are the mountains, you are the rivers
The sky and the sea

Refrain.....

You are my Mother, you are my father
You are my God, you are my friend
You are beginning, you are the center
And you are beyond the end

Hark ! The Herald Angles Sing

Hark ! the herald angels sing
Glory to the new-born king;
Peace on earth and mercy mild,
God and sinners reconciled:
Joyful all ye nations rise,
Join the triumph of the skies,
With the angelic hosts proclaim,
Christ is born in Bethlehem.

Refrain:

Hark ! the herald angels sing
Glory to the new-born king.
Christ by highest heav'n adored,
Christ, the everlasting lord,

Late in time behold him come
Offspring of a Virgin's womb.
Veiled in flesh the Godhead see,
Hail Th' Incarnate deity !
Pleased as man with man to dwell,
Jesus, our emmanuel.

Refrain:

Hail the heav'n born prince of peace
Hail the sun of righteousness !
Light and life to all the brings,
Risen with healing in his wings;
Mild he lays his glory by,
Born that man no more may die,
Born to raise the sons of earth,
Born to give them second birth

हमको तो निर्मल मैया

हमको तो निर्मल मैया, तेरा ही सहारा है (२)
स्वर्गसे भी ऊँचा मैया, निर्मल तेरा द्वारा है ॥धृ॥ (२)

मंदिर मंदिर जा कर मैंने, अलख जगाई थी (२)
करुण कहानी मैया, सबको सुनाई थी (२)
सबके दर से हार मैया, तुमको पुकारा है ॥१॥ (२)

निर्मल मैया तेरे बिन, कोई न संसार में (२)
कहीं भी न सुख मिला, जो सुख तेरे प्यार में (२)
हम को भी लगाओ पार, लाखों को उबारा है ॥२॥ (२)

तू ही गौरा, तू ही अंबे, सीता और सावित्री है (२)
लक्ष्मी है सरस्वती, गंगा तू गायत्री है (२)
साक्षात् कुंडलिनी, शक्ति उजियारा है ॥३॥ (२)

शब्द तेरे शास्त्र, और धर्म का भंडार है (२)
वाणी तेरी रामायण, और गीता का सार है (२)
हर एक सहजयोगी तेरी, आँखों का ही तारा है ॥४॥ (२)

मैया थारो चंदा जैसा रूप सलोना

मैया थारो चंदा जैसा रूप सलोना	(२)
ममथारा लाग्या दरबार, माँ निर्मल थारे आंगन में	॥४॥
मैया थारो मुखड़े की चमक निराली	(२)
चाँद सूरज शरमाये, माँ निर्मल थारे ...	॥११॥
मैया थारो कंगना रंग बिरंगा	(२)
इंद्र धनुष शरमाये, माँ निर्मल थारे...	॥२॥
चक्र त्रिशूल माता अष्टभुजाधारी	(२)
कांधे थारे केश लहराये, माँ निर्मल ...	॥३॥
मैया थारो चुनरी रत्नावाली	(२)
पूनम की रात शरमाये, माँ निर्मल...	॥४॥
मैया थारो बिंदिया अजब निराली	(२)
चरणों में चित्त को लगाये, माँ निर्मल	॥५॥

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

